

UNIVERSAL
LIBRARY

OU 180358

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 82.
 D 86 k Accession No. H 3085

Author दुग्गल, कवीरसिंह.

Title कहानी कैसे बनी. 1959.

This book should be returned on or before the date
last marked below.

कहानी कैसे बनी ?

कर्तारसिंह दुग्गल



भारतीय ज्ञानपीठ • काशी

ज्ञानपीठ लोकोदय-ग्रन्थमाला-सम्पादक और नियामक
श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन एम० ए०

प्रथम संस्करण

१९५९

मूल्य ढाई रुपये

प्रकाशक
मन्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

*

मुद्रक
बाबूलाल जैन फागुल्ल
सन्मति मुद्रणालय, वाराणसी

● विषय-क्रम ●

१. कहानी कैसे बनी	६
२. ऊपरकी मंज़िल	३३
३. दो मर्द और एक माँ	५५
४. अमानत	८१
५. अल्ला मेघ दे	१०३
६. अनारके दो पत्ते	१२५
७. जूठे टुकड़े	१४७
८. दिया बुझ गया	१७३

कहानी कैसे बनी ?



पात्र :

एक स्त्री
स्त्रीका बालक
एक पुरुष



[जाड़ेकी एक सन्ध्या । परछाइयाँ ढल रही हैं । सन्ध्या रात्रिमें परिवर्तित हो जाती है ।

सड़कके किनारे एक कोठीका गोल कमरा । रेडियो, ग्रामोफोन, टेलीफोन, पुस्तकें, पत्रिकाएँ इत्यादि आधुनिक ढंगकी सब वस्तुएँ इस कमरेमें रखी हैं ।

जब पर्दा उठता है तो घरकी युवा स्वामिनी अपने चार वर्षके बालकके साथ गोल कमरेकी चिकके समीप खड़ी द्वारके बाहर सड़ककी रौनक देख रही है, जैसे प्रायः हमारा मध्य श्रेणीकी स्त्रियाँ किया करती हैं, जिन्हें कई बार यह पता नहीं चलता कि अपना समय कैसे गुज़ारें । स्त्री बालकको कहानी भी सुनाती जाती है । कोई कहानी जो कई बार पहले भी सुना चुकी है ।]

स्त्री—एक थो चिड़िया । वह कहीं बाहर चुगने गई और उसका घरवाला एक और चिड़िया ले आया ।

बालक—फिर ?

स्त्री—दूसरी चिड़ियाने आते ही पहली चिड़ियाके बच्चेको बाहर निकाल दिया ।

बालक—फिर, अम्मी ?

स्त्री—[चुप है उसकी आँखोंमें आँसू आ जाते हैं]

बालक—तो फिर, अम्मी ?

स्त्री—[चुप है, सिसकी लेती है]

बालक—अम्मी, दूसरी चिड़ियाने बच्चेको क्यों निकाल दिया ?

स्त्री—देखो बेटा ! बाहर एक दम वर्षा होने लगी है । तूफान आ गया है । कितनी मोटी-मोटी बूँदें पड़ने लगीं । सामने बसके इन्तज़ारमें खड़े लोग भाग निकले हैं ।

बालक—कोई भागता हुआ इधर आ रहा है ।

स्त्री—हाँ बेटा, भीतर आ जाओ, हवा तेज़ हो गई है ।

[स्त्री भीतर आकर द्वार बन्द कर देती है । उधरसे भागता हुआ एक अपरिचित पुरुष बरामदेमें आ खड़ा होता है । वह गोल कमरेकी खिड़कीमें से कपड़ोंको झाड़ता हुआ दिखाई दे रहा है :]

बालक—अम्मी डैडी कब आयेंगे ?

स्त्री—[खिड़की बन्द करते हुए] सर्दी बढ़ रही है बेटा तुम कोट पहन लो ।

बालक—अम्मी बाहर कोई चोर है ।

स्त्री—नहीं बेटा, कोई बसका इन्तज़ार कर रहा था, अचानक पानी बरसने पर हमारे बरामदेमें सिर छिपानेको आकर खड़ा हो गया है । तूफान भी कितना तेज़ है !

बालक—अम्मी !

स्त्री—[कमरेकी वस्तुओंको ठोक करते हुए] हाँ बेटा !

बालक—अम्मी डैडी कब आयेंगे ?

स्त्री—कहती जो हूँ कोट पहन लो बेटा सर्दी बढ़ रही है । लो मैं तुम्हारा कोट ले आती हूँ ।

[दूसरे कमरेमें जाती है । इतनेमें बाहर तूफानके ज़ोरसे गोल कमरेका बरामदे वाला द्वार खुल जाता है । चिक उड़ कर एक

ओर हो जाती है और वर्षाका तूफान मानो भीतर तक आ पहुँचा है । बालक घबरा उठता है]

बालक—[चीखकर] अम्मी ! अम्मी !

स्त्री—[भीतरसे] आई बेटा !

[बच्चेको यूँ चिल्लाते देखकर अपरिचित द्वारको बाहरसे बन्द करनेका प्रयत्न करता है । इतनेमें स्त्री भीतरमें द्वारको बन्द करनेके लिए आ जाती है]

पुरुष—तूमा कीजिए ।

स्त्री—आप—आप अन्दर आ जाइए ।

पुरुष—नहीं धन्यवाद । बादल अभी लुट जायेंगे और—

स्त्री—तब तक आप भीतर आकर बैठ जाइए ।

[हवाका एक और झोंका आता है जिससे जैसे धकेला हुआ अपरिचित भीतर आ जाता है और द्वार बन्द कर देता है]

पुरुष—तूमा कीजिए मैं—मैं—वर्षा एक दम आ गयी ।

स्त्री—हाँ, आज-कलके बादलोंका क्या भरोसा है ! आप बैठ जाइए न ।

बालक—अम्मी !

स्त्री—लो बेटा कोट पहन लो । सर्दी बहुत है ।

बालक—मैं कोट नहीं पहनूँगा । इन्होंने तो कोट नहीं पहना ।

स्त्री—अंकिलने स्वेटर पहना है बेटा ।

बालक—यह अंकिल नहीं ।

स्त्री—[समझाते हुए] ऐसे नहीं बोलते बेटा ।

बालक—[खिन्न] नहीं अम्मी, यह अंकिल नहीं—

स्त्री—फिर बदतमीजी ।

पुरुष—[सज्जापूर्वक] बड़ा प्यारा बच्चा है !

स्त्री—खाक प्यारा है । जो बच्चा अम्मीका कहना नहीं मानता वह कैसे प्यारा हो सकता है ?

पुरुष—क्या नाम है तुम्हारा बच्चे ?

स्त्री—नाम बताओ बेटा ।

[बच्चा चुप है]

स्त्री—इसका कोई नाम नहीं है ।

पुरुष—नहीं इसका नाम बड़ा प्यारा है—मास्टर गुप्ता ।

स्त्री—आपने बाहर नेम-प्लेट देखी होगी । क्षमा कीजिए वह पहले किराये-दारकी है । जाती बार न उन्होंने उतारी न हमें कभी ध्यान आया ।

पुरुष—आजकलके नौकरी-पेशा लोगोंकी नेम-प्लेट लगवाने उतारनेसे पहले तबदीली हो जाती है ।

[तूफानका एक और तेज़ झोंका आता है, और द्वार खुल जाता है । बाहर वर्षा अभी तक हो रही है । ओले भी पड़ रहे हैं ।
पुरुष द्वार बन्द करनेके लिए उठता है ? इतनेमें स्त्री झट उठ कर किवाड़ोंकी भीतरसे चटखनी लगा देती है]

स्त्री—आप भी कहीं काम करते है ?

पुरुष—जी मैं “युग दीपक” का सम्पादक हूँ—

स्त्री—आप ! आप वे हैं !

पुरुष—सर्ताश सचदेव ।

स्त्री—हाय ! मैंने आपकी ढेरों कहानियाँ पढ़ी हैं । आप कितना अच्छा लिखते हैं !

पुरुष—बहुत बहुत धन्यवाद ।

स्त्री—बेटा अंकिलको नमस्ते करो । [पुरुषसे] इसे कहानियाँ सुननेका बड़ा शौक है । बेटा अंकिलको नमस्ते करो ।

बालक—ये अंकिल नहीं हैं भ्रम्मी ।

स्त्री—बेटा ऐसा नहीं बोलते । बड़ा हठी हो गया है । बिगड़ता ही जा रहा है ।

[बच्चा नाराज़ हो कर कमरेमें पड़ी तस्वीरोंकी एलबमको देखने लगता है ।]

पुरुष—बच्चे ऐसे ही होते हैं । समय आने पर सब समझ जाते हैं । यह तो बड़ा होनहार लड़का है । आँखें कितनी सुन्दर हैं इसकी !

स्त्री—[टालते हुए] हाँ तो आप कहानियाँ लिखते हैं । पिछले महीने वाली आपकी कहानी बहुत ही सुन्दर थी । पर आप कहानी लिखते कैसे हैं ?

पुरुष—पेट लिखवाता है । मैं कवि था पर कविता लोग खरीदते नहीं, मैंने कहानियाँ लिखनी शुरू कर दीं ।

स्त्री—हाँ, हाँ, आपकी कविताएँ भी तो छपती हैं ।

पुरुष—कहानीसे ज्यादा उपन्यासकी माँग है । इसीलिए आजकल मैं उपन्यास लिख रहा हूँ ।

स्त्री—सच, आप उपन्यास लिख रहे हैं ?, क्या कहानी है आपके उपन्यास की ?

बालक—[दूरसे] अम्मी—देखो डैडी हँस रहे हैं ।

स्त्री—[घबराकर] कहाँ ?—[सँभलकर] ओ यह तो फोटो है ।

[बच्चा एलबमकी एक तस्वीर उठाकर दिखानेके लिए ले आता है ।]

पुरुष—बहुत खूबसूरत फोटो है । किसने खींचा है ?

स्त्री—यह फोटो खींचा तो मैंने ही था ।

पुरुष—फिर तो आप भी कलाकार हैं ।

स्त्री—मैं कलाकार हूँ ?

पुरुष—हाँ, इतनी खूबसूरत फोटो खींचनेके लिए एक कलाकारकी सूझ चाहिए । मैं तो हर स्त्रीको कलाकार समझता हूँ, हर स्त्रीको जो एक सुन्दर बालकको जन्म दे सकती है ।

स्त्री—[फीकी हँसी हँसकर] मैं भी कलाकार हूँ !

पुरुष—यह फोटो आपने कब खींचा था ?

स्त्री—[एकदम उदास हो जाती है] यह फोटो, यह फोटो तब की है जब जीवनमें अभिलाषा ही अभिलाषा थी, मुस्कान ही मुस्कान, उल्लास ही उल्लास ।

बालक—अम्मी, डैडी कब आयेंगे ?

स्त्री—बेटा, आजायेंगे । बाहर बरसात जो हो रही है ।

पुरुष—दफ्तरमें देर हो जाती है उन्हें ?

स्त्री—नहीं । कहीं रुक गये होंगे ।

पुरुष—वर्षा भी तो रुकनेका नाम नहीं ले रही ।

स्त्री—बादल कैसे ज़ोरसे गरज रहे हैं ! जरूर कहीं बिजली गिरी होगी ।

[बादल ज़ोरसे गरजते हैं । कमरे की बिजली सहसा बुझकर फिर जल उठती है—]

बालक—अम्मी, मुझे डर लगता है ।

स्त्री—आ बेटा, मेरी गोदमें आ जा ।

बालक—अम्मी, मुझे इनसे डर लगता है ।

स्त्री—नहीं बेटा, ऐसे नहीं कहते । अंकिल तो बड़े अच्छे हैं । कहानियाँ लिखते हैं ।

बालक—अम्मी, मैं कहानी सुनूँगा ।

पुरुष—आओ बेटा, मैं तुम्हें कहानी सुनाता हूँ ।

बालक—नहीं, मैं अम्मीसे कहानी सुनूँगा ।

स्त्री—ज़िद नहीं करते बेटा । अंकिल बड़ी अच्छी कहानी सुनायेंगे ।

बालक—नहीं मैं कहानी अम्मीसे सुनूँगा ।

स्त्री—अच्छा बाबा मुझसे ही सुन लो । [पुरुषसे] कई बार मैं इसे अपने मनसे कहानियाँ गढ़कर सुना देती हूँ । कभी बात बन जाती है कभी नहीं बनती ।

बालक—अम्मी, मैं कहानी सुनूँगा ।

स्त्री—आज मैं इसे एक कहानी सुनाती हूँ । देखिए भला कहानी बनती है या नहीं

बालक—अम्मी, मैं कहानी सुनूँगा ।

स्त्री—हाँ बेटा, सुनो—एक थी राजकुमारी । उसका पिता उसका व्याह करना चाहता था किसी राजकुमारसे । राजकुमारीने कहा मैं दौलतसे व्याह नहीं करूँगी, मैं तो व्याह करूँगी मुहब्बतसे । और राजकुमारीने अपने मनका वर चुन लिया । फिर एक अँवेली रातमें, जब राजमहलके सब लोग सो रहे थे, राजकुमारी अपने प्रियतमके साथ निकल आई । राजपाट, धन-दौलत, माता-पिता, बहन-भाई, सब आराम छोड़कर राजकुमारी चली आई, बाहर आकर उसने देखा उसके मनके देवताने अपने दिलको कहीं और दे रखा था । राजकुमारी आधी-आधी राततक उसकी वाट जोहती रहती । वाट जोहती रहती और रोती रहती । पर वापस अपने पिताके पास नहीं गई । [ठंडा श्वास लेती है]

पुरुष—कहानी खत्म हो गई ?

स्त्री—जी । कहानी नहीं बनी क्या ?

पुरुष—जी कहानी तो नहीं बनी ।

स्त्री—बकरेकी जान गई और ग्वानेवालेको मज़ा नहीं आया ।

[टेलीफोनकी घंटी बजती है]

बालक—डैडीका टेलीफोन आया है ।

स्त्री—हैलो—हाँ मैं बोल रही हूँ—जी—जी—आप आज रात नहीं आयेंगे—जी—जी—वर्षाकी वजहसे रुक गये हैं—जी—जी—जी—

[टेलीफोन सुनते-सुनते उसकी आवाज़ बैठ-सी जाती है, रंग पीला पड़ जाता है । रिसीवर रखते हुए उसका हाथ काँपता नज़र आता है ।]

बालक—अम्मी, डैडी कब आयेंगे ?

स्त्री—बेटा, डैडी वर्षाके कारण किसी मित्रके यहाँ रुक गये हैं ।

पुरुष—अच्छा तो मुझे आशा दीजिए । लगता है वर्षा आज नहीं रुकेगी ।

कोई न कोई सवारी शायद मिल ही जायेगी ।

स्त्री—आप बैठिए ! अभी तो वर्षा ज़ोरसे हो रही है । ऐसी वर्षा पहले कभी नहीं हुई ।

पुरुष—और इतनी देरतक लगातार भी कभी नहीं हुई ।

स्त्री—मैं सोचती हूँ, ओले अभी तक पड़ रहे हैं ।

पुरुष—नहीं, यह तो तूफ़ान है । कैसे सायं-सायं चल रहा है, बिफरा हुआ !

स्त्री—मैं आपको गर्म कपड़ा ला देती हूँ । कुछ देर और रुक जाइए ।

[साथवाले कमरेमें जाता है]

पुरुष—क्यों बेटा तेरे डैडी कहाँ काम करते हैं ?

बालक—मेरे डैडी दफ्तरमें काम करते हैं ।

पुरुष—किस दफ्तरमें ?

बालक—जिस दफ्तरमें हमारा नौकर डैडीके लिए खाना लेकर जाता है ।

आजकल हमारा नौकर लुट्टीपर गया है ।

पुरुष—तो खाना कौन बनाता है ?

बालक—मेरी अम्मी । मेरी अम्मी खाना बनाती है । मेरी अम्मी कपड़े धोती हैं । बरतन माई माँजती हैं । सवेरे भी शामको भी ।

स्त्री—[आकर] क्या कह रहा है ? बड़ा बातूनी है । यह शाल आप ओढ़ लीजिए ।

[अब स्त्री भी काले रंगका एक शाल ओढ़े हुए है । काले शालमें उसका रूप निखर आया है । उसका गोरा रंग और गोरा लग रहा है । यों प्रतीत होता है कि शाल ओढ़ते समय स्त्रीने अपने बालोंको भी संवारा है]

पुरुष—धन्यवाद ! आप इतना कष्ट कर रही हैं । बैठ जाइए न आप भी ।

स्त्री—मैं सोचती हूँ रेडियो खोलकर देखूँ । खबरोंका समय है, शायद मौसमका कुछ पता चले ।

पुरुष—हाँ, कई बार तो बाहर धूप चिलचिलाती है और रेडियोवाले बूँदा-बौँदीकी सम्भावना बताते रहते हैं ।

[रेडियोकी आवाज़ उभरती है]

गीत

आज तुम हो चाँदनी है ।

स्त्री—खबरों तो खत्म हो चुकी है । हाय, कितना प्यारा कोई गा रहा है !

[कुछ देर गाना बजता रहता है]

पुरुष—“आज तुम हो चाँदनी है ।”

स्त्री—आप कविलोग गीत कैसे लिख लेते हैं ? कैसे कहानी बना लेते हैं आप ?

पुरुष—[रेडियो बन्द करते हुए] गीत कविकी आत्मासे फूटता है । कहानी जीवनमें से निकलती है ।

स्त्री—[अपने आपसे] कहानी—जीवनमें से निकलती है—वह कैसे ? अभी मैंने जीवनकी एक सच्ची घटना सुनाई थी ।

पुरुष—लेकिन वह कहानी नहीं बनी ।

स्त्री—[भर्राये हुए स्वरमें] कोई मर जाये, बरबाद हो जाये कहानी फिर भी नहीं बनती ?

पुरुष—कहानीके लिए न मरनेकी आवश्यकता होती है, न बरबाद होने की । कहानी तो लिखी जा सकती है आपके चेहरेके उस आकस्मिक पीलेपनपर जो क्षणभरके लिए आपके मुखपर अंकित हो गया था, जब आप टेलीफोन सुन रही थीं । कहानी तो लिखी जा सकता है आपके हाथके कम्पनपर जिसने आपके समूचे शरीरको कँपकँपा दिया था जब आपने टेलीफोन रखा ।

स्त्री—कलाकारकी दृष्टि कितनी पैनी होती है ! आपने मेरे हाथोंकी कँपकँपी देखी, आपने मेरे मुखकी घबराहटको भी अनुभव किया ।

पुरुष—मेरे भीतरके कलाकारने वह सब पढ़ लिया जो आपके मनपर उस समय बीत रहा था ।

स्त्री—आप कलाकार लोग एक नारीकी दुर्बलताको पढ़ लेते हैं ।

पुरुष—एक पुरुषकी कठोरताको भी पहचान लेते हैं ।

बालक—[दूरसे] अम्मी, देखो डैडी फिर हँस रहे हैं ।

स्त्री—[घबरा जाती है किन्तु बच्चेके हाथमें फोटो देख कर फिर सँभल जाता है] ओह—देखूँ कौनसा फोटो है ? इसे तो डैडी सदा हँसते नज़र आते हैं ।

पुरुष—जीवन हँस-खेल कर ही व्यतीत करना चाहिए । जीवन छायाने समान कोई बिता ले । बढ़ती जाये तो बढ़ती जाये । घटती जाये तो घटती जाये । अपनी शीतलता अपनी उदारता कोई कभी न छोड़े ।

बालक—अम्मी, मैं थक गया ।

स्त्री—आओ वेटा, तुम मेरी गोदमें लेट जाओ ।

पुरुष—रात ज्यादा होती जा रही है । वर्षा है कि रुकनेका नाम नहीं ले रही । मैं सोचता हूँ, मुझे जाना चाहिए । मेरा बच्चा भी मेरी प्रतीक्षा कर रहा होगा । प्रतीक्षा करते करते सो जायेगा । और इस तरह जब वह मेरे घर पहुँचनेसे पहले सो जाता है तब मुझे अच्छा नहीं लगता है । हर टैक्सी जो इस समय घरके सामनेसे गुज़रती हांगी, मेरे बच्चेकी माँ उसे उठ-उठ कर खिड़कीसे देखती हांगी । नौकर स्टैंड पर छतरी लिये इंतज़ार कर रहा होगा । मैं सोचता हूँ, मुझे जाना चाहिए ?

स्त्री—गोदीमें लेटते ही सो गया है ।

पुरुष—इसने तो कुछ खाया भी नहीं ।

स्त्री—दूध पिला दूँगी इसे ।

पुरुष—कितना प्यारा है आपका बच्चा । सोया-सोया ऐसा लगता है जैसे किसी कलीनें पलकें मूँद ली हो ।

स्त्री—मैं इसे पलंग पर लिटा आती हूँ । [उठते हुए] हर गोज़ इसी तरह सो जाता है अपने डैडीकी बातें करते करते । [जाती है] ।

पुरुष—मुझे चलना चाहिए । [उठकर खिड़कीका एक पट खोल बाहर देखता है] । वर्षा ऐसी हो रही है, ऐसी हो रही है, जैसे किसी बिरहिनके नयन बरस रहे हों ।

स्त्री—[आते हुए] नयन सदा स्त्रीके ही क्यों बरसते हैं ?

[बच्चेको साथ वाले कमरेमें सुलाकर आते समय स्त्रीने अपने काले रंगके शालको कुछ इस तरहसे ओढ़ लिया है जिससे उसका रूप और भी उजागर हो उठा है ।]

पुरुष—पुरुष उस अवस्थामें सिर फोड़ लेता है, जिस अवस्थामें स्त्री रोती है ।

स्त्री—पुरुष अपना सिर फोड़ लेता है तो कोई स्त्री फिर रोती है । वह स्त्री माँ हो सकती है, वह स्त्री बहन हो सकती है, वह स्त्री पत्नी हो सकती है, कोई पड़ोसिन हो सकती है, जिसके आँगन तक उस वृद्धकी छाया पहुँचती हो ।

पुरुष—आप कभी-कभी ऐसी बातें करती हैं, जैसे कोई कविता कह रहा हो ।

स्त्री—कविता ! [फोकी हँसी] जैसे कोई कविता !, मैं—मैं जो एक कहानी नहीं बना सकी ?

पुरुष—कहानियाँ जीवनमें बनती रहती हैं, बिगड़ती रहती हैं । कहानीकी पहचान होनी चाहिए ।

स्त्री—पर कहानी बनती कैसे है ? कोई पति जब रातको किसी औरकी पत्नी के घर ठहर जाता है, और वहाँसे अपनी पत्नीको टेलीफोन करता

है—मैं किसी मित्रके यहाँ रुक गया हूँ, बाहर वर्षा हो रही है, कोई सवारी नहीं मिल रही, आज रात मैं यहाँ ही ठहर जाऊँगा—और उसकी पत्नी, उसके बच्चेकी माँ टेलीफोनमें परायी स्त्रीकी आवाज़ तक सुन लेती है, कहानी तब बनती है ?

पुरुष—शायद । पर मेरे विचारमें कहानी तब भी नहीं बनती ।

स्त्री—कहानी तब भी नहीं बनती ?

पुरुष—हर रोज़ लाखों पुरुष लाखों माताओंको धोखा देते हैं, लाखों बहनोंको निराश करते हैं, लाखों पत्नियोंसे अन्याय करते हैं, हर रोज़ लाखों पत्नियाँ—क्षमा कीजिए, अब मुझे जाना चाहिए, रात अधिक हो रही है ।

स्त्री—जल्दी क्या है ? बच्चा अभी सोया है । हमारा बच्चा सात बजे सोता है ।

पुरुष—हमारा बच्चा ! 'हमारा' में यह जो साक्षात्पन है वह एक बच्चा अपने माँ-बापमें उत्पन्न कर देता है । यह साक्षात्पन अटूट होता है । यह साक्षात्पन सैकड़ों भूलोंको क्षमा करा देता है, लाख नाइन्सफियोंको भुला देता है ।

स्त्री—शायद, पर यह साक्षात्पन कभी-कभी इतना क्षणिक, इतना अस्थिर होता है, यह साक्षात्पन कभी-कभी तबतक ही रहता है जबतक बच्चा सामने खेल रहा हो, गोदीमें पड़ा सो रहा हो ।

पुरुष—और जब सोते बच्चेको साथवाले कमरेमें लिया दिया जाये ?

स्त्री—तो स्त्रीको कई बार यों लगता है जैसे वह स्वतन्त्र है, प्रत्येक बन्धन की पकड़, पलभरके लिए जैसे ढीली हो जाती है ।

[दोनों हँसते हैं । बादलोंकी गरज उभर आती है]

पुरुष—आजकी रात, ऐसा लगता है, जैसे आकाश अपनी आँखोंको खाली कर लेगा ।

स्त्री—बिजली चमकती है तो कितनी भयानक लगती है ! बादल कैसे कड़क रहे हैं !

पुरुष—आजकी रात न जाने क्या होनेवाला है ?

स्त्री—हाय मैं तो भूल ही गई, मैं भीतर काफी बननेका परक्यूलेटर लगा आया थी ।

[अन्दर जाती है]

पुरुष—[स्वगत] इस तूफानी रातमें यदि कोई पथिक पथ भूल जाये तो सारा दोष उस पथिकका नहीं । इस भयानक अंधेरी रातमें यदि कोई किसी और पक्षीके घासलेमें रात काट ले तो शायद वह पक्षी निर्दोष है ।

स्त्री—[एक ट्रेमें बिजलीका परक्यूलेटर आदि रखे आती है] मैं कहती हूँ, साइंसने हमारे जीवनको कितना आसान बना दिया है !

पुरुष—आसान भी बना दिया है मुश्किल भी । जहाँ बिजलीका बटन दबा कर काफ़ी बन सकती है, वहाँ काफ़ी पीकर—

स्त्री—कोई मर नहीं जाता, काफ़ी कोई ज़हर नहीं ।

पुरुष—मुझे काली काफ़ी अच्छी लगती है ।

स्त्री—काली रातमें लोग काफ़ी क्यों पीते हैं ? [हँस पड़ती है]

पुरुष—[गुमसुम सा] अभी आप शायद हँसी थीं ।

स्त्री—कई बार किसीको पता नहीं चलता कि कोई हँसा है या रोया है ।

पुरुष—आप फिर उदास हो गयीं ?

स्त्री—आजकी रात, आजकी रात मेरा संसार लुट रहा है । एक चोरी ऐसी होती है जिसका किसीको पता चलता है जब चोर चोरी करके जा चुका होता है । एक चोरी ऐसी भी होती है कि चोर संध लगाता हुआ सुनाई देता है, माल लूट कर ले जाता हुआ दिखाई देता है, पर कोई कुछ नहीं कर सकता ।

पुरुष—मेरा विचार है वर्षा धीमी पड़ गई है, मुझे अब जाना चाहिए ।

स्त्री—आप यों भागते क्यों हैं ? जब मैं अपने संकटकी चर्चा करती हूँ, आप जानेके लिए उत्सुक हो जाते हैं । आजकी रात, आजकी रात एक तूफान आपका मेरे यहाँ लाया है । आजकी रात काफीके प्याले पर बना हमारा सम्बन्ध ।

पुरुष—हमारा यह सम्बन्ध बहुत पुराना है । आपने मेरी कहानियाँ पढ़ी हैं, आपने मेरी कविताएँ पसन्द की हैं ।

स्त्री—आजकी रात आपने मेरे हाथोंकी कँपकँपी देखी है । वह कँपकँपी उस बेवस भेड़की नहीं थी जिसके सीनेमेंसे उसीके सामने उसका माँस काटा जा रहा हो ? आजकी रात, आजकी रात आपने मेरे मुख पर पीलापन देखा है, वो पीलापन उस पत्नीका नहीं था, जिसकी आँखोंके सामने उसके घोंसलेको लूट लिया जाये ?

पुरुष—मैं समझ नहीं सका ।

स्त्री—जब मुझे टेलीफोन पर वे कह रहे थे—मैं अपने मित्रके यहाँसे बोल रहा हूँ, बाहर बहुत वर्षा हो रही है, यहाँ कोई सवारी नहीं, आज रात मैं यहीं रुक जाऊँगा—पीछे मुझे उस चुड़ैलकी आवाज़ सुनाई दे रही थी । वह अपने नौकरको काफी लानेके लिए कह रही थी । क्या कभी एक स्त्रीको इस प्रकार धोखा दिया गया है ? कभी इस प्रकार किसीका मुहाग लुटा गया है ?

पुरुष—तभी तो मैं कहता हूँ, साइंसने हमारे जीवनमें लाख उलझनें डाल दी हैं । न वे आपको टेलीफोन करते, न आपको यह सब पता चलता । पिछले ज़मानेकी स्त्री खुश थी, अपने सतीत्व पर दृढ़ थी । पति यदि बाहर रह गया है तो उसे काम पड़ गया होगा, और बस ।

स्त्री—आप भी पुरुष हैं, हाय पुरुष कैसे होते हैं !

[स्त्री रोना आरम्भ कर देती है । तूफान ज़ोरसे गरजता है ।
बिजली एक दम बन्द हो जाती है, स्त्री रोये जा रही है ।]

पुरुष—ये बिजलीको क्या हुआ ? लगता है तूफानसे तार आपसमें उलझ गये हैं । कोई मोमबत्ती होगी ?

स्त्री—[रोये जाती है]

पुरुष—क्षमा कीजिए, मैंने आपका दिल दुखाया । कोई टार्च होगी ?

स्त्री—[रोये जाती है]

पुरुष—मैं बड़ा लज्जित हूँ । मुझे क्षमा कर दीजिए । पता नहीं बिजली कितनी देर ऐसे ही रहेगी । कोई माचिस ही हो ।

स्त्री—[रोये जाती है]

पुरुष—आप रो-रो कर मुझे लज्जित कर रही हैं । काश, मैं आपकी सहायता कर सकता ! माचिस कहाँ होगी ? मैं स्वयं जाकर ले आता हूँ ।

स्त्री—नहीं, मैं लाती हूँ ।

[उठने लगती है कि ठोकरसे कार्पाके बर्तन गिर जाते हैं]

पुरुष—ओह, सारा कालीन खराब हो गया होगा ।

स्त्री—आप रहने दीजिए, आपके वस्त्र खराब हो जायेंगे । मैं टार्च लाती हूँ । [चली जाती है]

पुरुष—वस्त्र तो जो खराब होने थे हो गये । काफीका प्याला उछल कर मेरे ऊपर आ पड़ा ।

[दूसरे कमरेसे ऐसा शोर सुनाई देता है जिससे प्रतीत होता है कि वस्तुएँ एक दूसरे पर गिर रहा हैं]

स्त्री—हाय मैं मर गयी ! हाय मैं मर गयी !...मुझे बचाओ, मुझे बचाओ !

पुरुष—[घबराकर] क्या हुआ ?...क्या हुआ ? मैं आ रहा हूँ ।

स्त्री—हाय मैं मर गयी !...मुझे बचाओ, मुझे बचाओ !

[जब अँधेरेमें पुरुष दूसरे कमरेमें जाने लगता है तो उसका पाँव मेज़से टकरा जाता है और वह मुँहके बल गिर पड़ता है]

पुरुष—ओहो । क्या मुसीबत है । मेरा तो घुटना टूट गया...हाय ..

स्त्री—[दूसरे कमरेमें] हाय मुझे बचाओ !

पुरुष—ओहो, मैं मर गया...मेरे भगवान्...टार्च तो लाइए, मेरी तो शायद टॉग ही टूट गयी है ।

स्त्री—[दूसरे कमरेसे] मैं टार्च खाक लाऊँ, मैं तो टूकोंके नीचे दबी हूँ । हाय मुझे बचाओ !

पुरुष—मैं कहता हूँ घरमें कोई चोर है जिसने बत्ती बुझा दी है ।

स्त्री—[वहींसे] हाय मैं मर गयी ! चोर ? ज़रूर चोर है । हाय मुझे बचाओ ।
[एक दम बत्ती जल उठती है]

पुरुष—हैं, बत्ती जल गयी । मैं आया एक मिनिटमें ।

[इतनेमें स्त्री दूसरे कमरेसे आती है, दोनों एक दूसरेको देखकर हँसने लगते हैं । और हँसते जाते हैं]

स्त्री—लीजिए टार्च अपने पास रखिए, कहीं बिजली फिर न फेल हो जाये ।

पुरुष—तूफानको देखा, थमनेका नाम ही नहीं लेता ।

स्त्री—हाय मैं मर गयी, मेरा कार्पाका नया सेट ।

पुरुष—मैं सोचता हूँ मुझे अब जाना चाहिए । मुझे, अब जाना चाहिए ।

स्त्री—[हँसते हुए] अरे, इतनी भी क्या जल्दी है, आप अपने कपड़ोंकी ओर तो देखिए !

पुरुष—कपड़े अब घर जाकर ही बदलूँगा । रातको इन्हें कौन देखेगा... और...

स्त्री—[हँसते हुए] और रात भी...जैसे कि आज है ।

पुरुष—अच्छा आपका बहुत-बहुत धन्यवाद !

स्त्री—है ! आप चल दिये ? आप अन्दर जाकर कपड़े बदल लीजिए, सामने आलमारी है ।

पुरुष—मैं सोचता हूँ, मैं अब चला जाता ।

स्त्री—कपड़े बदल कर चले जाइए । शायद वर्षा थम जाये । रात भर तो यह बरसनेसे रही ।

पुरुष—अच्छा, मैं कपड़े बदल लेता हूँ, मुझे ज़रा सर्दी भी लगने लगी है।

[पुरुष दूसरे कमरेमें जाता हूँ]

स्त्री—[काफीके बर्तन सग़हालते हुए] हाय मेरा नया सेट ! आज रात पता नहीं क्या होने वाला है। इस प्रकारकी तूफानी रातोंमें कई नौकाएँ बह जाती हैं, कई नाविक पथ भूल जाते हैं। इस प्रकारका तूफान कई वृत्तोंको हिला देता है। कई एक्को जड़से उखाड़ कर फेंक देता है। हाय राम ! आजकी रात क्या होने वाला है ? क्या होने वाला है ?

[बरतनोंको चुन कर ट्रेको एक ओर रखती है। मेज़पोशका कपड़ा बदलती है। कमरेको सँवारती है। और फिर सहसा गुनगुनाने लगती है]

पुरुष—[आते हुए] मैं सोचता हूँ यह ओवर कोट ही मेरे सारे ऐव ढक लेगा।

स्त्री—[आँखें भर कर पुरुषको देखती है] ऐसे लगता है जैसे यह ओवर कोट आपके नापका ही बनाया गया है।

पुरुष—अच्छा, मैं जाता हूँ, वर्पा धीमी पड़ गई है।

स्त्री—तभी तो मैं कहती हूँ, कुछ देर और रुक जाइए। वर्पा बन्द ही होने वाली है।

पुरुष—[बैठते हुए] जहाँ सौ वहाँ सवा सौ। मेरी पत्नी प्रतीक्षा करते-करते थक गई होगी। मेरा बच्चा हमेशा मेरी राह देखता है, मैं चाहे कागज़की एक कतरन ही पकड़ा दूँ वह खुश हो जाता है। सदा मुझसे पूछता है, डैडी मेरे लिए क्या लाये हो। मैं उसके लिए जेबमें ज़रूर कुछ न कुछ रखता हूँ।

स्त्री—[मुसकराकर] आज आप बच्चेके लिए क्या ले जा रहे हैं ?

पुरुष—आजकी रात, आजकी रात मैं खुद ही पहुँच जाऊँ तो लाख शुक करना चाहिए बच्चेको, बच्चेकी माँको।

स्त्री—जीवनकी कोई भी रात आपने बाहर नहीं गुज़ारी ?

पुरुष—जिन अर्थोंमें आप पूछती हैं, नहीं । वैसे कई रातें सड़कोंके किनारे कटती हैं, वैसे कई रातें तारोंकी छायामें टहलते गुज़रती हैं, वैसे कई रातें रातके अंधेरेको समेटते बीत जाती हैं, फिर कहीं जाकर कोई कवि बनता है ।

स्त्री—फिर कहीं जाकर कोई कहानी बनती है ।

पुरुष—मुझे लगता है जैसे बाहर बरामदेमें कोई है ।

स्त्री—[उठकर खिड़की खोलती है] कोई भी तो नहीं बाहर [छेड़ते हुए] आपके दिलका चोर है । वर्षा थम गयी । पर बिजली वैसी की वैसी चमक रही है । बादल उसी तरह घिर-घिरकर आ रहे हैं । कितनी मीठी हवा चल रही है ! हाय कितना प्यारा मौसम हो गया है !

पुरुष—मुझे जाना चाहिए । वर्षा फिर न शुरू हो जाये...

स्त्री—तभी तो मैं कहती हूँ, आपको नहीं जाना चाहिए । आप बाहर थोड़े बैठे हैं । दस सालसे आपकी कहानियाँ पढ़ती आ रही किसीका आप पर इतना भी अधिकार नहीं ? आपके पात्रोंकी मुसीबतोंमें मैं आखें भर-भरकर रोई हूँ । आपके पिछले महीनेकी कहानी पढ़कर मुझे सारा दिन अपना आप अच्छा-अच्छा लगता रहा । कई बार तो मुझे ऐसा लगता है जैसे आपने मेरी ही कोई बात सुनकर कहानी लिख दी हो । आप कलाकार लोग कितने विचित्र होते हैं ! [प्यार भरे नेत्रोंसे उसको निहारती है]

पुरुष—मुझे जाना चाहिए ।

स्त्री—आप कैसे जा सकते हैं इस तरह एक अबला स्त्रीको अकेला छोड़कर ?

पुरुष—रात बहुत हो गयी है ।

स्त्री—आप कैसे जा सकते हैं ? आपके सानेमें दिल नहीं ? कैसे अपने आपको आप कलाकार कहते हैं ?

पुरुष—पर...

स्त्री—आप जा कैसे सकते हैं ? एक स्त्री जिसने अपने आपको बरबाद कर दिया । बन्धु, भाई, माता, पिता, धन, दौलत सब कुछ एक पुरुषके लिए छोड़ा, और उस पुरुषकी यह करतूत देख कर आप को तरस नहीं आता ? दया नहीं आती आपको ? आखिर मेरा क्या दोष है ?

पुरुष—मैं मानता हूँ...पर...

स्त्री—मैंने क्या पाप किया है कि मेरा पति रंग-रलियां मना रहा हो और मैं अकेली बैठी अपने भाग्यको रोती रहूँ ? मैंने क्या अपराध किया है कि वह हँस रहा हो, खेल रहा हो, खा रहा हो, और मैं भूखी प्यासी रात भर तेलकी कढ़ाईमें भुनती रहूँ ?

पुरुष—मैं कहता हूँ...

स्त्री—मैं पूछती हूँ मेरा क्या दोष है ? जाड़ेकी यह कभी न खत्म होनेवाली रात ! यह सूना सूना घर मुझे डसनेको दौड़ेगा । इस अँधेरी रातमें क्या मुझे इतना भी अधिकार नहीं कि क्षण भरके लिए मैं एक ज्योति जगा लूँ ? इस तूफानी रातमें अगर मैं कोई सहारा ढूँढ़ती हूँ तो क्या मेरी यह ज्यादाती है ? इस अकेलेपनमें अगर कोई आधार ढूँढ़ती हूँ तो क्या यह कोई अन्याय है ?

पुरुष—मैं नहीं जाऊँगा । तब तक मैं इस घरसे कदम बाहर न निकालूँगा, जब तक आप मुझे खुद आशा न देंगी ।

स्त्री—आप नहीं जायेंगे !

[भागे बढ़कर उसका हाथ पकड़ लेती है ।]

भगवान् ने मेरी सुन ली ?

पुरुष—मैं नहीं जाऊँगा ।

स्त्री—इन सोफोंमें घँसकर मैंने आपकी कहानियाँ पढ़ीं। आप इस घरमें कोई नये नहीं हैं। इन दीवारोंने कई बार मुझे आपके गीत गुनगुनाते सुना है। आप यहाँ किसीके लिए भी पराये नहीं।

पुरुष—बाहर वर्षा फिर शुरू हो गयी है।

स्त्री—आजकी रात, आज सारी रात मैं आपको अपनी आप बीती सुनाऊँगी। धोखेका, जुल्मका, अन्यायका एक लम्बा किस्सा ! शायद कहानी बन जाये।

पुरुष—शायद।

स्त्री—अच्छा, मैं मेज़पर खाना रखती हूँ, जो कुछ भी बना है...
[जाती है]

पुरुष—[टेलीफोनका नम्बर घुमाता है] मैं घर टेलीफोन कर लूँ। हैलो !
...भई, मैं अपने मित्रके यहाँसे बोल रहा हूँ, बाहर वर्षा बहुत हो रही है, कोई सवारी नहीं है, आज रात मैं यहीं रुक जाऊँगा।

स्त्री—[एकदम दूसरे कमरेमेंसे आते हुए] आप !

पुरुष—[झटसे टेलीफोन रखते हुए] कहानी अब बनी है !
[मुसकराता है]

स्त्री—[जैसे याद कर रही हो] “मैं अपने मित्रके यहाँसे बोल रहा हूँ। बाहर वर्षा बहुत हो रही है ! कोई सवारी नहीं है। आज रात मैं यहीं रुक जाऊँगा।”

पुरुष—[मुसकराकर] हाँ कहानी अब बनी है।

स्त्री—नहीं, नहीं...ऐसे नहीं होगा। ऐसे कभी नहीं होगा। मैं एक और स्त्रीका जीवन बरबाद नहीं करूँगी। मेरे साथ अन्याय हुआ है, मैं एक और अपनी बहनके साथ अन्याय नहीं होने दूँगी। सब पुरुष एक जैसे होते हैं। लुटती स्त्री ही है। चले जाइए। चले जाइए आप। चले जाइए यहाँ से। आप एक क्षणके लिए भी यहाँ नहीं रुक सकते। जाइए, जाइए।

[वर्षाका वेग तीव्र हो जाता है। स्त्री द्वार खोलकर पुरुषको बाहर धकेल देती है। पुरुष विस्मयपूर्वक उसकी ओर देखता है, और वह इतनेमें द्वार बन्द कर लेती है। चिटखनी लगा देती है।]

स्त्री—[फिर याद करते हुए] “मैं अपने मित्रके यहाँसे बोल रहा हूँ। बाहर वर्षा बहुत हो रही है। सवारी कोई नहीं। आज रात मैं यहीं रुक जाऊँगा।” ये पुरुष !

बालक—[जागकर आते हुए] अम्मी कोई चोर आया था ?

स्त्री—हाँ...नहीं बेटा। तुम क्यों उठ गये हो मेरे लाल ? चलो मेरी जान कुछ खा लो।

बालक—अम्मी डैडी नहीं आयेंगे आज ?

स्त्री—[प्यारसे समझाते हुए] बेटा, डैडी तेरे किसी मित्रके यहाँ ठहर गये हैं। वर्षा भी तो कितनी हो रही है आजकी रात !

बालक—अम्मी मुझे कहानी नहीं सुनाओगी ?

स्त्री—[दूसरे कमरेकी ओर जाते हुए] हाँ बेटा, मैं तुम्हें चिड़ियाकी एक बहुत बढ़िया कहानी सुनाऊँगी। एक थी चिड़िया...

[माँ बच्चेकी उँगली पकड़े हुए दूसरे कमरेमें चली जाती है]



ऊपरकी मंज़िल



पात्रः

एक पुरुष



[किसी शहरकी सिविल लाईन्ज़में एक कोठीकी ऊपरकी मंज़िलका कमरा । इस कमरेकी खुली खिड़कीमें अंधेड़ उम्रका एक पुरुष खड़ा है । इस खिड़कीसे सामनेकी सड़क दिखाई देती है, कोठीका गेट दिखाई देता है, पड़ोसकी कोठीका आँगन और बरामदा दिखाई देता है । थोड़ी दूर रेलवे स्टेशनसे गाड़ियोंके आने-जानेकी आवाज़ें भी सुनाई देती रहती हैं ।

खिड़कीमें खड़ा पुरुष अट्टहास कर रहा है । ऐसा प्रतीत होता है कि उसकी हँसीका कारण कोई बात है, जो उसके नौकरने उसे अभी-अभी बताई है ।

पुरुष हँसता ही जा रहा है, एक ऐसी हँसी जो व्यंग्यसे घृणामें बदल जाती है, फिर घृणासे जैसे ज़हर होकर रह जाती है ।

पुरुष—[विषाक्त हँसी हँसते हुए]

मेम साहिब स्टेशन गई हैं ।

[हँसता जाता है]

मेम साहिब स्टेशन गई हैं !

अपने प्रेमीको बिदा करने के लिए !

[अभी तक हँस रहा है]

प्रेम खुद चल कर गया है
 अपनी आशाओंकी आहुति देने के लिए !
 [एक दम हँसी रोकते हुए]
 मेम साहब स्टेशन गई हैं
 अन्तिम बार अपने मदमाते नयनोंसे
 किसी पराये मर्दकी पलकोंमें सपने जगाने के लिए ।
 मेम साहब स्टेशन गई है
 अन्तिम बार अपने एक पत्नीके होठोंको
 किसी पराये मर्दके स्पर्शसे अपवित्र करनेके लिए ।
 मेम साहब स्टेशन गई हैं
 जैसे किसी डाल पर कोई घोंसला बनाये
 और नीचे से डाल टूट जाये ।
 जैसे स्वयं अन्धकार किसी हृदयकी कालिमासे
 काँप उठे ।
 जैसे कोई पथ भूला
 किसी बन्द गलीमें आकर रुक जाये ।
 [वैसेका वैसे क्रोधसे ओठोंको मींचते और काटते हुए]

पुरुष—मेम साहब स्टेशन गई हैं
 क्योंकि आज उसके हृदयका राजा जा रहा है,
 दूर बहुत दूर ।
 जहाँ तड़ तड़ गोलियोंकी वर्षा होती है,
 जहाँ बमोंके बादल आकर फटते हैं,
 और रक्तकी नदियाँ बह निकलती हैं,
 जहाँ मृत्युकी फुंकार
 अफ़सर और मातहतमें भेद नहीं जानती ।
 जहाँ काल मुँह बाये खड़ा रहता है

उनके लिए जिनके घर कोई रोनेवाला नहीं,
और उनके लिए
जिनकी राहों में
उनके पड़ोसियोंकी पत्नियाँ
अपने पतियों को, अपने बच्चोंको छोड़कर
आखें बिछाये रहती हैं,
लौ लगाये रहती हैं ।

[एक दम सूँवासा हो उठता है]

पुरुष—कभी ऐसा भी हुआ है ?

आदि कालसे कभी ऐसा हुआ है
कि कोई पैंतीस वर्षकी पत्नी
फिरसे प्रेम करने लग जाये ?
कभी ऐसा हुआ है
कि कोई तीन बच्चोंकी माँ
किसी परायेके लिए पागल हो उठे ?
कभी किसीने यह भी सुना है
कि पन्द्रह साल एक छूतके नीचे रहकर
कोई यों खुल खेलने लग जाये ।

[आँखों में अश्रु भरकर]

पुरुष—राजी !

तुमने मुझे तब न छोड़ा
जब एक जून हमारे पास खानेके लिए होता था
और दूसरा वक्त तुम मुझसे बातें करके काट लेता था ।
जब तुम्हारी सूखी छातियोंमें
दूध नहीं होता था
और अपने बच्चेको तुम लोरियाँ गा-गाकर बहलाती थीं ।

लोरियों, जिनमें, उसके बाप राजाके
 तुम गुण गा-गाकर नहीं थकती थीं ।
 जब आँखोंसे बरबस फूट निकले आँसुओंको
 तुम हँस-हँस कर मुझसे छिपाती थीं ।
 बार बार अपने ओठों पर
 मुसकानें खिलाती थीं,
 मेरे माथे पर तुम एक शिकन नहीं देख सकती थीं ।
 राजी !
 तुमने मुझे तब न छोड़ा,
 जब पलंग पर पड़ा मैं हड्डियोंकी मुट्ठी होके रह गया था ।
 डाक्टर तुम्हें कुछ कहते थे मुझे कुछ कहते थे ।
 जब कोई मेरे पास नहीं फटकता था ।
 मेरी गन्दी चादरोंको तू धोते नहीं थकती थीं ।
 मेरे गोले कपड़ोंको तू बदलते नहीं ऊबती थीं ।
 मेरे मुरझाये सूखे हाँठोंको जब तुम चूमती थीं ।
 मेरी हड्डियोंकी टठरीको जब तुम दुलराती थीं ।
 मेरी सूखी बेजान बांहोंको जब तुम उठा उठा कर
 अपनी आँखोंसे लगाती थीं ।
 रात भर जाग-जाग कर तुमने मेरी सेवा की ।
 तुमने विलख-विलख कर भगवान्से मेरी सेहतकी भीख माँगी ।
 राजी !
 तुमने मुझे तब न छोड़ा
 जब आधी रातको मैं घर लौटता था ।
 जब मेरे अंग-अंगसे दुर्गन्ध आती थी ।
 वह दुर्गन्ध जो एक मर्दमेंसे आती है ।
 जब कोई मर्द अपनी पत्नीका हक मार कर घर आता है ।

जब मेरे होठों परसे अभी वह चिह्न नहीं मिटे होते थे,
किसी परायी औरतके चुम्बनोंके चिह्न ।

जब मेरी आँखोंमें

कपट होता था, छल होता था, भूठ होता था ।

और तुम खिड़कीमें खड़ी मेरी बात जोहती थीं ।

नशेमें डगमगाते मेरे लड़खड़ाते कदमोंको सहारा देकर
मुझे टैक्सीमेंसे तुम निकाल लाती थीं ।

[आँखोंसे झर-झर कर आँसू बहने लगते हैं]

पुरुष—और अब जब मैं कोठियोंका मालिक हूँ ।

और अब जब से तीन बच्चोंका बाप हूँ ।

और अब जब मैं प्याज़के छिलके तकसे परहेज़ करता हूँ ।

तुम मुझे अब छोड़ गईं ।

अब जब मैं शराब नहीं पीता

कि उसके नशेमें कोई अपना ग़म ग़लत कर सके ।

अब जब मैं किसी परायी औरतकी तरफ़ आँख उठाकर नहीं देखता

कि सोचूँ तेरे अन्यायका मैं कभी तुझसे बदला लूँ ।

अब जब कि मेरे फूलों जैसे कोमल बच्चे

मेरे कदमोंकी बेचैनीको

जब तू घर नहीं होती

अवाक़्से देखते रहते हैं ।

तुम अब चली गईं

जब मुसाफ़िरके पास और चलनेकी शक्ति नहीं रहती ।

जब पथिक सुस्तानेके लिए बैठ जाता है ।

जब किसीका गीत सुननेको जी चाहता है ।

पलकोंपर पलकें जैसे थककर गिर पड़ती है ।

तुम अब चली गईं

जब कई बार मंज़िल खुद चलकर मुसाफिरके पास चली आती है ।

तुम अब चली गईं

जब हमारी बच्ची हू बहू तेरे जैसी निकल आई है ।

हू ब हू तेरी तरह हँसती है ।

हू ब हू तेरी तरह चलती है ।

तुम अब चली गईं

जब उसे ज़रूरत है राहोंकी, रास्तोंकी जिनको वह अपनाये ।

तुम अब चली गईं

जब रातको पल पल मेरी आँख खुल खुल जाती है ।

जब इस घरकी दीवारें तक तुम्हारी राह तकती हैं ।

जब हर दूसरा टेलीफ़ोन तुम्हारे लिए ही आता है ।

जब कलियाँ खिलती हैं, किसी कोमल परसके लिए ।

तुम अब चली गईं

जब फल आ गये हैं उन पौधोंपर

जिनको तुमने अपने हाथों लगाया था ।

[अपने आपको संयत करते हुए]

पुरुष—आज डेढ़ वर्ष हो गया है

इस कमरेके झरोखे वैसेके वैसे बन्द हैं ।

हमारे इस सोनेके कमरेमें कभी कोई हँसी नहीं सुनाई दी ।

सत्य धर्म और न्यायकी कभी चर्चा नहीं हुई ।

आज डेढ़ वर्ष हो गया है

मुझे ऐसे लगता है जैसे मैं किसी ऊसर पर विचर रहा हूँ ।

पेड़ हैं जिनपर पत्ते नहीं ।

नदियाँ हैं जिनमें पानी नहीं ।

धूप है जिसमें गर्मी नहीं ।

ठंड, ठंड, ठंड ।

सर्दियों में कुआरी पगडंडियों पर कोहरेकी ठंड ।
 दोरोंके खुरोंसे मसले पोखरोंके कीचड़की ठंड ।
 दूटी हुई भांपड़ीपर नई गिरी बर्फ की ठंड ।
 फूल जैसे सुगन्ध रहित ।
 मुसकराहटें बुझी-बुझी, फीकी-फीकी रस-हीन ।
 [स्मृतियोंमें जैसे खो जाता है]

पुरुष—वसन्तका दिन था

जब उस वर्ष
 वह फ़ौजी कप्तान हमारे पड़ोसमें आकर रहा
 इसी खिड़कीमें खड़े
 मैं और मेरे बच्चोंकी माँ
 कितनी देर देखते रहे ।
 रिमफ़िम फुहार पड़ रही थी ।
 कीचड़, कीचड़, कीचड़ था चारों ओर ।
 जहाज़-सी विशाल
 लदी फँदी एक लारी आई
 और मोटे-मोटे बूटोंवाले फ़ौजी अर्दली
 उसमेंसे सन्दूको और ट्रंकोको
 इस तेज़ीसे उठाने उतारने लग गये
 जैसे कोई ऊनके रेशमके लिफाफे उठाकर अन्दर ले जा रहा हो ।
 बात बातपर अर्दली कप्तानको सलाम करते
 और मन्द मन्द सुलगता सिगार मुँहमें थामे
 वह बरामदेमें टहलता रहा ।
 खिड़कीमें खड़े हम देखते रहे, देखते रहे ।
 हवा तेज़ हो गई,
 सर्दी बढ़ गयी ।

बार बार मेरी पत्नीका अँचल ढलक-ढलक पड़ता ।
 शालमेंसे जालोदार दुपट्टा वह बार-बार सिर पर ओढ़ती
 और बार-बार वह सरक जाता ।
 फिर मैंने खिड़की बन्द कर ली ।
 खिड़की मैंने बन्द कर ली
 और मुझे अपना सोनेका कमरा ऐसे लगा
 मानो सिगारकी धीमी-धीमी सुगन्धसे भर गया हो ।
 उस शाम वह शृंगार-मेज़के सामने खड़ी थी,
 दबे पाँव पीछेसे आकर मैंने उसे चूमा,
 मुझे ऐसे लगा जैसे सिगारकी सुगन्ध
 सारीकी सारी उसके ओठों पर जमी हुई हो,
 मेरा मुँह सिगारके स्वादसे लबालब भर गया ।
 वह दिन, अगला दिन, उससे अगला दिन ।
 और फिर दिन प्रति दिन,
 मुझे सिगारकी धीमी-धीमी खुशबू आती,
 चादरोंमेंसे, तकियेमेंसे, किताबोंमेंसे,
 पानीमेंसे, प्लेटोंमेंसे,
 उसके बालोंमेंसे, उसकी मुसकराहटोंमेंसे, शोखियोंमेंसे,
 मुझे सिगारकी धीमी-धीमी खुशबू आती
 हमारे फूलदानोंमें लगे फूलोंमेंसे ।
 मैं बार-बार खिड़कियोंके पर्दे गिराता,
 दरवाज़े बन्द रखता, बन्द रखता,
 पर सिगारकी वह धीमी-धीमी खुशबू
 जैसे बलात् मेरे घरमें घुसी चली आ रही हो ।
 मैं लाख अगरबत्तियाँ ला-ला कर जलाता
 निष्फल, बेकार, व्यर्थ ।

और फिर एक दिन उसके मुँहकी ओर मैं देखता रह गया,
वह कहने लगी :

“सिगरेटका भी क्या पीना

कोई पिये तो सिगार पिये ।”

और मेरी उँगलियोंमेंसे मेरा सिगरेट

पता नहीं कब खिसक कर नीचे जा गिरा ।

हमें तब ही मालूम हुआ

जब फर्शका कालीन सुलगने लगा था ।

मेरे तन-मनमें जैसे आग-सी लग गई,

और वह बारबार कहती

उसके दहेज़के कालीनका सत्यानाश हो गया था ।

और फिर उसे पड़ोसमें

आधी आधी रात तक

नशेमें धुत् लोगोंका हँसना

अच्छा अच्छा-सा लगने लगा ।

गिलासोंका टूटना अच्छा अच्छा-सा लगने लगा ।

मदमस्त, लड़खड़ाते बहक रहे लोगोंको

आधी आधी रात तक खिड़कीमें खड़ी

वह देखती रहती, देखती रहती ।

और फिर वह थकी थकी सी रहने लगी ।

उलभी उलभी,

खोई खोई सी रहने लगी ।

उसकी आँखोंमें एक भय, एक डर, एक आतंक,

जैसे बहुत गहरी खाई फाँदते कोई महसूस करता है ।

वह खिड़कीमें खड़ी होती, तो खड़ी ही रहती ।

साड़ियोंको निकालती, पहनती, फिर उतार कर रख देती ।

कितनी कितनी देर शीशेमें सामने बैठी एक टक देखती रहती ।
 और फिर एक रात
 जब मैं थका हारा घर लौटा,
 हमारे सोनेके कमरेमें पीली ज़र्द चोरोंकी तरह
 वह अकेली खड़ी थी,
 जैसे पराये खेतमें चर रही कोई गाय
 खेतके मालिककी ओर देखती है ।
 मुझे उसने देखा और वह पलंगपर जा गिरी ।
 फूट फूटकर उसके आँसू बहने लगे ।
 वह रोती गई, रोती गई ।
 रो रोकर उसकी हिचकी बँध गई ।
 मैं उससे क्या पूछता ?
 वह मुझे क्या बताती !
 बेवस, बेज़वान, मैं उसके पास बैठ गया ।
 मैंने कोई शिकायत नहीं की ।
 मैंने उसे बुरा नहीं कहा ।
 उसकी आँखें बार बार जैसे मुझे कह रही थीं :
 “तू मुझे कोसता क्यों नहीं ?
 फटकारता क्यों नहीं ?”
 मैं गुम-सुम अपलक उसे मछलीकी तरह तड़पता देखता रहा ।
 सारी रात वह फूट फूटकर रोती रही ।
 रात भर मैं उसे हक्का-बक्का देखता रहा ।
 यह कोई अञ्चलसे गिरे बेर थोड़े थे
 जिनका कुछ बिगड़ा न था ।
 वह रात और आजका दिन
 फिर उसने कभी मेरी आँखोंसे आँखें नहीं मिलाईं ।

एक घरमें बसते
 एक छतके नीचे रहते,
 हम एक दूसरेसे कोसों दूर हो गये ।
 और फिर मैंने क्या क्या नहीं देखा ?
 मेरे भीतरके पतिने क्या क्या नहीं सहन किया ?
 मेरे भीतरके पिताने क्या क्या नहीं बर्दाश्त किया ?
 मेरे भीतरके पुरुषने कैसे अपने आपको मार लिया ।
 उसके नाखूनोंकी पालिशके रंग बदल गये ।
 उसके ओठोंकी सुख्खीकी आभा और की और हो गई ।
 सारी उम्र संभाल-संभालकर रखे अपने बालोंको उसने कटवा लिया ।
 उस दिन जब मैंने पहली बार उसके कटे हुए बाल देखे
 सारी रात मैं सो नहीं पाया ।
 किसीसे किसीका बाग छिन जाये,
 बाग छिन जाये और कोई फ्रियाद न करे
 और किसी बेलको याद करके कोई रोने लगे ।
 आखिर मैंने अपने आपको समझा लिया ।
 और जब मैं समझाने लगा
 तो मैंने किस किस बातके लिए अपने आपको नहीं समझाया ?
 मेज़ पर बैठे यदि कोई छुरी मेरे हाथमें होती
 मेरी उंगलियाँ ऐंठने लगतीं ।
 मेरा अंग अंग कभी गर्म होता कभी ठंडा होता ।
 मेरे होंठ लहू-लुहान होकर रह जाते ।
 कई अन्धेरी रातोंमें
 अकेला अपने कमरेमें टहलता,
 मेरे हाथ मेरी जेबमें पड़े,
 सात गोलियोंवाले रिवालवरको सहलाते रहते ।

सपनोंमें कई बार
 मैंने अपने हाथोंको लहूसे लथपथ देखा ।
 कई बार मैंने औरतकी कमज़ोरीके बयान किये ।
 कई बार मैं फाँसीके तख्ते पर लटका ।
 बन्द कमरेकी दीवारोंसे टक्करें मार-मार
 मैं कई बार फूट-फूट कर रोया ।
 आँखें फाड़-फाड़ कर
 मैं व्यर्थ
 दूर गहरे आकाशमें न्याय ढूँढ़ता रहा ।
 ऊँची-ऊँची चोटियों पर कई बार चढ़ कर
 मैंने सोचा मेरा पैर फिसल जाये ।
 कई बार मैंने कुँआमें भाँका
 कहीं मुझे चक्कर आ जाये ।
 नदीकी लहरों ने
 बार बार मुझे किनारे पर फेंका ।
 हर बार हँसती
 भाग छोड़ कर चली जाती ।
 मेरे बच्चे कई बार मेरी छातीके साथ आ आ लगे ।
 मेरे अन्दर केवल पिताके स्नेहको पाकर
 बार बार अपनी माँको मेरी आँखोंमें खोजते रहे ।
 मेरे नौकर भाग भागकर मेरे काम करते ।
 और मुझे उनकी हर तेज़ी
 एक गोलीकी तरह सीनेमें आकर लगती ।
 पड़ोसी बातों बातों में
 अगर मेरी पत्नीकी बात करते
 तो भी मुझे बुरा लगता,

अगर बात न करते
तो भी मुझे बुरा लगता ।
और क्लबमें, और गलीमें, और दफ्तर में,
लोग कितनी कितनी बातें करते !
मुझे उनकी हर अनसुनी बात
लाख बार सुनी हुई प्रतीत होती ।
कई बार लोगोंको धोखा देते हुए
मैं अपने आपको धोखा देने लगता ।
मुझे अपनी आँखों पर सन्देह होने लगता ।
मुझे अपनी सूझ-बूझ पर शक होने लगता ।
मुझे लगता जो कुछ मैं सुन रहा हूँ वह ठीक नहीं
शायद वही ठीक है जो कुछ मैं सुनना चाहता हूँ ।
[दूर स्टेशनसे इंजनकी सीटीका स्वर । एक सीटीकी आवाज़के
बाद एक और सीटीकी आवाज़]
पुरुष—स्टेशनपर इंजन सीटी दे रहा है !
चलनेके लिए आतुर हो रहा है ।
कोई फरियाद उसे नहीं रोक सकती ।
कोई विनती उसे नहीं ठहरा सकती ।
नोचकर ले जायेगा, छीनकर ले जायेगा ।
कोई बाहें आज लुट जायेंगी ।
कोई आलिंगन आज टूट जायेंगे ।
[गाड़ीके चलनेकी ध्वनि जिसे सुनकर पुरुष हँसना शुरू कर
देता है और हँसता ही जाता है]

पुरुष—चली गई !

गाड़ी चली गई !

फुँकारती हुई, दहाड़ती हुई,

रौंदती हुई किसीके अरमानोंको गाड़ी चली गई ।
 दूर बहुत दूर,
 जहाँसे सन्देश आते हैं तो चबाये हुए,
 खत आते हैं तो जूठे किये हुए
 जहाँ सीने तकको खोलकर तलाशी ली जाती है ।
 दिलके हर कोनेके भेद,
 लाख बार पढ़े जाते हैं, लाख बार जाँचे जाते हैं,
 और फिर कहीं पास होते हैं ।
 जहाँ हर इंसानका मूल्य
 या मार सकनेकी तुला पर तौला जाता है
 या मर सकनेके माप-दंडसे मापा जाता है ।
 जहाँसे जो लौटते हैं
 उनको प्रेम करनेका ढंग फिरसे सीखना पड़ता है ।
 जहाँसे जो लौटते हैं
 धीमे स्वरमें उनसे बोला नहीं जाता ।
 जहाँसे जो लौटते हैं
 मुसकुराहटें मुरझा चुकी होती हैं,
 हैंसी मर चुकी होती है उनके होठोंपर ।
 झुलसे हुए चेहरे, फटी हुई आँखें,
 झड़ी हुई उंगलियाँ,
 टूटे हुए बाजू ,
 कुचली हुई टाँगें,
 मुड़े हुए कन्धे,
 घायल छातियाँ,
 गोलियाँ ठंडी पड़ीं
 सोई पड़ीं बिनके पट्टोंमें ।

[कोठीके बाहर मोटर आकर रुकती है]

पुरुष—आ गई !

आज ऊँचे, लम्बे हार्न नहीं बजाये गये,

जिनको मुनकर नौकर भागे हुए जाते थे

कोठीका गेट खोलनेके लिए ।

खुद ही मोटरसे निकल आई है ।

अकेली ।

आज उसके संग मर्द नहीं कोई

जो उसके लिए मोटर चलाये,

वह उतरे और उसके लिए बिछ बिछ जाये ।

स्वयं अपने हाथोंसे गेट खोल रही है ।

अकेली ।

पीली ज़र्द ।

पीपलके सूखे पत्तेकी तरह काँप रही ।

अब इसे पता चलेगा

जो बालूकी दीवार खड़ी करते हैं

सारी आयु खाक छानते उनकी बीत जाती है ।

अब इसे पता चलेगा

कैसे दाँतोंसे खोली जाती हैं वे गाँठें

जिन्हें कोई खुद अपने हाथोंसे लगाता है ।

अब इसे पता चलेगा

कैसे औरत अपने मर्दके साथ अन्याय करके

भटकती है इस दुनियामें,

ख़्बार होती है उस दुनियामें ।

अब जब कि वह अपने बच्चोंके लिए परायी हो गई है ।

अब जब कि अपने पतिके लिए वह मर चुकी है ।

अब जब कि वह चला गया है दूर बहुत दूर,
जिसके लिए इसने सबको छोड़ा ।

अब यह रोया करेगी,
रात रात भर तारोंको गिन गिन कर ।

जब यह सिसकियाँ भरा करेगी
अधखिली कलियोंको देख देखकर ।

जिन्हें तोड़ तोड़कर
कोई इसके बालोंमें सजाया करता था ।

अब खानेको दौड़ेगा
इसको इसका सूना पड़ोस ।
पड़ोस जिसके आँगनमें चीथड़े बिखरे पड़े हैं,
कागज़ उड़ रहे हैं,
हवा खिड़कियोंको कभी खोल जाती है,
कभी बन्द कर जाती है ।

[मोटर फिर चलती है और कोठीमें आती है]

पुरुष—आज तो मोटरको खुद गैराजमें रखने जा रही है !

गैराजके बाहर मोटरको रोककर
गैराजका दरवाजा खोल रही है ।

फिर मोटरमें बैठ गई है ।
मोटर गैराजके अन्दर ले गई है ।

अब गैराजके भारी दरवाज़े अपनी सारी शक्ति लगाकर बन्द कर
रही है ।

और अब आ रही है इधर
कैसे सूखकर काँटा हो गई है !
जैसे शरीरमें बूँद भर खून नहीं ।
फटी फटी आँखें ।

बिखरे हुए बाल ।
 वीरान माथा ।
 हल्दीकी तरह पीले गाल ।
 सूखे नीले होंठ ।
 गिन गिनकर कदम रख रही है ।
 चिन्ताओंमें डूबी हुई ।
 विचारोंमें खोई हुई ।
 काँपते हाथ ।
 डगमगाते पाँव ।
 यह तो नहीं बचेगी ।

[एकदम घबराकर]

एँ गिरी ?
 बच गई !
 पत्थरके टुकड़ेसे ठोकर खाकर
 कैसे औंधी हो गयी थी !
 यह तो नहीं बचेगी ।
 यह तो नहीं बचेगी ।
 मेरे बच्चोंकी माँ मर जायेगी ?
 मर जायेगी ?
 राजी मर जायेगी ?
 यह वियोगकी चोट नहीं सह सकेगी ।
 राजी तूने प्यार किया
 तो कैसे सारीकी सारी न्योछावर हो गयीं !
 तेरा प्रियतम चला गया है ।
 तू उसे इतना चाहती थी ?
 और अब तू अकेली है ?

तू अब नहीं बचेगी ?
 तू मर जायगी राजी !
 सिसकती हुई तड़पती हुई ?
 नहीं !
 नहीं ! !
 नहीं ! ! !
 तुझे साथीकी ज़रूरत है ।
 तुझे हमदर्दकी ज़रूरत है ।
 तुझे हमराज़की ज़रूरत है ।
 मैं तुझे नहीं मरने दूँगा ।
 यह घर तेरे लिए खुला है ।
 यह बाहें तेरे लिए फैली हैं ।
 यह फूल तेरे लिए खिले हैं ।

[फूलोंको फूलदानसे निकालते हुए]

तू आज मेरी जान !
 पन्द्रह सालसे तेरे साथ एक छतके नीचे रहा,
 पन्द्रह सालकी यह साँझ,
 मुझसे बढ़कर तेरा साथी कौन हो सकता है ?
 मुझसे बढ़कर तेरा हम दर्द कौन हो सकता है ?
 मुझसे बढ़कर तेरा हमराज़ कौन हो सकता है ?

[सीढ़ियोंपर खींचे चढ़नेकी आवाज़]

पुरुष—तू सीढ़ियाँ चढ़ रही है ?

तू आज ।

तू ऊपर आ रही है ?

तू आज ।

मोहब्यतकी एक और मंज़िल भी होती है ।

तू आजा ।

तू चढ़ आ ।

यह फूल तेरे हैं ।

ओसके अछूते मोती तेरे हैं ।

तारोंकी धीमी-धीमी लौ तेरी है ।

तू आजा ।

तू चढ़ आ ।

[सीढ़ियोंपर पदचाप]

सर्व जैसी अपनी कायाके

तूने सब भरोखे बन्द कर लिये हैं ।

कोई बात नहीं ।

मैं तो खँडहरमें भी जोत जगा सकता हूँ ।

कमलकी पत्तीपर पड़ी कोई कीचड़की छींट,

मैं तुझे लाख पानियोंमें धो लूँगा ।

तू आजा !

तू चढ़ आ !!

तू आजा !!!

[सीढ़ियोंपर स्त्रीके ऊपर आनेकी पदचाप सुनाई दे रही है ।]



दो मर्द और एक माँ



पात्र :

सत्यवती

प्रेम

प्रमिला

तारा

रमेश



[पर्दा एक मध्यम श्रेणीके घरके ड्राइङ्ग रूम पर उठता है। जब पर्दा उठता है ३०-३५ वर्षकी एक स्त्री दर्शकोंकी ओर पांठ किये अंगीठीके पास खड़ी है। अंगीठीमें कोयले दहक रहे हैं। दहकते कोयलोंका प्रकाश स्त्रीके रंगीन सूट पर पड़ रहा है। सॉफ़ ढल चुकी है, पर कमरेमें अभी बत्ती नहीं जलाई गई। अंगीठीके पास खड़ी स्त्रीने अपना एक हाथ कानिस पर रखा हुआ है। उसके दूसरे हाथमें एक चिट्ठी है, जिसे वह पढ़ रही है और सुबक रही है। यह स्त्री इस घरके बच्चेकी माँ है। अंगीठी पर रखा मर्दका चित्र इस स्त्रीके पतिका है। कुछ देर बाद वह मुड़ कर दर्शकोंकी ओर देखती है। उसकी आँखें सजल हैं। इतनेमें बाहरसे द्वार खटखटाया जाता है।]

सत्यवती—[सँभलती हुई; अपने दुपट्टेके छोरसे आँख पोंछती है।]
कौन ?

प्रेम—[बाहरसे] अम्मी ! प्रमिला आँटी आई हैं।

सत्यवती—आ जाओ प्रमिला। दरवाज़ा खुला है।

[सत्यवती चिट्ठी अंगीठा पर रख कर बत्ती जलाती है और सलाइयाँ लेकर बुनने लगती है]

प्रमिला—हैलो सती ! क्या हो रहा है ?

सत्यवती—बेटा, तुम्हें छोड़ कर बाहरसे ही लौट गया है ?

प्रमिला—वरामदेमें खेल रहा है ।

सत्यवती—इन बच्चोंको सर्दी नहीं लगती ।

[दोनों अंगीठीके पास बैठ जाता हैं]

प्रमिला—क्यों, तुम्हे जुकाम है ? तेरी आँखें क्यों लाल हो रही हैं ?

सत्यवती—मुझे कुछ न कुछ होता ही रहता है ।

प्रमिला—अब यह कौन-सा रोग है ?

सत्यवती—नहीं, रोग तो पुराना ही है प्रमिला ।

प्रमिला—पता भी तो चले ।

सत्यवती—नारीके एक ही रोग होता है—प्रेम करनेका रोग ।

प्रमिला—[छेड़ते हुए] अब यह प्रेमका कौन-सा नया रोग आ चिपटा है ?

सत्यवती—प्रेम पुराना ही निभ जाये तो—

प्रमिला—प्रेम शहदकी तरह जितना पुराना उतना ही मीठा ।

सत्यवती—तू भी यह कहती है ?

प्रमिला—हाँ तीस सालकी उम्रमें किसीको इतनी समझ तो आ ही जाती है ।

सत्यवती—[सोचते हुए] प्रेम शहदकी तरह जितना पुराना, उतना ही मीठा ।

प्रमिला—पुराने प्रेमका नशा भी कितना मादक होता है !

सत्यवती—पर कभी-कभी पता ही नहीं चलता कि प्रेम कहाँ खत्म होता है, और घृणा कहाँसे शुरू होती है ।

प्रमिला—पुरुषके प्रेमके सम्बन्धमें यह कहा जा सकता है ।

सत्यवती—शायद, शायद तू ठीक कहती है ।

प्रमिला—नारी हृदयके अथाह सागरमें उसकी हर मोहब्बत मदहोश

पड़ी रहती है। और हर छोटीसे छोटी मोहब्बतके लिए एक नारी लाख बार अपने आपको न्योछावर कर सकती है।

सत्यवती—शायद, शायद तू ठीक कहती है।

[एक क्षणके लिए सत्यवती विचारोंमें डूब जाता है और फिर एक सिमकी लेती है]

प्रमिला—तुझे आज यह हो क्या रहा है ?

सत्यवती—[आँखोंमें आँसू भर कर] पिम्मी ! मुझसे कुछ न पूछो मैं आज बहुत दुःखी हूँ।

प्रमिला—पर कुछ बताओ भी तो, तूने तो कभी इतना छोटा दिल नहीं किया।

सत्यवती—हाँ पिम्मी। मैंने एक पुरुषको छोड़ा जिसके लिए मैंने फूल जैसी एक बच्ची पैदा की और मेरी आँखोंमें एक आँसू तक न आया।

प्रमिला—मोहनकी क्या बात है। वह तो देवता है। जिस तरह तुम दोनों हँसते-हँसते अलग हुए, मैंने जब भी किसीसे यह बात कही है कोई मानता थोड़े है। किसीको विश्वास नहीं होता कि कोई मर्द भी इतना...।

सत्यवती—पर अब उसे क्या हो गया ?

[फूट-फूटकर रोने लगती है और कार्निंस पर रखी चिट्ठी उठाकर प्रमिलाको देती है]

प्रमिला—यह मोहनकी चिट्ठी [पढ़ते हुए] हैं ! “तुमने बच्ची पर जैसे कोई जादू कर दिया है। यह अब मेरी रत्ती भर परवाह नहीं करती। आखिर हर साल गर्भियोंकी छुट्टियाँ, हर साल बड़े दिनोंकी छुट्टियाँ यह तेरे ही पास क्यों गुज़ारे ? खैर इस बार तो मैं इसे भेज रहा हूँ, पर जब छुट्टियाँ खत्म हों, इसे सीधा होस्टल भिजवा

देना । मैं इसकी शकल नहीं देखना चाहता ! आखिर तू एक और बच्चेकी माँ बन चुकी है, अब भी तू इसके पीछे क्यों पड़ी हुई है....”

सत्यवती—[एकदम चिट्ठी छीनते हुए] बस बस पिम्मी, मैं पागल हो जाऊँगी ।

प्रमिला—मोहन और इस तरहकी चिट्ठी लिखे । मैं कहती हूँ, उसे हो क्या गया है ।

सत्यवती—यह मर्द !

प्रमिला—मर्द ज्ञातका कुछ पता नहीं चलता ।

सत्यवती—पिम्मी ! मोहनकी कुर्बानियोंकी कहानियाँ तुम्हे कहाँ तक सुनाऊँ ।

प्रमिला—पहली बार जब उसे पता लगा कि मैं “रमेश” को चाहती हूँ—

प्रमिला—उसने तुम्हारी कोई चिट्ठी देख ली थी शायद ।

सत्यवती—नहीं, मैं और रमेश टेलीफोनपर बातें कर रहे थे, पता नहीं कैसे उसका टेलीफोन हमारे टेलीफोनके साथ जुड़ गया और सब कुछ उसने अपने कानों सुन लिया ।

प्रमिला—फिर ?

सत्यवती—उस दोपहर वह खानेके लिए घर नहीं आया । शामको मैं क्लबमें थी कि दौरेका बहाना करके वह दस दिनके लिए देहरादून चला गया । और फिर चिट्ठियों द्वारा हमने अलग होनेका निश्चय कर लिया । मुझे एक बार भी उसने बुरा नहीं कहा । मुझे एक क्षणके लिए उसने लज्जित नहीं किया ।

प्रमिला—और फिर जिस तरह तुम दोनों अलग हुए !

सत्यवती—हाय, वह दिन मैं कभी नहीं भूल सकी । पहली बार मोहन उस सुबह मुझसे पहले उठ गया । सारे काम जो हर रोज़ मैं करती थी, मेरे उठनेसे पहले उसने कर लिये । दरवाज़ोंको

खोलना, खिड़कियोंको खोलना, नौकरोको बुलाना, भाड़-पोछ करवाना, नाश्तेके लिए कहना, नाश्ता मेज़पर लगवाना और उस दिन नाश्ता करते हुए कभी वह मेरे टोस्टोंपर मक्खन लगाता, कभी शहद बार-बार मेरे आगे करता। बच्चीके लिए वह ढेरसे खिलौने खरीद लाया, और नये खिलौनेकी चाबमें उसे पता भी न लगा कि उसकी माँ उससे बिछुड़ रही है। और जब मैं मोटर में बैठी, गुलाबकी एक नई खिली कली तोड़कर उसने मुझे भेंट की।

प्रमिला—गुलाबकी अधखिली कली तेरे जूड़ेमें कितनी अच्छी लगती है !

सत्यवती—मेरे सारे गहने उसने मुझे दिये, मेरे सारे कपड़े उसने मेरे साथ कर दिये। घरकी जो-जो चीज़ मुझे प्यारी थी उसने मुझसे चोरी मोटरके पीछे रखवा दी।

प्रमिला—पिछले साल मसूरीमें मैं मोहनसे मिली थी, कितनी देर तुम्हारी बातें होती रहीं। उसके माथेपर बल तक नहीं पड़ा, उसके आँठों पर कोई शिकायत नहीं आयी।

सत्यवती—मेरी जिस-जिस सहेलीसे मोहन उन दिनों मिला, हर एकसे वह यही कहता : “प्रेम ज़ोर ज़बरदस्तीका सौदा नहीं। जब था तब था, अब नहीं रहा तो न सही।”

प्रमिला—दिलका दरिया समुद्रसे भी गहरा होता है, दिलकी बात कौन जाने।

सत्यवती—और आज कितने बरसोंसे हर साल दो बार बच्ची मेरे पास आती रही है; गर्मीकी छुट्टियोंमें मेरे पास, बड़े दिनोंकी छुट्टियोंमें मेरे पास। और फिर बीचमें भी अगर कभी उसकी तबियत खराब हुई तो आठ-आठ दस-दस दिन मेरे पास काट जाती रही है।

प्रमिला—और अब उसे क्या हो गया है ?

सत्यवती—मैं कहती हूँ पिम्मी, ये मर्द, इन मर्दोंका कोई भरोसा नहीं ।

प्रमिला—पर मोहनके मामलेमें मुझे दालमें कुछ काला नज़र आता है ।

सत्यवती—वह क्या ?

प्रमिला—मैं सोचती हूँ यह जो सात सालसे वह वैसेका वैसा है, यह जो सात सालसे वह वीरानका वीरान है, यह बिना किसी कारणके नहीं ।

सत्यवती—[सहसा घबराकर] तेरा क्या मतलब है ?

प्रमिला—मेरा मतलब है, जो अभाव मोहनकी आँखोंमें कभी-कभी दिखाई देता है, जो रूखापन कभी-कभी उसके बालोंमेंसे भाँकता है, जो अक्खड़पन उसकी आवाज़में कभी सुनाई देता है, वह बिना किसी कारणके नहीं । उसके घरके लानके घासका बराबर कटा न होना, उसके कपड़ोंके किसी न किसी बटनका टूटा रहना, उसका कभी दाढ़ी बढ़ा लेना, कभी कटवा देना, कभी मूँछे रखवा लेना, कभी मुड़वा देना, यह बिना किसी कारणके नहीं । कई बार हँसते-हँसते उसकी हँसी रुक जाती है और ऐसे लगता है जैसे एकदम उसकी आँखोंसे आँसू वह निकलेंगे ।

सत्यवती—ओ !

प्रमिला—सोचो तो सही, अगर मोहन चाहता तो इन सात सालोंमें वह अपना दिल कहीं और न लगा सकता था ? अगर वह चाहता तो इन सात सालोंमें...

[सत्यवतीकी उँगलियोंकी ओर देखते हुए]

यह तुझे क्या हो रहा है ? कैसे तेज़ीसे तेरी उँगलियाँ सलाइयों को चला रही हैं !

सत्यवती—तेरा मतलब ?

प्रमिला—मसूरीमें पिछले साल मैंने देखा कि क्लबमें जिस मेज़ पर वह एक बार बैठा उस मेज़की तरफ़ फिर कभी न देखता । एक

दिन अगर किसीसे बात करता तो अगले दिन यूँ खाली-खाली
आँखोंसे अजनबियोंकी तरह उसे देखता जैसे जान-पहचान न
हो। आखिर यह क्यों ?

सत्यवती—तेरा मतलब है कि इसकी ज़िम्मेदार मैं हूँ ?

प्रमिला—नहीं, मैं यह नहीं कहती। मैं बस यह कहती हूँ कि मोहन
इंसान है, देवता नहीं।

सत्यवती—हाँ, वह इंसान है देवता नहीं, इंसान है, देवता नहीं। काश
वह देवता होता ! वह देवता होता तो कोई अहिल्या उसके
मनको आकर्षित तो कर सकती। कोई मेनका उसके हृदयको
भरमा तो पाती। काश वह देवता होता ! कोई जुलेखा एक बार
तो उसके दामनको चाक कर डालती।

प्रमिला—ये तेरी उँगलियाँ फिर क्यों सलाइयोंको इतनी तेज़ीसे चला
रही हैं ?

सत्यवती—कुछ नहीं पिम्मी। कभी-कभी पता नहीं मुझे क्या हो
जाता है।

प्रमिला—यह क्या बुन रही हो, जिसकी तुझे इतनी जल्दी है ?

सत्यवती—बेटेका स्वेटर है।

प्रमिला—तो इसकी क्या जल्दी है ?

सत्यवती—हाँ जल्दी तो कोई नहीं। पर मैं सोचती हूँ जो काम हो जाय
सो ही अच्छा। जिस भी ज़िम्मेदारीसे कोई सुखरू हो जाये उतना
ही भार कम। जिनका रास्ता लम्बा होता है वे बहुत बोझा सिर
पर नहीं उठाये फिरते।

प्रमिला—आज तू कैसी बातें कर रही है ?

सत्यवती—आज मेरी बच्ची आयेगी।

प्रमिला—बच्चा तो तेरे पास एक आगे भी है।

सत्यवती—[सोचते हुए] हाँ बच्चा तो मेरे पास एक आगे भी है।

प्रमिला—फिर इस बच्चे और उस बच्चेमें क्या फ़र्क है ?

सत्यवती—फ़र्क ! इस बच्चेमें मिसरी जैसा स्वाद है, उस बच्चेमें शहद जैसी मिठास है। इस बच्चेके लिए मैं श्वास-श्वास जीती हूँ, उस बच्चेके लिए श्वास-श्वास तरसती हूँ। इस बच्चेको माँ की ठण्डी छाँह मिलती है; उस बच्चेके लिए मैं राहों पर आँखें बिछाये रखती हूँ। हाय, मैं माँ हूँ ! कोई मेरे दिलमें भाँक कर देखे; लाख खुशियाँ बिखरी पड़ी हैं इस बच्चेके लिए, लाख असीसें फूट निकलती हैं उस बच्चेके लिए। कोई बच्चा किसी और बच्चेकी जगह नहीं ले सकता, एक माँके दिलमें।

[बाहर मोटरकी आवाज़]

प्रमिला—यह बाहर कौन है ? मैं देखती हूँ। [जाती है]

सत्यवती—[स्वगत] सचमुच मुझे क्या हो रहा है ? किस तेज़ीसे मेरी उँगलियाँ इन सलाइयोंको चला रही हैं ? आज मुझे यह हो क्या रहा है ? [सोचते हुए] जब कोई ममता इस तरह तड़पती है, तो ईश्वर कोई बहुत पत्थरदिल ईश्वर होगा जो न पसीजे। आखिर मैं चाहती भी क्या हूँ ? एक माँ अपनी बच्चाको एक नज़र देखनेको उत्सुक है। एक माँ अपनी जाईको छातीसे लगा कर अपने मनको शान्त करना चाहती है। यह ईश्वर इतना दयालु मुना जाता है। मेरी यह छोटी-सी साध भी कोई साध है।

प्रमिला—[बाहरसे] सती ! देख तेरे लिए मैं किसे लाई हूँ ?

[प्रमिला सत्यवतीकी कोई ग्यारह वर्षकी पुत्रीके साथ प्रवेश करती है]

सत्यवती—[एकदम बच्चीको गले लगाते हुए] हाय, आज तो ईश्वरसे चाहे मैंने कुछ और माँगा होता।

प्रमिला—पता है इसे यहाँ कौन छोड़कर गया है ?

सत्यवती—तुम किसके साथ आई हो तारा बेटी ?

तारा—डैडीके साथ ।

प्रमिला—मोहन स्वयं इसे यहाँ पहुँचा कर गया है ।

सत्यवती—यह हार्न तेरे डैडीकी कारका था ?

प्रमिला—वह तो उसने वापस जाते हुए कहीं गेटमें बजाया । मैं भी तो उसकी कारको पीछेसे ही देख पायी ।

सत्यवती—पर तुम तो आज रातकी गाड़ीसे आ रही थीं ।

तारा—डैडीको यहाँ कोई काम पड़ गया सो मुझे भी ले आये । अम्मी डैडीने नयी कार ली है ।

सत्यवती—अच्छा, क्या रंग है ?

तारा—चाकलेट, अम्मी !

सत्यवती—चाकलेट ! [एकदम जैसे विचारोंमें खो जाती है]

प्रमिला—चाकलेट तो तेरा प्रिय रंग है ।

सत्यवती—हाँ पिम्मी ! चाकलेट मेरा प्रिय रंग है । पिछली बार जब ताराके डैडीने कार खरीदी, मैं चाकलेट-चाकलेट कहती रही पर इस रंगकी कोई कार मिली ही नहीं ।

तारा—अम्मी दो कारें थीं, एक हरी और एक चाकलेट । डैडीने मुझसे पूछा बेटी तुम्हें कौन सा रंग पसन्द है । मुझे चाकलेट रंग पसन्द था और डैडीने वही कार खरीद ली ।

प्रमिला—सती, कैसे तेरी बेटी हूबहू तेरी शकल निकल रही है ।

सत्यवती—[खोई हुई सी] अच्छा बेटी, सामान अपने कमरेमें रखवाकर हाथ मुँह धोले ।

तारा—अच्छा अम्मी । [जाती है]

सत्यवती—इस घरमें एक कमरा हमेशा मेरी बच्चीके लिए खाली रहता है ।

प्रमिला—मैं पूछती हूँ सती, यह मोहनने क्या किया । चुपचाप बाहर बच्ची को उतार कर चला गया ।

सत्यवती—बिलकुल कोठीके अन्दर आ गया था ?

प्रमिला—बरामदेमें आकर उसने सामान उतरवाया, बच्चीको उतारा और चला गया ।

सत्यवती—तेरा मतलब है अगर आया था तो अन्दर चला आता, बिना बताये, बिना कहे मुने किसीके घरमें घुस आता ।

प्रमिला—कई बार एक खेतके पशु साथ वाले खेतमें भी मुँह मार लेते हैं ।

सत्यवती—और उन पशुओं पर जो बीतती है वह भी तो तू जानती है ।

[दोनों हँस पड़ती हैं]

प्रमिला—प्रेम कहाँ गया है ? तेरा बेटा कहीं नज़र नहीं आ रहा है ।

सत्यवती—हाय, मुझे तो उसका खयाल ही नहीं रहा । पड़ोसियोंके घर गया होगा । जिस घरमें बच्चेकी आयाको दिलचस्पी हो, उस घरमें बच्चेको ज्यादा जाना पड़ता है ।

[दोनों हँस पड़ती हैं]

प्रमिला—[उठते हुए] अच्छा सती, मैं चलती हूँ ।

सत्यवती—मैं सोचती हूँ, तू कुछ देर और ठहरती ।

प्रमिला—नहीं अभी तेरी बच्ची तैयार होकर आ जायेगी, तेरा दिल बहलाये रखेगी ।

[सत्यवती अपनी सहेली प्रमिलाको कमरेके दरवाज़े तक छोड़कर कुछ देर बाहर बरामदेकी ओर देखती रहती है]

सत्यवती—[स्वगत] मोहन ! यह तुमने क्या किया ? बरामदे तक तू इस घरमें घुस आया । तू उस दहलीज़ तक आ गया जहाँ हररोज़ खड़ी होकर मैं रमेशकी प्रतीक्षा करती हूँ ! यह तूने क्या किया ?

तारा—[आते हुए] अम्मी, डैडीने यह चिट्ठी दी थी ।

[सत्यवती चिट्ठी पढ़ती है । पढ़ते पढ़ते उसका रंग पीला पड़ जाता है]

सत्यवती—अच्छा, चल बेटी देग्ये तेरा भाई कहाँ है ।

तारा—अम्मी, अब डैडी मुझे होस्टलमें भेज देंगे ।

सत्यवती—[दुखसे] हाँ बेटी ।

तारा—अम्मी, मैं होस्टलमें नहीं रहूँगी ।

सत्यवती—[दुखित स्वरमें] अच्छा बेटी ।

तारा—अम्मी मैं तुम्हारे पास ही रहूँगी ।

सत्यवती—[बच्चाको गले लगाती है, उसकी आँखें भर आती हैं]

अच्छा बेटी ! अच्छा बेटी ! अच्छा बेटी !

प्रेम—[भाते हुए] अम्मी !

तारा—भैया !

प्रेम—बहन !

[दोनों बच्चे मिलते हैं । माँ उनकी ओर पीठ करके आँसू पोंछती है ।]

तारा—भैया, मैं तुम्हारे लिए ढेर सारे टिकट लायी हूँ, ढेर सारी तस्वीरें लायी हूँ । चाकलेट लायी हूँ । कँचे लायी हूँ । दो गेंद लायी हूँ और अपने बचाकर रखे सारे पैसोंसे एक हवाई जहाज़ लायी हूँ, अपने राजा भैयाके लिए ।

[बाँहमें-बाँह डाले बच्चे हँसते हुए साथवाले कमरेमें चले जाते हैं । माँ उन्हें गदगद होकर देखती रहती है]

सत्यवती—कैसे बाँहमें-बाँह डाले हँस रहे हैं, खेल रहे हैं । और उसे शायद यही बुरा लगता है । [फिर चिट्ठी पढ़ते हुए] “बेटी अन्तिम बार तुम्हें मिलने आ रही है, इसके बाद मैं उसे होस्टलमें भेज दूँगा ।” [सिसकी भरती है] हाय, कोई यह क्यों नहीं सोचता

कि मैं माँ हूँ, एक माँ अपने हर बच्चेमें फिरसे जन्म लेती है, और हर बच्चा उसको हर दूसरे बच्चेसे ज़्यादा प्यारा होता है ।

प्रेम—[आते हुए] अम्मी, देखो बहन मेरे लिए क्या लायी है ।

[प्रेमके हाथमें खिलौने हैं]

तारा—[दूर से] अम्मा, मैं भइयाके लिए जुराबें बुन रही हूँ ।

[ताराके हाथमें सलाइयाँ और ऊन हैं]

सत्यवती—अच्छा बेटी, जुराबें बुनना भी तू जान गयीं ? कितना साफ़ हाथ है तेरा ! किसने सिखाया है तुझे जुराबें बुनना ।

तारा—मेरी सहेलीने ।

सत्यवती—क्या नाम है तेरी सहेलीका ?

तारा—शान्ता, अम्मी ।

सत्यवती—और भी कोई सहेलियाँ बनाई हैं तूने ?

तारा—हाँ अम्मी ! मोहिनी, कान्ता, दर्शन, गंजी—।

सत्यवती—तेरी आया वही है ?

तारा—हाँ अम्मी, तुम्हें नमस्ते कहती थी । अम्मी, तुम्हारी एक तस्वीर आयाने क्वार्टरमें छिपाकर रखी हुई है । ड्राइंगरूमवाली तुम्हारी तस्वीर गिरकर टूट गई है ।

सत्यवती—और खानेके कमरे वाली ?

तारा—वह पता नहीं कहाँ गई ।

प्रेम—अम्मी !

सत्यवती—जो तस्वीर टूट गई है वह कहाँ है ?

तारा—पता नहीं अम्मी ।

प्रेम—अम्मी !

सत्यवती—इस बार अमरूदके पेड़ोंपर फल आया है ?

तारा—हाँ अम्मी ।

प्रेम—अम्मी मेरी बात भी तो सुनो ।

सत्यवती—पिछले बरामदेमें धूप सुबह वैसे ही आती है ।

प्रेम—अम्मी !

तारा—हाँ अम्मी ।

प्रेम—मेरी बात नहीं सुनता कोई ।

सत्यवती—हाँ बेटा, बोल तू क्या कहता है ?

प्रेम—अब हम बहनको नहीं जाने देंगे, वस यहीं रहेगी ।

तारा—हाँ अम्मी, मुझे अपने पास रख लो ।

प्रेम—अम्मी, प्यारी !

तारा—अम्मी, तुम मुझे बड़ी याद आती हो ।

सत्यवती—[गुमसुम अपलक बच्चोंकी ओर देख रही है ।]

प्रेम—अम्मी !

तारा—[भर्राये हुये स्वरमें] हाँ बच्चे, हाँ ।

[माँकी आँखोंमें आँसू भर आते हैं, जिनको छिपानेके लिए कानिस पर रखी सलाइयोंको उठा लेती है, और कुछ देर बच्चोंकी ओर पीठ करके खड़ी रहती है । बाहर बरामदेमें टेलीफोनकी घंटा बजती है ।]

प्रेम—मैं टेलीफोन सुनूँगा । [दौड़कर बाहर जाता है ।]

तारा—[माँके सामने आकर] अम्मी तुम रो रही हो ?

सत्यवती—नहीं तो बेटो ।

[क्षणिक अवकाश]

तारा—अम्मी, तुम यह भैयाका स्वेटर बुन रही हो ?

सत्यवती—हाँ बेटो ।

तारा—मैं भैयाके लिए ऊदे रंगकी जुराबें बुन रही हूँ, तुम भैयाके लिए ऊदे रंगका स्वेटर ।

प्रेम—[बाहरसे] अम्मी, डैडीका टेलीफोन है, दस मिनटमें आ रहे हैं ।

तारा—अम्मी, यह कैसे हुआ, ऊदा रंग मैंने भी चुना, तुमने भी ।

सत्यवती—तू मेरी बेटी जो है । जो मेरी पसन्द है, वही तेरी पसन्द है ।

तारा—अम्मी, डैडी मुझे होस्टल क्यों भेज रहे हैं ?

सत्यवती—फिर क्या हुआ बेटी, तुम होस्टलमें रहना ।

तारा—मैं होस्टल नहीं जाना चाहती ।

सत्यवती—[टालते हुए] बेटी, यह बता तूने वह लाल गरारा कभी पहना है । मैं सोचती हूँ, तू आज-कल उसे पहना कर, नहीं तो छोटा हो जायेगा ।

तारा—अम्मी, मैं होस्टल नहीं जाऊँगी, अम्मी, मुझे अपने पास रख लो ।

सत्यवती—[टालते हुए] देखूँ बाहर कौन है ?

[उठकर खिड़कीके बाहर भाँकती है और बच्चीकी तरफ पीठ करके खड़ी हो जाती है]

तारा—[माँके पास जाते हुए] अम्मी, मेरी अम्मी, तुम फिर गे रही हो ?

सत्यवती—[गदगद] नहीं मेरी बच्ची ।

तारा—तो फिर तुम्हारी आँखोंमें आँसू क्यों हैं ?

सत्यवती—नहीं मेरी बेटी, नहीं ।

[बाहर मोटरकी आवाज़]

तारा—बाहर कोई आया है ।

सत्यवती—[जल्दीसे आँखें पाँछती है] प्रेमके डैडी होंगे । यह उन्हींकी कारकी आवाज़ है ।

तारा—मैं देखती हूँ [सत्यवती इतनी देरमें अपने-आपको संयत कर लेती है ।]

रमेश—[आते हुए] हैलो, यह कौन आया है ? त्रिटिया रानी आई है ।

[रमेश ताराके गलेमें बाँह डाले हुए है]

सत्यवती—हैलो !

रमेश—तुम्हें फिर जुकाम हो गया है ? आँखें कैसी लाल हो रही है तुम्हारी !

सत्यवती—हाँ, रमेश ।

रमेश—बेटा कहाँ है ?

सत्यवती—यहीं कहीं होगा ।

तारा—अभी इधर गया था, मैं देखती हूँ [तारा जाती है]

रमेश—तारा किसके साथ आई है ?

सत्यवती—अपने डैडीके साथ ।

रमेश—[हेरान होकर] मोहन आया था ?

सत्यवती—हाँ ।

रमेश—[और भी विस्मित होकर] मोहन स्वयं आया था ?

सत्यवती—हाँ ।

रमेश—तेरा क्या मतलब है ?

सत्यवती—मोहन अपनी कारमें बेटाको स्वयं पहुँचाने आया था ।

रमेश—हूँ, हूँ, ठहरा नहीं ?

सत्यवती—यह दो उसके प्रेम-पत्र हैं; एक डाकमें आया था, दूसरा उसने ताराके हाथ भिजवाया है ।

[कार्निंसपर रक्खी दोनो चिट्ठियाँ उठाकर रमेशको देती है और स्वयं अंगोठाके पास बैठकर बुनना शुरू करती है]

रमेश—[पढ़ते हुए] यह अब उसे क्या हो गया है ?

सत्यवती—मर्द ज्ञातका क्या पता ?

रमेश—फिर भी इस तरहकी चिट्ठियाँ लिखना कोई शराफ़त है ?

सत्यवती—[भर्राये स्वर में] मुझे याद है, जैसे कलकी ही बात हो, जब मैं चलने लगी उसने मुझसे कहा था : “बच्ची तेरी अमानत है, जब तेरा जी चाहे बुला लिया करना ।”

रमेश—अब कौन बिल्ली छींक गई है ?

सत्यवती—यह वही जाने ।

रमेश—इस तरह किसीके विवाहित जीवनको खराब करना कोई इंसानियत नहीं ।

[बाहर सड़कपर आग बुझानेके इंजनकी आवाज़ आती है]
सत्यवती—लगत है कहीं आग लग गई है ।

[उठकर खिड़कीके पास जाती है । रमेश अभी तक चिट्ठियोंको पढ़ रहा है]

रमेश—[स्वगत] बेहूदा !

सत्यवती—हाय आग सामने सिविललाइनमें लगी है । कैसे शोले आकाशकी तरफ़ लपक रहे हैं !

रमेश—[खिड़कीके पास जाकर] किमी बेचारेका घर जल रहा है ।

सत्यवती—कोई लापरवाही हो गई हांगी किसी से ।

रमेश—आजकी रात कितनी काली है !

सत्यवती—रात इतनी काली नहीं जितनी आगके शोलोंकी वजहसे लग रही है ।

रमेश—बड़ी भयानक आग है ! तपश जैसे यहाँ तक आ रही है ।

सत्यवती—पड़ोसीकी आगका सेंक मशहूर है ।

तारा—अम्मी, हम खाना खा लें ।

सत्यवती—हाँ बेटी, आयासे कहो तुम्हें खाना दे दे ।

तारा—आया तो कहीं नज़र नहीं आ रही ।

सत्यवती—पड़ोसियोंके यहाँ गई हांगी ।

रमेश—यह आया तुम्हारी पड़ोसियोंके यहाँ बहुत जाती है ।

सत्यवती—[तारासे] उसे बुलवा लो बेटी, [तारा जाती है]

रमेश—तारा कितनी बड़ी हो गई है !

सत्यवती—अब बारहवाँ साल लगा है ।

रमेश—लड़कियाँ बेलकी तरह बढ़ती हैं ।

सत्यवती—[उदास होकर] यही उम्र है जब एक बच्चीको माँकी सबसे ज्यादा ज़रूरत होती है ।

रमेश—[व्यंगपूर्वक] और इसका बाप इसे होस्टलमें भेज रहा है ।

सत्यवती—एक बार मुझे भी होस्टल भेजा गया था । मैं सारी-सारी रात रोती रहती । तीसरे दिन मेरी माँ आकर मुझे घर ले गयी ।

रमेश—जहाँ तक संभव हो एक खास उम्र तक बच्चोंको अपने माँ बापके पास ही रहना चाहिए ।

सत्यवती—जवान हो रही लड़कियोंके लिए तो माँ की ज़रूरत और भी ज्यादा होती है ।

रमेश—तुम ठीक कहती हो सती ।

सत्यवती—अब मेरी बच्ची होस्टलमें भेज दी जायगी !

रमेश—पर मैं पूछता हूँ कि एक सभ्य आदमीके लिए ऐसा करना क्या उचित है ।

सत्यवती—इस सभ्यताका ही तो सारा रोना है; सभ्यताकी डगर पर तो हम आगे निकल गये हैं, भावनाकी दृष्टिसे हम वहींके वहीं हैं ।

रमेश—तुम तो आज फिलासफ़ी भाड़ रही हो ।

सत्यवती—जिस तन लागे वह तन जाने ।

रमेश—तेरा मतलब है, मुझे तुम्हारे साथ कोई हमदर्दी नहीं ?

सत्यवती—यह बात नहीं, रमेश, तुम तो मेरे प्राण हो, तुम तो मेरी आखिरी उम्मीद हो ।

रमेश—मैं सोचता हूँ कि अगर तुम कहाँ तो मैं मोहनसे बात करूँ ।

सत्यवती—तुम उससे क्या कहोगे ?

रमेश—मुझे जो कहना है कह लूँगा, बस तुम्हारी अनुमति चाहिए ।

सत्यवती—नहीं-नहीं, रमेश, तुम मोहनको नहीं जानते ।

रमेश—मैं मोहनको नहीं जानता, जिसके साथ मैं आधी-आधी रात तक क्लबमें बैठा शराब पीता रहा हूँ, ताश खेलता रहा हूँ ?

सत्यवती—तुम मोहनको नहीं जानते रमेश । मर्दको मर्द मुश्किलसे ही पहिचान सकता है । मर्दको समझ पानेके लिए एक औरतकी आँख चाहिए ।

रमेश—यह तेरी उँगलियाँ किस तेज़ीसे सलाइयाँको चला रही हैं ?

सत्यवती—[एकदम घबराकर] है ! हाँ, मैं बेटेका स्वेटर बुन रही हूँ ।

रमेश—क्यों आज ही रात खत्म करना है ? यह तुम्हारी कैसी आदत है सती, जो मनमें आये उसे पूराकर लेना, उसी पल, उसी क्षण, चाहे कुछ ही हो जाये ।

सत्यवती—काश ! ज़िन्दगीमें कोई जो कुछ भी मनमें आये पूरा कर सके !

रमेश—इस समय तुम्हारा मन क्या चाहता है ?

सत्यवती—मेरा मन चाहता है, मेरा मन चाहता है....

[जोर-जोरसे हँसना शुरू कर देती है और हँसती ही जाती है]

रमेश—कहो न तुम्हारा मन क्या चाहता है ।

सत्यवती—[एक दम हँसी रोककर] मेरा मन चाहता है, मेरा मन चाहता है कि मेरे हाथमें एक चाकू हो, मेरे हाथमें एक चाकू हो—और जब तुम मेरी ओर पीठ करो, मैं चाकू तुम्हारी पीठमें भोंक दूँ ।

[सत्यवतीकी आँखोंमें आँसू छलक आते हैं, रमेश स्तम्भित-सा उसे देखता है, कि सत्यवती मूर्च्छित-सी होकर गिर पड़ती है । सलाइयाँ और स्वेटर क्रशपर जा पड़ते हैं]

रमेश—[सत्यवतीको सँभालते हुए] सती, सती मेरी जान, सती क्या हो गया तुम्हें, सती ?

सत्यवती—[सचेत होकर रोने लगती है] माफ़ करना रमेश, मुझे माफ़ करना, मैं बहुत बदनसीब हूँ ।

रमेश—हौसला करो सती ।

सत्यवती—मैं बहुत दुखी हूँ ।

रमेश—मैं तुम्हें थोड़ी ब्रान्डी लाकर देता हूँ [साथवाले कमरेमें जाता है]

सत्यवती—[सलाइयाँ और स्वेटर उठाते हुए] यह स्वेटर मुझे खत्म करना चाहिए । आखिर क्यों ?—जल्दी क्या है ? मैं क्यों स्वेटर खत्म करना चाहती हूँ ? क्या मैं कहीं जा रही हूँ ? मैं तो कहीं भी नहीं जा रही । फिर जल्दी क्या है ?

रमेश—[बोतल और गिलास लेकर आते हुए] मैं आयासे कह आया हूँ, बच्चोंको मुला दे । तारा अब बड़ी हो गयी है, मैंने सोचा इधर आकर क्या देखेगी ।

[ब्राण्डामें गर्म पानी मिलाकर गिलास सत्यवतीको देता है]

सत्यवती—हाँ, तारा अब बड़ी हो गयी है ।

रमेश—इसे एकटप पी लो, सती ।

सत्यवती—[पीते हुए] रमेश मुझे और ब्रान्डी दो, आज मैं अपने आप को भूल जाना चाहती हूँ ।

रमेश—[ब्राण्डी देते हुए] हाँ, आदमीको भूल ही जाना चाहिए, यह ज़िन्दगीकी बदमज़ग़ियाँ।

सत्यवती—या, कई उनसे टकरा कर चूर-चूर हो जाते हैं ।

रमेश—कुछ लहरे ऐसी भी होती हैं जो हर चट्टानसे टकराकर ऊपर ही ऊपर उठती हैं ।

सत्यवती—पर कुछ ऐसी भी होती है, जो आप तो ऊपर उठें या न उठें चट्टानकी जड़े हिला देता हैं ।

रमेश—पर, यह बताओ सती, आज तुम्हें हो क्या रहा है ?

सत्यवती—[नशेमें] हाय, आज मैं भूल जाना चाहती हूँ कि मैं माँ हूँ ।

रमेश—मैं कहता हूँ, यह मोहनको बैठे-बिठाये क्या हो गया ? बड़ा अपने आपको नई रोशनीका आदमी कहता है !

सत्यवती—यह उससे अब कौन पूछे ?

रमेश—तुम भी तो उसकी बातें करती थकती नहीं थीं ।

सत्यवती—जो शराफत उसने हमारे अलग होते समय दिखाई, उसकी कौन सराहना नहीं करता ?

रमेश—पर अब क्या हो गया है ?

सत्यवती—कुछ समझमें नहीं आता ।

रमेश—आज कल की नई रोशनीमें एक बच्चेको उसकी माँसे छीन लेना, मेरी नज़रमें घोर अन्याय है ।

सत्यवती—हाथ उससे जाकर अब यह कौन पूछे ?

रमेश—मैं जाकर उसे यह कहनेके लिए तैयार हूँ । यह कोई शराफत है ? जितना अधिकार एक पिताको अपने बच्चे पर है, उतना ही बल्कि उससे ज़्यादा एक माँको अपने बच्चे पर होता है । नये ज़मानेमें, नई रोशनीमें, क्योंकि एक माँ एक बच्चेके पिताके साथ रहना उचित नहीं समझती, इसलिए उससे उसका बच्चा छीन लिया जावे ? माँकी ममताका तो कुछ लिहाज़ होना चाहिए, बच्चेके कोमल हृदयका तो कुछ ख़याल होना चाहिए ।

सत्यवती—तुम ठीक कहते हो, पर समयकी सरकार उसकी तरफ़ है, सरकारका कानून उसकी ओर है ।

रमेश—कानून समयकी ज़रूरतके अनुसार बनाये जाते हैं । निर्दय न्याय के ऊपर भी कोई चीज़ है । क्योंकि एक बच्चेकी माँ कुछ करती है इसलिए बच्चेसे माँकी छातीकी ठंडक छीन ली जाय ? क्योंकि एक बच्चेकी माँ कुछ करती है इसलिए बच्चेको माँ के जीवनप्रद स्पर्शसे अलग कर दिया जाय ? माँकी पलकों तले चित्रित लाखों नक्शे बच्चेके नखशिखको रूप देते हैं, सँवारते हैं, सजाते हैं ।

सत्यवती—तुम ठीक कहते हो पर ।

रमेश—मैं तो यहाँ तक मानता हूँ कि माँमें चाहे लाख बुराइयाँ हों, उसके बच्चेको उससे अलग नहीं करना चाहिए । चाहे वह कितने

ही पापोंके अन्धकारसे घिरी हो, एक माँ अपने दिलके किमी कोनेमें प्रकाशकी एक किरण छिपाये रखती है अपने बच्चेके लिए । शेरनी जंगलके सारे जानवरोंको ग्वाती है ? लेकिन जब अपनी गुफामें जाती है, अपने बच्चेके लिए, अपनी कोखके जायेके लिए वह बिलु-बिलु जाती है । सौ-सौ जानें न्यौछावर करनेका तैयार रहती है । एक माँको उसके बच्चेसे कभी अलग नहीं करना चाहिए ।

[सुनते-सुनते सत्यवतीका मुख-मंडल आलोकित हो उठता है ।
मुँह खुलाका खुला रह जाता है । स्वेटर सलाइयाँ उठाकर फिर वह तेज़ीसे बुनना आरम्भ कर देती है]

सत्यवती—रमेश, मेरी जान !

रमेश—एक माँको उसके बच्चेसे कभी अलग नहीं करना चाहिए । आज के नये ज़मानेमें, आजकलकी नयी रोशनीमें, इस तरहकी बातें करना, जैसे माँहन कर रहा है, मैं तो हैरान हूँ ।

सत्यवती—[एक दम जैसे खिल उठती है] रमेश, इसका मतलब है...

रमेश—जब तुम लोग अलग हुए, उस समय वह अगर चाहता, अगर उसकी इच्छा होती, तुम्हें रोक सकता था । अपने हाथसे स्वयम् उसने अलग होनेका पत्र लिखा, अपने हाथसे, स्वयम् उसने लिखकर तुम्हें दूसरी शादी करनेकी छूट दी, जिस तरह एक नये ज़मानेके, नयी रोशनीके आदमीको करना चाहिए । अब सात सालोंके बाद इस तरह रार मचाना कोई शराफ़त है, कोई इन्सानियत है ।

सत्यवती—[खुश होकर, जैसे उसे कोई मज़िल दिखायी देने लगो है]
तो मैं सोचती हूँ, मेरी जान...

रमेश—मैं कहता हूँ यह अन्याय है, न केवल तुम्हारे साथ, मेरे साथ भी, हमारे बच्चेके साथ भी । एक घरकी नारी जब दुखी होती है

तो उस घरपर जैसे गमकी घटा छा जाती है । जैसे किसी कमरेके सारे परदे गिरा दिये जायें और उसमें किसीका दम घुटने लगे । इस नये ज़मानेमें, इस नयी रोशनीमें....

सत्यवती—[एक कदम आगे बढ़कर] रमेश, रमेश, मेरी बात तो सुनो ।

रमेश—मैं मानता हूँ कि एक माँको अपने बच्चेपर पूरा हक है, पूरा अधिकार है, चाहे वह माँ उस बच्चेके पिताके पास रहे या न रहे ।

सत्यवती—[और भी तेज़ीसे] तो फिर मेरी जानमें, मैं—मोहनके पास चली जाती हूँ ।

रमेश—हाँ, तुम्हें ज़रूर उसके पास जाकर उसे समझाना चाहिए ।

सत्यवती—नहीं, यह नहीं रमेश । मैं मोहनके पास वापस चली जाती हूँ ।

रमेश—[घबराकर] क्या मतलब ?

सत्यवती—मेरा मतलब है मैं मोहनके पास वापस चली जाती हूँ, हमेशा-हमेशाके लिए ।

रमेश—[फटी-सी आवाज़में] यह क्या कह रही हो ?

सत्यवती—[बुनना छोड़कर] मैं कह रही हूँ, रमेश, मैं मोहनके पास चली जाती हूँ । अगर वह ज़्यादाती कर रहा है, तुम तो समझदार हो ।

रमेश—[हैरान] तुम यह कह क्या रही हो ?

सत्यवती—[समझाते हुए] मैं कहती हूँ कि मैं मोहनके पास चली जाती हूँ । मेरा अब क्या है ? मैं उसके पास रह लूँगी, अपनी बेटीके लिए ।

रमेश—[अचक्का-सा] और हमारा बेटा ?

सत्यवती—तुम उसे मेरे पास भेज दिया करना । गर्मीकी छुट्टियोंमें, और बड़े दिनोंकी छुट्टियोंमें [आगे बढ़कर उसका हाथ पकड़ लेती है]

रमेश—तुम्हारा मतलब क्या है ?

सत्यवती—मेरा मतलब है, अगर मैं मोहनके पास चली जाऊँ अपनी बच्चीके लिए, तुम तो बेटेको मेरे पास भेज दिया करोगे ? [सिसकी लेकर] मेरा अब क्या है ? किसी तरह मेरे दिन कट जायेंगे । हाय, मैं एक माँ हूँ । एक माँ केवल बच्चोंके लिए जीती है । तुम तो नये ज़माने, नयी रोशनी...

रमेश—यह कैसे हो सकता है ?

सत्यवती—हो तो सकता है ! क्यों नहीं हो सकता ? जैसे मोहन बेटीको भेजा करता था, वैसे ही तुम बेटेको मेरे पास भेज दिया करना ।

रमेश—[घबराकर उठते हुए] यह कैसे हो सकता है ?

सत्यवती—[फरियाद करते हुए] यह हो सकता है । मोहन अभी वैसे का वैसा है । मैं उसे समझा लूँगी । मैं उसे मना लूँगी । मैं अपनी बेटीके पास चली जाती हूँ, तुम बेटेको मेरे पास भेज दिया करना । तुम समझदार हो, सभ्य हो, नये ज़माने...

रमेश—[कुपित] यह कैसे हो सकता है—यह कैसे हो सकता है...

सत्यवती—[मिन्नत करते हुए] यह हो सकता है, रमेश मेरी जान, यह हो सकता है । कहो तुम बेटेको तो मुझसे नहीं छीन लोगे । तुम नयी रोशनी...

रमेश—[फटी हुई आवाज़में स्तम्भित-सा] यह कैसे हो सकता है ? यह कैसे हो सकता है ? यह कैसे हो सकता है ? यह कैसे हो सकता है ?



अमानत



पात्र :

एक बीमार युवती



[एक बीमार युवती मृत्युकी अन्तिम घड़ियाँ गिन रही है ।
जब परदा उठता है समूचा परिवार उसके पलंगके चारों ओर
खड़ा नज़र आता है ।]

बीमार युवती—पिता जी चुप ।

माताजी चुप ।

बहनें चुप ।

भाई चुप ।

नौकर चुप ।

आप सब चुप हैं !

आँसू भरी आँखें लिए मेरे पलंगके पास मेरी ओर देख रहे हैं ।

मेरे अन्तिम क्षण निहारनेके लिए ।

सचमुच मैं मर रही हूँ ?

अस्पताल वालोंने मेरे रोगको असाध्य बता कर मुझे लौटा
दिया है ।

डाक्टर निराश होकर मुझे छोड़ गये ।

अब मुझे कोई भी दवा नहीं देता ।

न ऊदे रंग की दवा, न तरबूज़ी रंग की दवा ।

इंजेक्शन लगाने भी बन्द कर दिये हैं ।

सचमुच मैं मर रही हूँ ?

कोई सत्रह सालकी आयुमें भी मरता है ?

[खड़े हुए परिवार की आँखोंसे आँसू गिरते हैं ।]

बी०यु०—सत्रह सालकी आयु !

सत्रह साल की आयु तो होती है भूला भूलने की आयु ।

सत्रह सालकी आयु तो होती है झरोखोंमें खड़े होनेकी आयु ।

सत्रह सालकी आयु तो होती है, तारे गिननेकी आयु ।

सत्रह साल की आयु !

जब सुगन्धियाँ एक युवतीको छूँटती फिरती हैं ।

जब जुगुनू आ छिपते है, चोटियोंमें ।

जब हवाएँ सन्देश देती हैं ।

आँखें सूख जाता हैं, फिर भीग जाती हैं ।

सत्रह सालकी आयु !

जब मुसकानें रोके नहीं रुकती ।

जब सारा संसार सुन्दर लगता है ।

जब ऊँचा बोल नहीं निकलता ।

सत्रह सालकी आयु !

लाज संकोचकी आयु ।

सपनोंकी आयु ।

हाव-भावकी आयु ।

सत्रह सालकी आयु होती है,

खाने-पीने, पहनने, हँसने-खेलनेकी आयु ।

सत्रह सालकी आयुमें भी कोई मरता है ?

[चीत्कार करते हुए]

बी० यु०—मैं मरना नहीं चाहती,

मैं मरना नहीं चाहती ।

कोई मुझे बचा लो,

माता जी, पिता जी, कोई मुझे बचा लो !

[परिवारकी चीखें निकल जाती हैं । पिताके संकेत पर सब बाहर चले जाते हैं । कमरेमें अब केवल पिता रह जाता है । बाहर गैलरीसे और पास वाले कमरेसे कभी कभी किसीकी सिसकियाँ भरनेकी आवाज़ आती रहती है]

बी० यु०--चले गये,

सब चले गये ।

अन्तिम बार मिलकर ममता भरी माँ भी चली गयी ।

अन्तिम बार मिलकर माँ-जाई वहाँ चली गयीं ।

भाई चले गये, जिनके बच्चे मैंने याद किये थे ।

बस, आप रह गये हैं, पिता जी, बस आप !

मेरे पास बैठ जाइए...पलंग पर, ऐसे, बस ।

मेरे साथ बातें कीजिए ।

मैं मर नहीं रही,

हाय, आपको कैसे विश्वास दिलाऊँ, मैं मर नहीं रही ।

मेरे पैर ठंडे हो गये हैं...मुड़ गये हैं,

कोई बात नहीं ।

मैं ठुक ठुक आपको देख रही हूँ ।

आपकी आँखोंसे गिरने वाले एक एक आँसूको देख रही हूँ ।

[घबराकर]

पिता जी बाहर अमराई पर कोई काग बोल रहा है ।

शायद कोई आनेवाला है ।

मुझे सुगन्ध आ रही है ।

शीतल वायुका जैसे एक झोंका-सा हो ।

बाहर चौकीदार कहीं गेट बन्द न कर दे ।
 पिताजी, उसे कहिए आजकी रात द्वार खुले रहें ।
 आजकी रात बत्तियाँ जलती रहें ।
 मेरे पलंगके पास एक कुर्सी रख दीजिए ।
 बस, यूँ, धन्यवाद ।

[घबराकर]

बी० यु०—हाय हाय, मेरे हाथ ठंडे हो गये हैं ।
 हाय, मेरे हाथ अकड़ रहे हैं !
 मेरी बाँह नहीं हिल रही है ।
 माताजी, मेरी माताजी...मैं गयी...मैं चली ।
 [घबराई हुई माँ अन्दर आती है ।]

बी० यु०—माताजी !

आप आ गयीं ?
 मुझे अपनी गोदमें ले लीजिए ।
 मैं जा रही हूँ ।
 हाय मुझे बचा लो ।
 [माँ लड़कीका सिर अपने घुटनोंपर रख लेती है । पिता पलंग
 के पास खड़ा हो जाता है ।]

बी० यु०—मेरे हाथ खट्टीके सूखे छिलकेकी तरह अकड़ गये हैं ।
 मेरी उँगलियाँ पीली पड़ गयी हैं ।
 मेरे पंर ऐसे निष्प्राण पड़े हैं जैसे विस्मृत खिलौने कहीं रखे हों ।
 मेरी टोंगोंमें जैसे चोंटियाँ रंग रही हैं ।
 कैसे ठंडी होती जा रही हैं ।
 वेहिस होती जा रही है ।
 ये टंड चलती-चलती ।
 ये मुन्न बढ़ती-बढ़ती मेरे हृदय तक पहुँच जायगी ।

मेरे सिर तक पहुँच जायेगी ।
 अच्छा, तो इसे कहते हैं मौत !
 ऐसे बेजान हो जाना ।
 ऐसे बेहिस हो जाना ।
 अकड़ जाना, तख्तेका तख्ता हो जाना ।
 तो ऐसे कोई मरता है ।
 हाय, तो मैं मर रही हूँ ?

[घबरा कर]

हैं, यह बाहर मोतिया क्यों भोंक रही है ?
 इसे किसीने क्यों नहीं बंधा अभी तक ?
 पिताजी, बाहर देखिए कोई आकर लौट न जाये ।
 मजाल है चिड़िया का पर भी मारने दे, यह चुड़ैल मोतिया ।
 इतनी दूरसे कोई आयगा और मोतिया उसे यों भोंकेगी ।
 पिताजी, आप जाते क्यों नहीं ?
 पिताजी, आप जाइए ।
 [पिता बाहर जाता है । लड़की स्नेहपूर्ण दृष्टिसे माताकी ओर
 निहारती है ।]

बी०यु०—माता जी !

मेरी माता जी, ऐसे आहें भरनेसे क्या होगा ?
 पिताजी बाहर गये हैं, तुम मेरे हाथोंमें, पैरोंमें मेहदी रचा दो ।
 सामने अलमारीके ऊपरके खानेमें पुड़िया रखी है ।
 माता जी !
 मैं मर जाऊँगी, तो मेरे लिए बनाये देहजका क्या करोगी ?
 हाय, मेरे पलँग-पोश !
 जिनको काढ़ते हुए मेरी पोरियाँ रह गयीं ।
 पलँग पोशोंके जोड़े ।

चादरें ।

तकियोंके गिलाफ़ ।

और पर्दे-खिड़कियोंके लिए, दरवाज़ोंके लिए ।

अपना एक छोटा-सा घर ।

स्वयं फूलोंके बीज डालना ।

स्वयं फूलोंको निकलते हुए देखना !

स्वयं अपने फूल चुनना ।

अपने कमरेमें सजाना ।

अपने फूलोंकी भीनी-भीनी सुगन्ध ।

मैं सोचती हूँ, माता जी !

यदि मैं आज न मरूँ तो अगले महीने इस रोज़ मैं कहाँ हूँगी ?

अब मेरी सहेलियाँ क्या गीत गाने नहीं आयेंगी ?

अब मेहदी नहीं धोली जायेगी ?

अब उबटना नहीं मला जायेगा ?

मेरी बिंदिया ऐसे ही सूख जायेंगी ?

सिन्दूर यों ही पड़ा रहेगा ?

हाय, यदि मुझे पता होता,

तो मैं जी भरके बातें तो कर लेती !

हाय, यदि मुझे पता होता !

तो मैं क्यों प्यार बढ़ाती ?

मैं क्यों शिकायतें सुनती ?

क्यों उलाहनें देती ?

हाय, यदि मुझे पता होता !

इन गज़ गज़ लम्बे बालोंको क्यों पालती रही ?

लाख काजल धुल गये मेरी आँखोंकी भीलमें ।

सौ सुगन्धियाँ मेरे सीनेकी लालसाओंको झुँडलाती रहीं ।

हाय, यदि मुझे मालूम होता !
 उषाकी लालिमाको मैं जी भरकर देख तो लेती ।
 रक्ताभ सायंकालसे मैं कोई सम्बन्ध तो जोड़ लेती ।
 चाँदनी आ आकर मेरी खिड़कीसे लौट लौट न जाती ।
 टंडे मीठे भरनोंमें पैर लटकाकर बैठी रहती, बैठी रहती ।
 कलियोंसे मैं खिलने, फूलने, मुरझाने और मर जानेका रहस्य तो
 जान लेती ।

कोई साथ बनाती ।
 कोई साथ तोड़ती ।
 मुझे अकेले चलनेका अनुभव तो होता ।
 न मैंने कोई पूनी बनाई ।
 न मैंने कोई चर्खा काता ।
 न मैंने कोई अट्टी उतारी ।
 हाय मैं क्या मुँह लेकर जाऊँ ?
 मेरी पूँजी क्या है ?
 मैं मरनेके लिए तैयार नहीं हूँ ।
 विलकुल तैयार नहीं ।
 मेरी माँ, मुझे रोक लो !
 कोई उपाय करके मुझे बचा लो !
 कोई कीमत नहीं जिससे आदमी जीवन खरीद ले ?
 कुछ वर्ष और जी लेना !
 बूढ़ी आयुमें तो कोई मरता है ।
 पाँच दिन बीमार रहकर कोई इस तरह कूच नहीं कर लेता !
 हाय अब सुन्न घुटनों तक पहुँच गयी है ।
 मेरी पिण्डलियाँ जम गयी हैं, अकड़ गयी हैं, पत्थर हो गयी हैं ।
 मैं मर रही हूँ और आनेवाला अभी तक नहीं आया ।

[घबराकर]

हाय यह बत्ती कैसे बुझ गयी ?

हाय यह रोशनी किसने बुझा दी ?

दिये बुझ गये !

मैं नहीं मरूँगी, मैं नहीं मरूँगी, मैं नहीं मरूँगी, मैं नहीं मरूँगी ।
अभी...

[बेहोश हो जाता है । और इस अवस्थामें हँसना शुरू कर देता है । कुछ देर बेहोशीमें इसी तरह बोलती रहती है ।
उसका एक भाई सूजी हुई आँखोंसे चुपचाप पलंगके पास आकर खड़ा हो जाता है ।]

बो० यु०—[हँसते हुए, जैसे कोई बच्चा किसीको छेड़ता है]

मैं तो नहीं मरूँगी ।

मुझे कौन मार सकता है ?

मैं तो माँ की गोद में छिप जाऊँगी ।

मैं पत्तोंके झुण्डमें सो जाऊँगी ।

मैं तो परछाईकी ओटमें हो जाऊँगी ।

बो० यु०—[बेहोश, फिर हँसते-हँसते रोना शुरू कर देती है]

हाय मरनेकी कितनी मुसीबत है !

अछूते, कुँवारे, हाथ लगनेसे मैले हाँ जानेवाले इस शरीरको
छोड़ देना ।

लाख हीरो, लाख सोहनियोंके सँचोंमें ढली, इस कायाको
त्याग देना ।

इन गोल गुदली बाहोंको, इन आँखोंको जिनमें लाख-लाख
जादू भरे हैं ।

इन होठोंको, जो एक बोलका बोझ नहीं सह सकते थे ।

ऐसे हाथ आगे जाकर पता नहीं मिलें या न मिलें ।

ऐसे हाथोंकी-सी अँगुलियाँ पता नहीं आगे जाकर मिलें या
न मिलें ।

ऐसी अँगुलियों जैसी पोरियों पता नहीं उधर हों न हों ।

हाय मरनेकी कितनी मुसीबत है !

[बेहोश । एक दम रोना बन्द कर देती है ।]

बी० यु०—मेरी माँके सात बच्चे हुए,

पर जब मैं आई, उसकी फिरसे माँ बननेकी अभिलाषा मिट गयी ।

मैंने सोचा था, मेरा ब्याह होगा,

और मैं आज़ाद हो जाऊँगी ।

जी भरके सोऊँगी,

जी भरके खट्टी अँगिया खाऊँगी,

जी भरके हँसूगी,

बाहर निकलूँगी, बिना किसीको बताये कि कहाँ जा रही हूँ ,

लौटके आऊँगी, जब मेरा जी चाहेगा ।

बी० यु०—[वैसे ही अचेतावस्थामें]

हाय; पता नहीं, शायद मैं मर ही गयी हूँ ।

ऊपर,

और ऊपर,

बिलकुल ऊपर ।

तारे नीचे,

चाँद नीचे,

सूरज नीचे,

आकाश नीचे ।

यह कौन-सा लोक है ?

कासनी रंग, ऊदे रंग, पीले रंग, गुलाबी रंग,

रंगोंमें रंग घुल मिल रहे हैं ।
 मन्द मन्द शीतल वायु,
 हल्की हल्की धूप,
 हरी मखमली घासमें लिपटी हुई धरती ।
 फूल द्वारपालोंकी तरह खड़े हुए,
 फूल हँस रहे,
 फूल मस्त, अडोल आँखें मूँदे हुए ।
 फूल जिनके गलेसे कलियाँ लगी हुई हैं ।
 फूल जिन पर भौरे मंडरा रहे हैं ।
 फूल जिनकी भोली शबनमके मोतियोंसे भरी है ।
 फूल जिनके पास बुलबुलें चहक रही हैं ।
 फूल घासमें से भाँक रहे ।
 फूल पत्तियोंमें से ताक रहे ।
 फूल टहनियोंसे उछल-उछल पड़ते ।
 फूल पेड़ोंसे लपक-लपक कर चुम्बन बरसा रहे ।
 फूल कानोंमें कुछ कह रहे, सन्देश दे रहे, सुगन्धि लुटा रहे ।
 साफ, उज्ज्वल, शीतल, गरम फूटते हुए भरने ?
 दूध जैसी सफ़ेद भाग वाली, उछलती, कूदती, नाचती, गिरती
 जल-धाराएँ ।

अलसायी हुई नशीली नहरें ?
 सोई हुई अचल भीलें
 जमुर्दकी तरह बड़ी हुई ।
 भीलोंके किनारे पेड़
 फूलोंसे सजे हुए,
 फलोंसे लदे हुए ।
 पेड़ोंकी घनी परछाइयाँ ।

परछाइयोंमें मुस्ता रही मछलियाँ ।
 सोये हुए कछुए,
 रंग बिरंगे पत्नी, चहक रहे, गुटक रहे, मटक रहे,
 किलोलें करते हुऐ नन्हें हिरण,
 मभियाती बकरियाँ ।
 मासूम निर्लेप भेड़ें ।
 दूध टपकाते गउओंके स्तन ।
 भरपूर नवयुवतियाँ ।
 खिले खिलेसे मुखड़े ।
 मुसकानें बिखेर रहीं ।
 गोरे गोरे रंग ।
 ऊँचे लंबे आकार ।
 गज गज बाल ।
 मदमाते काले नयन ।
 अर्द्ध नग्न-सी ।
 ढकी ढकी सी ।
 वायुमें तैर रहे, घास पर फैल रहे रेशमी पहनावे ।
 कोमल कोमल ।
 रससे भरी ।
 कहीं गा रहीं ।
 कहीं खेल रहीं ।
 कहीं टहल रहीं ।
 कहीं पेड़ोंपर चढ़ बैठीं ।
 कहीं घासपर लेटीं ।
 कहीं नहा रहीं ।
 शिकारोंमें सोई हुई ।

गुलाबी-गुलाबी गाल ।
 याकूती होठ ।
 साँचोंमें ढले आकार ।
 एक मस्ती, एक दुलार, एक उल्लास ।
 एक बहुलता, प्रफुल्लता, एक चिर यौवन ।
 एक अनन्त आनन्द ।
 अटूट सपने ।
 अथाह प्यार ।
 दूर बहुत दूर बर्फोंसे लदे पहाड़ ।
 पहाड़ोंसे आ रही ताज़ी हवाएँ ।
 हवाओंसे लिपटे हुए गीत ।
 स्नेहोंके, चावोंके, खुशियोंके ।
 मीठे-मीठे, मधुर-मधुर ।
 सोनेकी चम-चम करती चट्टानें ।
 चट्टानोंके पैरोंमें लोट रहे हीरे, मोती, पन्ने, जवाहर ।
 पुरुष, नवयुवक, छलहीन, निष्कपट, सन्तुष्ट ।
 शीशम जैसे आकार ।
 फौलादी छातियाँ ।
 लड़कियोंके पास बैठे ।
 हाथोंमें हाथ थामे ।
 चलते, भूला भूलते ।
 खिलखिला कर हँसते ।
 पावन ।
 निर्लेप ।
 स्वच्छ नयन, स्वच्छ बोल, स्वच्छ परस ।
 स्वच्छ***स्वच्छ***सब कुछ स्वच्छ ।

[एक नशेमें डूबी हुई सी शान्त हो जाती है, कुछ क्षण ऐसे चुप रहकर सहसा फूट-फूटकर रोती है]

बी० यु०—मैं नहीं मरूँगी ।

मैं नहीं मरूँगी ।

माता जी ! पिता जी ! मेरे अच्छे भाई, मुझे बचा लो ।

मैं नहीं जाऊँगी वहाँ ।

वहाँ केवल फूल हैं, फूलोंके साथ काँटे नहीं ।

मुस्कानें हैं, सुगन्धियाँ हैं, फुहारें हैं ;

वहाँ प्रयास नहीं, परिश्रम नहीं, पसीना नहीं ।

वहाँ कोई हल नहीं जोतता ।

वहाँ कोई बीज नहीं बोता ।

वहाँ कोई रखवालीके लिए नहीं बैठता ।

वहाँ कोई ढोर नहीं मोड़ता ।

सिरपर मटेकी मटकी लिए वहाँ कोई कुलवधू नहीं जाती ।

चल-चलकर किसीके तलुवे नहीं थकते ।

चक्की पीस-पीसकर किसीके हाथोंमें घट्टे नहीं पड़ते ।

थककर, हारकर, खेतके किनारे आधे मुँह सोये हुए बेहोश मैंने
किसीको नहीं देखा ।

वहाँ धूल नहीं ।

मिट्टी उड़-उड़कर किसीकी भोंहोंपर नहीं पड़ती

जिसे कोई चुनरीके पल्लेसे पास बैठकर पोछे ।

भोरकी सीटियाँ वहाँ कामपर नहीं बुलातीं ।

भाग-भागकर फूला हुआ साँस लिये समयपर कारखाने पहुँचा

वहाँ कोई कृतज्ञ नहीं होता अपने भगवानका ।

वहाँ कोई बच्चा नहीं, जो किलकारियाँ भर रहा हो ।

मुड़मुड़कर अपनी माँ के दूधकी ओर निहार रहा हो ।

थोड़ी-थोड़ी भूखमें विसूर रहा कोई नन्हा कितना प्यारा लगता है !
 वहाँ कोई अभिलाषा नहीं ।
 वहाँ कोई प्रतीक्षा नहीं करता ।
 खिड़कीमें खड़े होकर किसीको देखना ।
 और दूरसे आता हुआ किसीको देखकर खिल उठना ।
 वहाँ कोई रुठता नहीं ।
 किसी रुठे हुएको मनाना और फिर उसका मान जाना !
 हाय, यह दुनिया कितनी मीठी है !

[ऊँचे स्वरमें फ़रियाद करने लगती है]

बी० यु०—मैं नहीं मरना चाहती ।

मेरे अच्छे भैया, तुम भी कुछ नहीं कर सकते ?
 बाहर गैलरीमें टेलीफोन रक्खा हुआ है ।
 विलायत वाले भैयाको टेलीफोन करके तो देखो ।
 शायद वहाँसे कोई दवा मिल जाये ।
 शायद वहींसे कोई इंजेक्शन आ जाये ।
 पश्चिम वाले तो इतने आगे बढ़ गये हैं !
 एटम बमसे यदि लाखोंको मार सकते हैं
 तो क्या एक नवयौवनाको जीवित नहीं कर सकते !
 सत्रह सालकी एक नवयुवती ।
 मेरे विलायत वाले भैयासे कहो ।
 तेरी बहन जिसकी ओर आँख उठा कर तू किसीको देखने नहीं
 देता था आज निर्दयी मौतके चंगुलमें तड़प रही है ।
 उसको किसी तरह बचा लो ।
 कोई हीला नहीं ।
 कोई बहाना नहीं ।
 कोई सिफारिश नहीं ।

कोई फरियाद नहीं ।
कोई सुनवाई नहीं ।
यह कैसा अन्याय है ?

बी० यु०—अब सुन्न कमर तक पहुँच गयी है ।

मेरी दोनों टाँगें अचेतन हो गयी हैं !

पैर मुड़ गये, हाथ मुड़ गये ।

टाँगें मर गयीं ।

बाहें मर गयीं ।

यह मौत कितने वेगसे चलती है !

बी० यु०—मैं सोचती हूँ यदि मैं आज मर जाऊँ

तो आप मुझे रात ही रातमें तो नहीं जला दोगे ।

कल तक तो रुकोगे ?

किसीको आना चाहिए था ।

पता नहीं देर क्यों कर रहा है इतनी ।

हाय, कल मुझे तुम जला दोगे ?

मेरी गज़ गज़ लम्बी दोनोंकी दोनों वेणियाँ जल जायेंगी ?

सुगन्ध भरे-मेरे ये रेशमी बाल ।

अच्छती-अच्छूती क्वॉरी मेरी यह काया ।

फूलकी पत्तियों जैसे होंठ ।

हर समय हँसते मुसकराते दूध जैसे सफेद दाँत ।

लाजसे झुक-झुक जाते मेरे ये लाज लजेसे नयन ।

हाथकी अँगुलियाँ मूँगकी कोमल फलियों-सी ।

हाथ, जिन पर कोई कहता था ।

भाग्यकी रेखाएँ अंकित हैं, राज भोगेगी ।

ये हाथ जल जाएँगे ।

जलकर मिट्टी हो जाएँगे ।

भैया, बाहर जा कर देखो, कोई द्वार न बन्द कर दे ।

[भाई बाहर जाता है ।]

पिता जी, बत्तियाँ जलती रहें आजकी रात ।

पता नहीं किस द्वारसे कोई आ जाये ।

किसीको आना चाहिए था ।

मैं बुलाऊँ और कोई न आये ?

[एक क्षणके लिए मौन हो जाता है ।]

बी० यु०—मेरी माता जी !

मेरे मरनेके बाद कोई पहुँचे

तो उसे कहना तेरी बात जोहते-जोहते वह चल दी ।

माताजी, मेरी चुन्नियाँ रंगरेज़से मँगवा लेना ।

हाय, कैसे प्यारे रंग रँगें होंगे उसने !

उन चुन्नियोंका तुम क्या करोगी ?

किसीको मेरी कमीज़ें पूरी आयेंगी

तभी तो उनके साथकी चुन्नियाँ कोई ओढ़ेगी ।

मैं तो सबसे छोटी हूँ ।

छोटी लकड़ियोंको आग शायद पहले लगती है !

माँ मैंने डाकियेसे कहा था

उसकी बेटीके ब्याह पर मैं उसे एक जोड़ा दूँगी ।

मेरा धारीदार सूट उसे दे देना

जब मेरी चिड़ियाँ लेकर वह आये ।

मेरी चिड़ियाँ आयेंगी और मैं नहीं रहूँगी ।

कभी मैं प्रतीक्षा करती थी तो चिड़ियाँ नहीं आती थीं ।

मेरी चिड़ियोंसे डिब्बा भरा है ।

मुझे जलाते समय, मेरी चिड़ियोंको मेरे साथ रख देना ।

मैं वह उपन्यास पढ़ रही थी ।

अधूरा पड़ा ही रह जायेगा ।
 मैं उपन्यास पढ़ती थी
 तो पूरा पढ़े बिना मुझे कुछ सूझता ही न था ।
 इस साल अंगूरकी बेल फलेगी ।
 पिछले सालमें प्रतीक्षा करती रही, करती रही ।
 खट-मिठे, काले-काले, अंगूर कोई कहता था मेरी बेल पर लगेंगे ।
 अबके यदि गायने बल्लिया दी तो उसका नाम 'चमेली' रखना ।

[एक दम घबरा कर]

हैं, बाहर तालाबमें बत्तखें क्यों चिल्ला उठी हैं ?
 कोई आ रहा है ।
 हाँ, आ रहा है !
 ये उसीकी पदचाप है ।
 आ रहा है ।
 आ रहा है !!
 अब बरामदेमें पहुँच चुका है ।
 आ रहा है, ...आ रहा है...आ रहा है...।
 अब गैलरीमें आ गया है ।
 आ रहा है...आ रहा है ...आ रहा है...।

बी० यु०—[आह्लाद पूर्वक] आप आ गये ?

मैं न कहती थी ये ज़रूर आयेंगे ।
 मैं किसीको बुलाऊँ और वह आये न ।
 आगे आ जाइये ।
 इस कुर्सी पर बैठ जाइये, कबसे आपके लिए खाली पड़ी है ।

[एक नशेमें]

ये सब मेरे मुँहकी ओर निहार रहे थे ।

और मुझे आपकी प्रतीक्षा थी ।

मैं अकेली कैसे चली जाती ?

मैं क्वारी कैसे चली आती ?

मैं आपकी अमानत थी ।

अपनी अमानतको सँभाल लीजिए ।

अपना हाथ मेरे माथे पर रख दीजिये ।

यूँ ।

बस अब मैं शान्त हो गयी ।

जैसे कोई मंज़िल पर पहुँच जाता है ।

एक वूँद जिसके बिना लाखों अमृत प्यास नहीं बुझा सकते ।

एक परस जो मेरी आँधियारी डगरमें उजाला करता रहेगा ।

एक नज़र, जिसने मेरी समूची भूख मिटा डाली ।

ये स्वप्निल आँखें !

हाय, ऐसी आँखें उस लोकमें नहीं थीं ।

ये हाथ जिनका स्पर्श मुझे पुलकित कर रहा है ।

हाय, ऐसे हाथ उस लोकमें नहीं थे ।

ये होंठ जैसे इनमें लाख इकरार लिपे हों ।

हाय, ऐसे होंठ उस लोकमें नहीं थे ।

अब मैं शान्त हो गयी ।

मैंने ये आँखें देख लीं ।

मैंने ये हाथ छू लिये ।

इन हाँठोंने जैसे कितना कुल मेरे कानोंमें कह डाला हो ।

अब मैं शान्त हो गयी ।

सुन्न अब मेरी छातीकी ओर चल पड़ी है ।

मेरा गला रुक रहा है ।

मेरी आँखोंके सामने जैसे तारे घूम रहे हों ।

मेरे माथे पर अपना हाथ ऐसे ही रखे रहिए, मेरे अन्तिम श्वास तक ।

पिताजी मैं जा रही हूँ ।

माताजी, मैं जा रही हूँ ।

भैया, मैं जा रही हूँ ।

बहनो, मैं जा रही हूँ ।

मैं जा...

[युवती अन्तिम साँस लेती है । उसके श्वास छोड़ने पर सारे परिवारकी एक सिसको निकलता है । बीच-बीचमें कोई फूट-फूट कर रोने भी लगता है ।]



अल्ला मेघ दे



पात्र :

नवयुवक

बैरा

अखबारवाला

स्त्री

कुछ आवाज़े



[बम्बईके एक होटलका ६५ नम्बरका कमरा । पाँचवीं मंज़िल पर इस कमरेके साथ कई और कमरे हैं, जिनका बरामदा एक ही है ।

बम्बईमें आज सवेरेसे वर्षा हो रही है । वर्षा होती जा रही है, होती जा रही है । एक पल, एक क्षण मात्रके लिए भी नहीं रुकी और अब तीसरा पहर होनेको है ।

जब पर्दा उठता है, तो एक नवयुवक कमरेमें टहलता हुआ दिखाई देता है । उसकी पदचापसे उसके हृदयकी बेचैनीका आभास मिलता है । तभी बादल बहुत ज़ोरसे गरजते हैं और नवयुवक सिहर उठता है ।]

नवयुवक—ओह, यह पानी ! बरसे जा रहा है, बरसे जा रहा है । वर्षा न हुई मुसीबत हो गयी । मैंने सोचा था कि हवाई जहाज़से सफ़र करके मैं पूरा एक दिन बचा लूँगा । और यहाँ पहुँचकर सुबहसे कैद पड़ा हूँ । खिड़कियों बन्द, दरवाज़े बन्द, रोशनदान बन्द । बौल्लारके कारण बरामदेमें भी खड़ा तक नहीं हुआ जाता । हर चीज़ भीगी-भीगी, हर चीज़ गीली-गीली, जो आता है पानोसे तरबतर, निचुड़ता हुआ, चूता हुआ ।

बैरा—[दरवाज़ेको खटखटाकर भन्दर भाते हुए]

साहब, आपने घण्टी दी थी ?

नवयुवक—हाँ, मेरे लिए एस्प्रीनकी एक टिकिया और...

बैरा—बहुत अच्छा, साब ।

नवयुवक—बैरा, अब तक कितनी टिकियाँ तुम मुझे लाकर दे चुके हो ?

बैरा—पाँच साब ।

नवयुवक—बैरा, बम्बईमें कितनी टिकिया एस्प्रीनकी कोई खाये और तब भी न मरे ?

बैरा—[चकित-सा नवयुवककी ओर देखता है] साब...

नवयुवक—अच्छा बैरा, यह बताओ, बम्बईमें एस्प्रीनकी कितनी गोलियाँ कोई खाये तो थकान उतरती है, कितनी गोलियाँ कोई खाये तो सिर-दर्द हटता है और कितनी गोलियाँ खाकर ऐसे लगता है, जैसे कोई बम्बईमें न हो ?

बैरा—[मुसकराकर] साब...साब ।

नवयुवक—बैरा, तुम इस तरह मेरी ओर क्यों देख रहे हो ? इसलिए कि एक आने भर की एस्प्रीनकी टिकिया लेकर तुम्हें ग्यारहवीं बार इस पाँचवीं मंज़िलपर आना पड़ा है और हर बार लिफ्टमें ऊपर आने-जानेके लिए चार आनेकी बिजली खर्च हो जाती है ?

बैरा—नहीं साब ? [बैरा हँसने लगता है]

नवयुवक—बैरा, तुम इस तरह कैसे हँस सकते हो ? ऐसे मौसममें जब कि पानी बरसे जा रहा है, बरसे जा रहा है, किसी पागल औरत के आँसुओंकी तरह ।

बैरा—साब !

नवयुवक—यह वर्षा, अभी और कितनी देर रहेगी ?

बैरा—साब, रुक जाये तो अभी रुक जाये और अगर बरसती रहे तो

बरसती रहे, सारी शाम, सारी रात, कल सवेरे, कल दोपहर,
कल शाम, कल रात ।

नवयुवक—क्या मतलब ?

बैरा—और ऐसे ही चार दिन, पाँच दिन, सात दिन । बम्बईमें हफ्ते-हफ्ते
तक भड़की लगी रहती है ।

[हवाके तेज़ झोंकेसे रोशनदान खुल जाता है, और पानी
अन्दर आने लगता है]

नवयुवक—ओह, यह रोशनदान !

बैरा—मैं बन्द करता हूँ साब ।

[बैरा रोशनदान बन्द करता है]

नवयुवक—जब इस तरह निश्चिन्त होकर अविराम वर्षा होने लगती है तो
क्या बम्बईके लोग हाथपर हाथ धरकर बैठ जाते हैं ? दूधवाले
दूध नहीं लाते, बच्चे स्कूल नहीं जाते, दफ्तर बन्द रहते हैं ?

बैरा—यह बात तो नहीं साब ।

नवयुवक—[खिड़कीके शीशेमेंसे बाहर देखते हुए] सामने वाली सड़क
जैसे नहर बनी हुई है । कैसे कोई इस मौसममें बाहर जा सकता
है ? आखिर कोई थकता है, हारता है, साँस लेता है, यह वर्षा
तो जैसे सारे समुद्रको उलीच कर बहा देगी ।

बैरा—अच्छा साब, मैं एस्प्रीन ले आऊँ ।

[बैरा जानेके लिए द्वार खोलता है, हवाका एक झोंका मेज़
पर पड़े कागज़ोंको उड़ा कर फ़र्श पर बिखेर देता है]

नवयुवक—ओह, यह वर्षा ! मेज़के कागज़ फिर उड़ गये । मैं तो इन्हें
सँभालता-सँभालता थक गया हूँ । एक बार अपने-आप खिड़की
खुल गयी, एक बार अपने-आप रोशनदान खुला, और पाँच दस
बार दरवाज़ेके किवाड़ ज़रा-ज़रा खुले हैं, बैरेके आने-जानेके लिए,
और मेरे कपड़े ऐसे हो गये हैं जैसे कभी इन्हें इस्तिरी किया ही

न गया हो । हवाके आँचलसे जैसे पानी बँधा हो । हर साँसके साथ जैसे घूँटके घूँट अन्दर जाते हैं । दिल जैसे डूबा हुआ हो, दिमाग जैसे गोते खा रहा हो । अंग-अंग जैसे थका हुआ है, दूया हुआ है, चूर-चूर । मैं घर चिन्ही लिख चुका हूँ । उपन्यास खत्म हो चुका है । कमरेमें हर कुर्सी पर बैठ चुका हूँ । टहलते-टहलते थक गया हूँ और अन्न खड़ा हूँ । पता नहीं कब तक कोई इस तरह खड़ा रह सकता है ।

अखबारवाला [बाहरसे] ईवनिङ्ग न्यूज़ । ईवनिङ्ग न्यूज़ । साहब अखबार चाहिए ?

नवयुवक—कौन है ? अन्दर आ जाओ ।

अखबारवाला—[आते हुए, पानीसे तरबतर है] साहब, ईवनिङ्ग न्यूज़ ।

नवयुवक—क्यों, क्या खबर है ? कितने मकान गिर गये ? कितने लोग मरे ? कितने घायल हुए ? समुद्र कितना बढ़ गया है ? कितने घर बह गये ? बिजली कहाँ-कहाँ गिरी है ?

अखबारवाला—साहब, मैं शरणार्थी हूँ, पढ़ा-लिखा नहीं, आप अखबार ले लीजिए, पैसे मैं कल ले जाऊँगा ।

[लड़का दरवाज़ेके पास पड़ी कुर्सीपर समाचारपत्र रखकर चला जाता है ।]

नवयुवक—[समाचार-पत्र पढ़ते हुए] हैं ! इस अखबारमें तो कोई ज़िक्र ही नहीं । वही खबरें लड़ाई की, लड़ाईके डरकी, लड़ाईकी तैयारीकी, टेक्सोंकी, अनाजकी कमीकी, और इस कोनेमें मौसमका हाल लिखा है—“अनुमान है कि वर्षा कुछ दिन और रहेगी । बिजली चमकेगी, बादल गरजेंगे और छींटे दूर दूर तक पड़ेंगे ।”

अखबारवाला—[द्वार खटखटाकर] साहब !

नवयुवक—क्यों, अन्दर आ जाओ ।

अखबारवाला—जी, आपको कल सवेरे भी अखबार चाहिए ?

नवयुवक—नहीं ।

अखबारवाला—तो साहब फिर मुझे इस अखबारके पैसे दे दीजिए ।

नवयुवक—[हँसते हुए] लो भाई इस अखबारके पैसे भी ले, कल सवेरेके भी, कल शामके भी और परसों सवेरे और परसों शामके भी । यह वर्षा तो रुकती दिखाई नहीं देती । न यह वर्षा रुकेगी न मैं यहाँसे हिल सकूँगा ।

अखबारवाला—साब, यह बात है तो मैं पैसे फिर ले लूँगा ।

नवयुवक—नहीं भई, तुम अपने पैसे लो । कोई पता नहीं कि इस तूफान में, इस आँधी-पानीमें, होटलकी आकाशसे बातें करती यह छत बचती भी है या नहीं । मैं तुम्हारे पैसे मारकर मरना नहीं चाहता ।

अखबारवाला—[अवाक्-सा नवयुवकको देखते हुए] साहब !

[अखबारवाला लड़का नवयुवकके उद्वेगपूर्ण नेत्रोंको देखता हुआ कमरेसे बाहर चला जाता है ।]

नवयुवक—[हँसते हुए] चला गया । यह शरणार्थी कैसे हैं ! वर्षासे नहीं डरते, तूफानसे नहीं डरते, बाढ़से नहीं डरते, सूखेसे नहीं डरते, डरते हैं तो बस इंसान से । यह शरणार्थी कैसे हैं ! कोई दीवार इनपर गिर पड़े, ये परवाह नहीं करते, पर कोई आँख तरेरकर इनकी ओर देखे तो यह सहन नहीं कर सकते । यह शरणार्थी कैसे हैं ! [हँसता है]

अखबारवाला—[बाहर दूर कहीं] ईवनिंग न्यूज़ ! ईवनिंग न्यूज़ !

[इस प्रकार समाचार-पत्र बेचनेवालेकी आवाज़ आ रही होती है कि बादल जोरसे गरजते हैं जिनमें उसकी आवाज़ दब जाती है ।]

नवयुवक—बादल ऐसे गरज रहे हैं, जैसे आकाशमें घमासान युद्ध हो

रहा हो। बिजली ऐसे चमक रही है, जैसे कोई ज़हरीली नागिन बल खा रही हो। शराबसे मदमस्त हाथियोंकी तरह बादल बादलोंपर चढ़े जा रहे हैं, और वर्षा हुई जा रही है, बूँद-बूँद नहीं, फुहियों-फुहियाँ नहीं, मूसलाधार, जैसे आकाश फट गया हो।

बैरा—[द्वार खटखटाकर अन्दर आकर] साब एस्प्रीन।

[द्वार खुलनेपर बाहर तूफ़ानका जोर सुनायी देता है।]

नवयुवक—बैरा, जब भी तुम आते हो, बादल और जोरसे गरजने लगते हैं। पानी और जोरसे बरसने लगता है।

बैरा—[छतकी ओर देखकर] साब, लगता है आपका कमरा चूर रहा है।

नवयुवक—हैं !

बैरा—देखिए न, कालीनका सत्यानाश हो गया है।

नवयुवक—बाहर पानी इस तरह बरस रहा है कि अन्दरकी टप-टप मुझे सुनायी ही नहीं दी।

बैरा—साब, आपके बिस्तर पर भी बूँदें पड़ रही हैं।

नवयुवक—अरे, यह तो सारा बिस्तर गीला हो गया।

बैरा—हाँ साब।

नवयुवक—इस छतकी मरम्मतका अब क्या उपाय हो सकता है ?

बैरा—मैं बरतन लाकर रखता हूँ। छतकी मरम्मत तो बारिशके बाद ही हो सकेगी।

नवयुवक—और तब तक मेरे सिरपर पानी गिरता रहेगा ? कैसा शहर है यह !

बैरा—साब, कोई उपाय करता हूँ।

नवयुवक—इस होटलमें कोई और कमरा खाली है ?

बैरा—कहाँ साव, यहाँ तो कितने कितने दिन पहले ही कमरे रुक जाते हैं ।

नवयुवक—तो फिर क्या मुझे गीले बिस्तरपर सोना पड़ेगा ? मैं कुर्सीपर बैठा अखबार पढ़ रहा हूँगा और ऊपर मेरे सिरपर छत टपक रही होगी ।

बैरा—अच्छा साव, मैं बरतन ले आऊँ । [जाता है ।]

नवयुवक—मुझे घृणा है इस वर्षासे । कैसे बरसे जा रही है, बरसे जा रही है, जैसे कोई भिखारिन बाज़ारमें मिल जाय और पीछा न छोड़े । बरसे जा रही है, बरसे जा रही है, जैसे किसीके गालोंपर चम्बल हो जाये और आठों पहर रिसता रहे । बरसे जा रही है, बरसे जा रही है, जैसे दाँत निकाल रहे बच्चेकी राल टपकती है । बादल गरज रहे हैं, कड़क रहे हैं, जैसे कोई बलवान् किसी निर्बल पर कूद-कूद पड़ता है । जैसे अँधेरी रातमें कोई अन्धा कुत्ता अपने कल्पित बैरियों पर भोंकता रहता है, भोंकता रहता है । जैसे कोई धनपति मृत्युसे भयभीत, नौकर-चाकरों पर कड़कता रहता है, क्रुद्ध होता रहता है । बिजली कौंध-कौंध पड़ती है, जैसे किसी हत्यारेके होठों पर मुसकराहट खिल-खिल पड़े । जैसे नये शिकारको देखकर शिकारीकी आँखें चमक उठें । जैसे पीतल पर चढ़ा मुलम्मा सोने-सा दीखनेके लिए बार-बार दमकता है । मुझे घृणा है इस वर्षासे । घृणा है, घृणा है !

[इतनेमें तूफ़ानके एक और प्रबल झोंकेसे रोशनदान खुल जाता है और बौछार अन्दर आने लगती है । बादलोंकी गरज ऊँचा हो जाती है ।]

नवयुवक—रोशनदान फिर खुल गया है । खुला रहे । इस हवाके आगे इस वर्षाके आगे कुछ नहीं ठहर सकेगा [झोर-झोरसे हँसना शुरू कर देता है ।]

नवयुवक—मैं दूसरा रोशनदान भी खोले देता हूँ ।

[हँसता जा रहा है और दूसरा रोशनदान भी खोल देता है ।
अब बौछार और भी अधिक अन्दर आ रही है ।]

नवयुवक—अब खिड़कियाँ खोलता हूँ, चारोंकी चारों । बरस ले जितनी देर इसे बरसना है । गरज लें बादल, जितनी देर इन्हें गरजना है । बिजली भी चमक ले, अपना बल दिखा ले । कर ले मौसम, जो कुछ इसे करना है । बिगाड़ ले जितना इसे बिगाड़ना है ।

[नवयुवक हँसता जा रहा है और चारोंकी चारों खिड़कियाँ खोल देता है । रोशनदान खुले हैं, खिड़कियाँ खुली हैं । लगता है जैसे तूफ़ान उमड़-उमड़ कर कमरेके भीतर आ गया हो । इतनेमें कमरेका बरामदेवाला दरवाज़ा अपने आप खुल जाता है ।]

नवयुवक—दरवाज़ा भी खुल गया है । उधर खिड़कियाँ खुली हैं, ऊपर रोशनदान खुले हैं, इधर दरवाज़ा अपने आप खुल गया है ।

[नवयुवक अट्टहास कर उठता है । मानो पागल हो गया हो । कमरेमें वर्षाका पानी कालीनको, कपड़ोंको, फर्नीचरको खराब कर रहा है । हवासे कमरेके कागज़, किताबें अख़बार उड़ रहे हैं । नवयुवक हँसता जा रहा है, हँसता जा रहा है ।]

एक स्वर—[बरामदेमेंसे गुज़रते हुए] वर्षाके मज़े लिये जा रहे हैं !

नवयुवक—[हँसे जा रहा है ।]

एक बूढ़ी आवाज़—[बरामदेमेंसे गुज़रते हुए] वाह वा, जवानी है जवानी; जवानी बड़ी मस्तानी होती है ।

नवयुवक—[अभी तक हँसे जा रहा है]

स्त्री स्वर—[गुज़रते हुए] कैसे हँस रहा है ६५ नम्बर । अकेला ही हँसे जा रहा है ।

नवयुवक—[हँसते हुए खिड़कियोंके उड़ रहे पर्दोंको हटा रहा है ।]

बैरा—[बरतन लेकर आता है] साब, साब, सारे कमरेका सत्यानाश हो गया है । यह खिड़कियाँ और रोशनदान कैसे खुल गये ?

[बैरा बारो-बारी सबको बन्द करता है]

नवयुवक—[हँसी रोकते हुए] अगर वर्षा अन्दर ही आना चाहती है, तो तुम इसे क्यों रोकते हो बैरा ? मैं तो 'बेपनाह' हो गया था । जब कोई अपने आपको बचाता ही नहीं तो वार करनेवाला कहाँ तक अन्याय कर सकता है ?

बैरा—साब, यह आपने क्या किया है ? यह कपड़े तो अब कई दिन सूखेंगे ही नहीं ।

नवयुवक—यह वर्षा अन्दर आकर ही रहेगी, बैरा । मैंने दरवाज़ा बन्द किया तो यह खिड़कियोंकी राह अन्दर आयी । मैंने खिड़कियाँ बन्द कीं तो रोशनदान खुल गये । रोशनदान जब बन्द हुए तो छतने टपकना शुरू कर दिया । यह वर्षा अन्दर आकर ही रहेगी ।

बैरा—देखिए साब, मैं अभी सारा प्रबन्ध किये देता हूँ ।

[बैरा खिड़कियाँ और रोशनदान बन्द करके जहाँ-जहाँ छत टपक रही है, नीचे बरतन रख देता है]

नवयुवक—काहेको इतना कष्ट कर रहे हो ? मुझे लगता है यह वर्षा फिर अन्दर आ जायगी । [स्वगत] वर्षा आ जायगी और मुझे अपने साथ बहाकर ले जायगी !

बैरा—साब, आप बारिशसे बहुत घबराते हैं ।

नवयुवक—घबरानेकी तो बात है । सवेरेसे वर्षा हो रही है, बावलोंकी तरह । मुझे तो लगता है मैं पागल हो जाऊँगा ।

बैरा—साब, आपका सिर-दर्द अब कैसा है ?

नवयुवक—वैसेका वैसा है, बैरा । एक एस्प्रीन और ले आओ ।

बैरा—अच्छा साब । [बैरा जाता है]

नवयुवक—वर्षा हुए जा रही है, हुए जा रही है । एक पल, एक क्षण,

एक निमिष भरके लिए भी नहीं सकती । कोई बरस बरसकर थकता है, हारता है, ऊबता है, पर यह वर्षा तो जैसे कभी खत्म ही नहीं होगी । बादल ऐसे गरजते हैं, जैसे मुँह चिढ़ा रहे हों । बिजली जैसे आँखें निकाल-निकालकर डरा रही हो । यह बारिश...

स्त्री—[द्वार खटखटाकर] मैं अन्दर आ सकती हूँ ?

नवयुवक—कौन ?

स्त्री—[आते हुए] हैलो ! मैंने अभी यहाँसे गुज़रते हुए देखा, आप बारिशका मज़ा ले रहे थे । मैंने सोचा मैं भी आपका साथ दूँ ।

[स्त्री केवल वेडिंग कास्ट्यूम पहने हुए है, नवयुवक अवकाश-सा विस्फारित नेत्रोंसे स्त्रीके अर्धनग्न शरीरकी ओर देखता है ।]

स्त्री—मुझे बारिश बहुत अच्छी लगती है ।

[नवयुवक अभी तक अवकाश है और परेशान-सा है]

स्त्री—मेरा नाम मालती है । आपका नाम ?

नवयुवक—मेरा नाम, मेरा नाम...मेरा नाम प्रेम है ।

स्त्री—मैं आपके साथवाले कमरेमें रहती हूँ । आप यहाँ कब आये हैं ?

नवयुवक—मैं...मैं आज सवेरे ही आया हूँ ।

स्त्री—सवेरेसे ही तो वर्षा हो रही है ।

[सामने मेज़से सिगरेट उठाकर पीने लगती है ।]

स्त्री—आप सिगरेट नहीं पियेंगे ?

नवयुवक—नहीं शुक्रिया, मैंने सिगरेट पीना छोड़ दिया है ।

स्त्री—[हँसते हुए] सिगरेट आप पीते नहीं, पर कमरेमें रखे हुए हैं ।

किसी आने-जानेवालेके लिए होंगे ।

नवयुवक—[चुप है ।]

स्त्री—आपके मेहमान बहुत आते हैं ? मुझे तो मेहमान एक आँख नहीं

भाते । कोई होटलमें इसीलिए तो आता है कि जैसा चाहे रह सके । होटलमें भी अगर घर बन जाये तो फिर क्या मज़ा***

नवयुवक—[अवाक् सिगरेट पी रही, धुआँ उड़ा रही स्त्रीकी ओर एक-टक देखता रहता है]

स्त्री—मैं तीन महीनोंसे इस होटलमें ठहरी हुई हूँ । पहले मेरा कमरा नीचे का था । मैंने कमरा बदला, और सबसे ऊपरकी इस मंज़िलपर आ गयी । बम्बईमें कोई रहे तो सबसे ऊपरकी मंज़िलपर रहे । नीचे तो जैसे दम घुटकर रह जाता है ।

नवयुवक—[अभी तक मौन है]

स्त्री—आपका इरादा यहाँ कब तक ठहरनेका है ?

नवयुवक—मैं तो एक आवश्यक कामसे आया था, दो-चार दिनोंके लिए ।

स्त्री—मैं भी यहाँ केवल तीन दिनोंके लिए आयी थी । अब तीन महीने होनेको हैं । बम्बई शहरका जादू बड़ा प्रबल है । आप किस शहर से आये हैं ?

नवयुवक—जालन्धरसे ।

स्त्री—मैं लुधियानेसे आयी हूँ । हम तो पड़ोसी ठहरे । वहाँ भी पड़ोसी थे—दो शहरोंका पड़ोस । यहाँ भी पड़ोसी हैं—दो कमरोंका पड़ोस ।

नवयुवक—[चुप है]

स्त्री—[बैठते हुए] आप बैठते क्यों नहीं ? औरत जहाँ भी हो, उसे घरवालीका पार्ट अदा करना पड़ता है ।

नवयुवक—[पासके सोफ़ेपर बैठते हुए] धन्यवाद !

स्त्री—बम्बईमें आकर लुधियाना मुझे एक गाँव-सा लगता है । बम्बईकी हवाका स्वाद ही कुछ और है । समुद्रके किनारे शामको सैर, कई जगह बालूमें टखने टखने तक पाँव घँस जाते हैं । [नव-

युवकके मुखकी ओर देखते हुए] आप इतने चुप-चुप क्यों हैं ?
बम्बईमें लोग बोलते बहुत हैं; मुझे भी शायद यही बीमारी हो
गयी है । [हँसती है]

नवयुवक—वर्षा होती जा रही है, होती जा रही है ।

स्त्री—बम्बईमें तो कितने कितने दिन वर्षा होती रहती है, होती रहती है,
जैसे कोई दीवाना हो गया हो ।

नवयुवक—यह भी क्या बेहूदगी हुई ।

स्त्री—आपको वर्षा अच्छी नहीं लगती ?

नवयुवक—मुझे घृणा है वर्षा से ।

स्त्री—अच्छा तो यह बात है !

नवयुवक—यह भी कोई बात हुई कि पानी पागलोंकी तरह बरसे जा रहा
है, बरसे जा रहा है । बादल गरज-गरज कर थकते ही नहीं ।
त्रिजली चमक-चमक कर हारती नहीं । सवेरेसे अंधेरा-अंधेरा-सा
छाया हुआ है । न कुछ खानेका मज़ा; न कुछ पहननेका मज़ा ।

स्त्री—क्यों, वर्षाके कपड़े और होते हैं । मेरी ओर देखो, मैं तो वर्षामें
बेदिंग कास्ट्यूम पहन लेती हूँ ।

नवयुवक—बाहर बादल कैसे गरज रहे हैं ! मेरा तो जी दहल-दहल
जाता है ।

स्त्री—कोई वर्षासे भी डरता है ? मेरे बाप-दादा ज़मींदार थे । हाथ जोड़-
जोड़ कर, माथा रगड़-रगड़ कर वे ईश्वरसे वर्षा माँगते थे ।
और जब वर्षा होती थी, मेरी माँ हमें पूड़े तल-तल कर खिलाती
थी । पीपल पर भूले डाल-डालकर हम भूला करती थीं ।
नदियोंके नये पानीमें नहातीं, कूद-कूद कर, हँस-हँस कर, छोटें
उड़ा-उड़ा कर, खेल-खेल कर, न थकती थीं, न हमारा जी
भरता था ।

नवयुवक—देखा आपने कैसे विजली चमकी ? जैसे खिड़कियोंके शीशोंको छू कर गयी हो ।

स्त्री—मेरी माँ बताती है कि एक बार हमारी ओर वर्षा नहीं हुई । गाँवके तालाब सूख गये । कुएँ सूख गये । नदियोंके तले दिखायी देने लग गये । फसल नष्ट हो गयी । तीन-तीन कोस लोग पीनेके लिए पानी लेने जाते । ढोर डंगर प्यासे तड़पने लगे, भूखे मरने लगे । लोग घरबार छोड़ कर पानीकी तलाशमें निकल पड़े । कई चलते-चलते राहमें ही रह गये, और जो शहर पहुँचे उन्हें पानी तो शायद मिल गया, उन्हें अनाज भी मिल गया, पर उनकी जवान बेटियोंकी आँखोंकी लाज खो गयी ।

नवयुवक—हाँ आँखोंकी लाज बड़ी चीज़ होती है ।

स्त्री—और हमारे गाँवमें, मेरी माँ बताती है इसके बाद कई ऐसी घटनाएँ हुईं, लड़कियाँ अपने मनपसन्द लड़कोंके साथ निकल गयीं ।

नवयुवक—वर्षा कैसे हो रही है, हुई जा रही है, हुई जा रही है । आपका मन नहीं ऊबता ?

स्त्री—वर्षासे भी कोई ऊबता है ? इस वर्षाकी एक-एक बूँद जैसे सोनेकी है । आज-कलकी वर्षा फसलोंके लिए बड़ी अच्छी है ।

नवयुवक—अब ख़त्म भी तो हो, सुबहसे हो रही है ।

स्त्री—धरतीकी प्यास इतनी जल्दी नहीं बुझती । धरती एक माँकी तरह होती है; जो खाती है, जो पीती है, बच्चोंको दूधके रूपमें प्रदान कर देती है । वर्षाका यह पानी भरने बन-बनकर उमड़ेगा । नदियाँ बन-बन बहेगा, तालाबों और पोखरोमें फैल-फैल जायगा । वर्षाका यह पानी अनाजके दानोंमें जीवनकी रमक बनकर रूपायित होगा । फूलोंमें रंग बनकर महकेगा । वनस्पतिमें हरियाली बनकर बहार लायेगा । शहदकी मिठास, वर्षाके पानीकी ही एक शक्ति है । गुलाबकी पंखड़ीकी कोमलता, वर्षाके पानीका ही

एक रूप है। खेतोंकी हर अल्हड़ जवानीमें वर्षाके पानीकी ही मस्ती है।

[बादल गरजते हैं]

नवयुवक—मैं सोचता हूँ, ज़रूर बिजली हमारे पास-पड़ोसमें कहीं गिरी है।

स्त्री—[नवयुवककी घबराहटकी ओर ध्यान न देते हुए] आपने वह गीत सुना है। अल्ला मेघ दे। जब वर्षा नहीं होती तो लोग यह गीत गाते हैं।

[गीतका एक बोल गुनगुनाती है।]

अल्ला मेघ दे।

भड़ियाँ दे, रिमझिम लादे बरपा, अल्ला मेघ दे।

नवयुवक—बड़ा अच्छा गीत है।

स्त्री—यह आपने सारी खिड़कियाँ क्यों बन्द कर रखी हैं ? खिड़कियाँ बन्द, रोशनदान बन्द, दरवाज़े बन्द।

नवयुवक—अन्दर बौछार आती है।

स्त्री—तो फिर क्या हुआ ? यह खिड़की खोलकर देखिए, बौछार अन्दर नहीं आयेगी। [उठकर एक खिड़की खोलती है, और खिड़कीमें हाँ खड़ी हो जाता है।]

नवयुवक—कैसी ठंढी हवा आ रही है !

स्त्री—अगर बाकी चीज़ें बन्द हों और यह खिड़की खोली जाय तो वर्षा विलकुल अन्दर नहीं आती, मैंने तो आजमा कर देखा है।

नवयुवक—और इस खिड़कीसे समुद्र भी तो दिखायी देता है। [उठकर खिड़कीकी ओर जाता है।]

स्त्री—मेरे कमरेकी यह खिड़की हमेशा खुली रहती है।

नवयुवक—इतनी वर्षा हुई है, समुद्र वैसेका वैसा है। ज़रा भी इसका रंग नहीं बदला।

स्त्री—जैसे मैं जबसे इस कमरेमें आयी हूँ, सिगरेटपर सिगरेट फूँके जा रही हूँ पर आप पर ज़रा भी असर नहीं हुआ ।

नवयुवक—नहीं, यह बात तो नहीं, लाइए मैं भी सिगरेट...

[नवयुवक सिगरेट सुलगाता है]

स्त्री—[मुसकराकर] आपने कितनी देरसे सिगरेट छोड़े हुए थे ?

नवयुवक—कोई पाँच साल हो गये हैं ।

स्त्री—आपने सिगरेट पीने क्यों बन्द कर दिये ?

नवयुवक—मुझे सिगरेट पीना कोई बुरा तो नहीं लगता ।

स्त्री—अक्रेली खिड़कीमें खड़ी मैं कितनी कितनी देर सिगरेट पीती रहती हूँ ।

नवयुवक—वर्षा कैसे हुए जा रही है ! मुझे वर्षाका इस तरह लगातार होते रहना बेहूदा लगता है ।

[दोनों कुछ देर तक चुपचाप सिगरेट पीते हुए बाहर वर्षाको देखते रहते हैं । फिर स्त्री गीतका एक और बोल गाती है...]

स्त्री—† अल्ला मेघ दे ।

झड़ियाँ दे रिमझिम ला दे बरखा, अल्ला मेघ दे ।

पाणी बाझों मेघे राजा, धरती माँ तरिहाई,

सहक रही है, तड़प रही है, पई कूके साडी जाई,

अल्ला मेघ दे...

नवयुवक—आप कितना प्यारा गाती हैं !

स्त्री—हमने एक नाटक खेला था, जिसमें यह गीत लोग गाते हैं ।

नवयुवक—तो फिर क्या वर्षा हो जाती है ?

† अर्थ—अल्ला हमें मेघ दो । झड़ियाँ दो, रिमझिम वर्षा दो । अल्ला हमें मेघ दो । हे मेघराज, बिन पानोके धरती माता प्यासी है, सिसक रही है, तड़प रही है, कूकू कूकर पुकार रही है, हमारी जननी । अल्ला हमें मेघ दो ।

स्त्री—नहीं, वर्षा तब भी नहीं होती ।

नवयुवक—परमात्मा कोई सख्त पत्थर दिल परमात्मा है, जो ऐसी विनती सुनकर भी नहीं पसीजता ।

स्त्री—रिमझिम-रिमझिम वर्षा हो रही है ।

नवयुवक—आपको वर्षाका कोई और गीत भी आता है ?

स्त्री—वर्षाका इस तरह बरसना अपने आपमें एक गीत है । कैसे एक स्वर एक लय, एक तालमें बरसे जा रही है, बरसे जा रही है ! पानीका इस तरह बरसते जाना, बरसते जाना, मुझ पर जैसे जादू-सा कर देता है । बादल गरजते हैं, बिजली चमकती है, पानी बरसता है, मैं आँखें मूँदे कितनी कितनी देर आँधी पड़ी रहती हूँ । वर्षाकी पहली बूँद जब तप रही धरती पर पड़ती है और उसमेंसे जो सुगन्ध निकलती है, उस सुगन्धका कभी आपने रस लिया है ? वर्षाकी चौछारोंसे नहाये धोये वृक्ष जैसे स्वच्छ निर्लिप्त साधु समाधि लगाये बैठे हों । बादल आते हैं, एक एक, दो दो, चार चार, दस दस, और फिर झुण्डके झुण्ड, हंसीकी टोलियोंकी टोलियाँ उमड़-उमड़ कर, मँडरा-मँडरा कर, धिर-धिर कर, उतावलेसे, एक दूसरेका धकेलते हुए, लताड़ते हुए, मसलते हुए, उछलते हुए, लाँघते हुए, पछाड़ते हुए, मस्त, अडोल, भरे-भरे, खिल-खिल हँसते, कहीं गरज रहे, कहीं पुकार रहे, कहीं दहाड़ रहे । सफ़ेद, सुरमई, नीले, ऊदे, काले । कहीं सोये-सोये, कहीं तैरते-से, कहीं छलक-छलक पड़ते, ललक-ललक पड़ते । कहीं जैसे चू रहे हों, बरसते हुए, घुमड़ते हुए आते । खाली-खाली फूलसे हल्के, कनातोंकी तरह छा रहे, दीवारोंकी तरह उठे हुए, प्रकाशके एक छींटेकी तरह हवामें रम रहे । बादल जो सन्देश लाते हैं प्रीतिके । बादल जो तपते मनोको ठंडक पहुँचाते हैं । बादल जिनकी परछाइयोंके तले,

बिछुड़े हुए मिलते हैं । भूली बिसरी यादें ताज़ा हो जाती हैं । बादल अठखेलियाँ करते, आँखमिचौनी खेलते, गालोंसे आ-आ लगते, बालोंमें घुस-घुस बैठते । कभी घनघोर काले बादलों में से चाँदका उभर आना, कभी गहरी छाया घटामेंसे सूरजका सिर निकालना, और फिर एक-एक बूँट बनकर बरसना । कहीं बूँदोंका हवामें लटक जाना, मोतियोंकी तरह पिरोये-से रहना । चमक-चमक उठना, दमक-दमक उठना । कहीं रिम-भिम बरसना । बरसते जाना, बरसते जाना । फूलकी कोमल पत्तियोंसे भी कोमल स्पर्शकी तरह धरतीपर आना जैसे किसीकी भोलीमें खुशियाँ बरस रही हों । कहीं एकदम बरस पड़ना । कहीं एकदम बरसना और रुक जाना । कहीं धूपका निकले रहना और पानीका बरसे जाना, बरसे जाना, जैसे किसीके हँस-हँसकर आँसू निकल आयें । कहीं तीव्र वेगसे बरसना । कहीं आँधी और तूफ़ानसे होड़ लगा बैठना । कहीं समुद्रकी लहरोंसे उलझ जाना । कहीं बरसना, रुकना और फिर बरस पड़ना । कहीं मुसाफ़िरको मंज़िलपर पहुँचने देना । कहीं बीचमें ही उसे दबोच लेना । कहीं बरसे जाना, बरसे जाना, न थकना, न ठहरना, न साँस लेना—जवान अरमानोंकी तरह, भरपूर चाहोंकी तरह, अथाह प्रेमकी तरह ।

नवयुवक—दिन-रात, दिन-रात, दिन-रात बरसे जाना बरसे जाना ?

स्त्री—जैसे सुबहसे बरस रहा है, एक नशेमें, उल्लासमें, एक उन्मादमें ।

[स्त्री अथमुँदी आँखोंसे मस्त-मस्त-सा हुई नवयुवककी ओर देखती है]

नवयुवक—एक आवेगमें, हिलोरमें ।

स्त्री—[नशेमें] मैं तो चाहती हूँ, बरसता जाये, बरसता जाये, बरसता जाये ।

[षणमात्रके लिए स्त्री मस्तीमें जैसे खो-सी जाती है । फिर गाने लगती है । इस बार वह पूरा गीत गाती है]

अल्ला मेघ दे !

झड़ियाँ दे, रिमझिम ला दे, बरखा, अल्ला मेघ दे ।

पाणी बाभों मेघे राजा धरती माँ तरहाई

सहक रही है तड़प रही पई कूके साडी जाई ।

अल्ला मेघ दे !

पाणी बाभों मेघे राजा डंगर भूखे मरदे ।

बिलख-बिलखके बेज़बान मुँह उताँवाल ने करदे ।

अल्ला मेघ दे !

पाणी बाभों मेघे राजा पंछी पैये कुरलावण ।

मोर पर्पाहे यादत्तरी बिच अक्खों सहू वहावण

अल्ला मेघे दे !

पाणी दे-दे-सोमें दे-दे, नदियाँ दे-दे नाले,

दे-दे सानूखूहे ठंडे जीवण तेरे हिमाले ।

अल्ला मेघ दे !

छम-छम बरसो मेघे राजा झर-झर वहँदे जाओ ।

उमड-उमडके, गरज गरजके घिर-घिरके फिर जाओ ।

अल्ला मेघ दे !

[जब गाना खत्म होता है तो कुछ देरके लिए दोनों चुप रहते हैं]

नवयुवक—कैसे फिर घनघोर घटा छा रही है !

स्त्री—घिर-घिरकर बादल आ रहे हैं !

नवयुवक—काले-काले !

स्त्री—काले बालोंकी तरह, काली आँखोंकी तरह ।

नवयुवक—काली रातकी तरह ।

स्त्री—जब उत्सुक कलाइयाँ भनभनना उठती हैं ।

नवयुवक—जब मोर नाचते हैं, गाते हैं ।

स्त्री—जब भूले पड़ते हैं, गिद्दा खेला जाता है । सिपाही घर लौटते हैं ।

नवयुवक—हमारी तरफ़ इन दिनों पपीहे गाते हैं, कोयलें कूकती हैं ।

स्त्री—हमारी तरफ़ गली-गलीमें बच्चे खेलते हैं; परनालोंके नीचे नहाते, गढ़ामें एक दूसरेको डुबकियाँ देते, हँस-हँस खेल-खेल, थकते नहीं, हारते नहीं ।

नवयुवक—वर्षा कैसे हुए जा रही है, हुए जा रही है !

स्त्री—[अपनी बाँह खिड़कीसे बाहर निकालते हुए] कैसे ठंडी-ठंडी बूँदें मेरी बाँह पर पड़ रही हैं ! आप भी अपना बाज़ू मेरी तरह बाहर निकाल कर देखिए ।

नवयुवक—[बाँह बाहर निकालते हुए] हाँ बूँदें बड़ी ठंडी हैं ।

स्त्री—[बाँह बाहर रखे हुए] कितना मज़ा आ रहा है !

नवयुवक—[बाँह वैसे की वैसे रखे हुए] हाँ, बड़ा अच्छा लगता है ऐसे बाँह बाहर बारिशमें रखना ।

स्त्री—मैं सोचती हूँ क्यों न बाहर वर्षामें घूमने चलें ? सड़क पर चलना, जैसे कोई फ़व्वारेके नीचे नहा रही हो ।

नवयुवक—[चकित सा उसकी ओर देखता है]

स्त्री—सड़क पर कहीं टखने-टखने तक पानी, कहीं घुटने-घुटने तक पानी ।

नवयुवक—[मुसकराकर] क्या मतलब ?

स्त्री—कहीं कोई मोटर हमारे पाससे गुज़रती छींटोसे हमें नहला जायगी । कहीं कोई टूटा हुआ परनाला हमारे सिर पर आकर पड़ेगा । समुद्र

के किनारे रेत पर बैठे हम पानीके अन्दर भी होंगे पानीके बाहर भी होंगे ।

नवयुवक—[खुश होकर] सच !

स्त्री—बड़ा मज़ा आयेगा ।

नवयुवक—सच !

स्त्री—मैं तो कभी वर्षामें घर नहीं रहती ।

नवयुवक—अच्छा तो फिर मैं जूते पहन लूँ ।

[बाहर बहुत जोरसे बादल गरजते हैं । इतनेमें दरवाज़ा खट-खटाया जाता है]

स्त्री—कौन ?

बैरा—[आते हुए] : साव, मैं एस्प्रीन लाया हूँ । होटलमें खत्म होगयी थी बाज़ारसे मंगवाई है ।

नवयुवक—बैरा ! अब एस्प्रीन नहीं चाहिए !

[और जोरसे बादल गरजते हैं । नवयुवक जूता पहन रहा होता है कि परदा गिरता है]



अनारके दो पत्ते

[रेडियो नाटक]



पात्र :

रूप

चन्द्रा

सुमित्रा

मैना

एक आवाज़

टेलीफोनकी आवाज़

[मध्यम श्रेणीके एक घरका गोल कमरा । समय शामकी चाय का । गोल कमरेमें एक देवर-भाभी बैठे हैं । भाभी, चन्द्रा, नये ज़मानेकी एक पढ़ी-लिखी नारी है । देवर, रूप, आज ही विलायतसे तीन साल पढ़नेके बाद लौटा है ।

भाभी और देवर सवेरेसे बातें कर रहे हैं—विलायतकी बातें, अपने देशकी बातें, अपने घरकी बातें । अभी तक उनकी बातें खत्म नहीं हुई ।]

रूप—[उठते हुए] अच्छा भाभी ! चाय तुम्हारी तो अभी तक आई नहीं और मुझे देर हो रही है ।

चन्द्रा—अरे, बैठो तो, चाय अभी आ जाती है [पुकारते हुए] मैना !

रूप—भाभी ! सुनो, यह मैना तुम्हारी कितनी बड़ी हो गई है ! गुड़ियोंसे खेला करती थी जब मैं विलायत गया ।

चन्द्रा—लड़कियाँ बेलकी तरह बढ़ती हैं ।

रूप—सवेरे आँगनमें बच्चोंके साथ खेल रही थी, मैं समझा तुम्हारी कोई सहेली है । हाथ जोड़कर, सिर झुकाकर मैंने नमस्ते की, वह लाजसे जैसे दोहरी हो गई ।

चन्द्रा—लड़की अच्छी है ।

रूप—सिर्फ अच्छी ?

चन्द्रा—तुम तीन साल विलायत रहकर भी...

रूप—विलायतमें भाभी, ऐसी लड़कियाँ कहाँ ? आँखोंकी लाजका जो सौन्दर्य होता है, पश्चिममें वह मुझे बहुत कम दिखाई दिया ।

चन्द्रा—मुझे तो जैसे-जैसे यह लड़की बढ़ रही है, चिन्ता ही खाये जा रही है ।

रूप—घरका काम करनेके लिए ऐसी लड़की किसी कीमतपर भी मँहगी नहीं ।

चन्द्रा—वह तो ठीक है, पर...

रूप—ऐसी लड़की घरकी शोभा होती है । घरका शृङ्गार होती है । जहाँ बैठती है उस जगहसे सुगन्ध आने लगती है । जहाँ खड़ी होती है, वह जगह अच्छी-अच्छी सी लगने लगती है ।

चन्द्रा—वह तो ठीक है, पर इसकी माँके बारेमें लोग पता नहीं क्या क्या कहानियाँ उड़ाते रहते हैं ।

रूप—कोई फूलको इसलिए सुन्दर न कहे, क्योंकि वह कीचड़से उपजा है । कोई मोतीको इसलिए हाथ न लगाये, क्योंकि वह घूरे परसे मिला है ।

चन्द्रा—वह तो मैं भी मानती हूँ, पर...

रूप—कोई इसकी आँखोंको देखे, कोई इसके बालोंको देखे, इसका अंग-अंग कोमल, अछूता, हाथ लगानेसे जैसे मैला होता है ।

चन्द्रा—सुन्दरता गरीबीमें, अभावमें और भी निखरती है ।

रूप—अभी मेरे जूते साफ़ कर रही थी । कितनी देर तक चिकके पीछे खड़ा मैं इसकी चूड़ियोंकी भंकार सुनता रहा । भन...भन... जैसे कोई अप्सरा आकाशसे उतर रही हो । एक मधुर संगीत...

चन्द्रा—तू तो कविता करने लगा । वैसे लड़की गाती भी है और बहुत अच्छा गाती है ।

रूप—सच !

चन्द्रा—काम करते-करते गाती रहती है । [कान लगाकर सुनते हुए]
लगता है, अब भी कुछ गुनगुना रही है ।

[भाभी देवर दोनों कान लगाकर सुनते हैं । कुछ देर गुनगुनाने
के बाद बाहर रसोईसे गानेकी आवाज़ आने लगती है]

मैना—[बाहरसे]

दो पत्तर अनारां दे ।

सादी गली आ बैठे कलबूतर यारां दे ।

चन्द्रा—कितना प्यारा गाती है !

रूप—माहिyeकी यह बोल मुझे बहुत पसन्द हैं । कभी मैं भी ऐसे ही गाया
करता था ।

चन्द्रा—मुझे याद है, जिस दिन मेरी डोली आई थी, उस रात आँगनमें
बैठकर तुमने माहिya गाया था ।

रूप—और उसके अगले दिन मैं विलायत चला गया था ।

चन्द्रा—तुम भी तो बहुत अच्छा गाते थे । आज तुम बाहर घूम आओ,
तुम्हारा गाना सुना जायेगा ।

रूप—कहाँ भाभी ? अब तो गीत जैसे मर गए हैं मेरे सीनेमें । कोई समय
था जब गीत फूट-फूट निकलते थे मेरे रोम-रोम से । उठते-बैठते
मैं गुनगुनाता रहता था ।

चन्द्रा—[पुकारते हुए] मैना, क्या चाय नहीं लायेगी आज ?

रूप—अभीतक गुनगुना रही है ।

चन्द्रा—इसकी माँ अपने समयको मानी हुई गानेवाली थी ।

रूप—सच !

चन्द्रा—चाय लिये आ रही है ।

रूप—कैसे चलती है !

चन्द्रा—तुम्हे पता भी है, पहले दिल्ली और यू० पी० वाले अपनी बहू-

बेटियोंको इन लोगोंके घर उठने-बैठने, बात करनेका सलीका सीखनेके लिए भेजा करते थे ।

रूप—[अपलक बाहर देखते हुए] कैसे आ रही है चायके बरतन उठाये हुए ! सिमटती-सी, लजाती-सी ।

चन्द्रा—चाय ला रही है ।

रूप—[गुनगुनाते हुए]

दो पत्तर अनारां दे ।

साढी गली आ बैठे कलबूतर यारां दे !

[इतनेमें मैना प्रवेश करती है । महकती कली-सी मैना कमरेमें रूपको गुनगुनाता देखकर जैसे एकदम ठिठककर मंत्रमुग्ध-सी हो जाती है । चायके बरतनोंकी ट्रे उसके हाथोंसे फिसलकर नीचे जा गिरती है । चायके बरतनोंको इस प्रकार टूटते देखकर कमरेमें बैठे चन्द्रा और रूप चौंक पड़ते हैं, पर मैना एक पलकके लिए वैसी-की-वैसी नशेमें ओंखें बन्द किये खड़ी रहती है । फिर बिजलीकी चमककी तरह उसका चेहरा उल्लसित हो उठता है, और फिर दूसरे ही क्षण टूटे हुए बरतनोंको देखकर उसकी घबराहट एक चीखके रूपमें व्यक्त होती है और वह भागती हुई बाहर चली जाती है ।]

[दृश्य परिवर्तन]

[चायके बरतन टूटनेके शोरके साथ वाद्य-यन्त्रोंकी गूँजका सम्मिश्रण हो जाता है और जैसे ही मैना चीख मारकर बाहर जाती है, यह वाद्य-संगीत और ऊँचा हो जाता है । और फिर, इस संगीतमें से ढोलकके बजनेका शब्द उभरता है, इसके साथ एक ब्याहवाले घरकी चहल-पहल । फिर इस शोरमें से रूपके माहिया गानेकी आवाज़ सुनाई देती है :

“दो पत्तर अनारों दें

साढ़ी गली आ बैठे कलबूतर यारां दे ।”

समय रातका है । यह गाना घरवाले सुन रहे हैं, अड़ोस-पड़ोस-वाले सुन रहे हैं, अतिथि सुन रहे हैं, नौकर-चाकर सुन रहे हैं । एक कोनेमें जहाँ नौकर खड़े हैं]

सुमित्रा—मैना यह तू छल्लेको कैसे प्यालेपर मार रही है ! तुझे डर नहीं लगता अगर प्याला टूट जाये तो ?

मैना—[सँभलकर] हाँ !

सुमित्रा—अगर ऐसे ही तुझे साहबकी ढोलकके साथ ताल देना है तो आगे चली जा ।

मैना—सुमित्रा, तुझे प्यालेके टूटनेका डर है, मेरे छल्लेके टेढ़ा हो जानेका नहीं ।

सुमित्रा—तभी तो मैं कहती हूँ आगे चली जा, और भी तो कई ताल दे रही हैं ।

मैना—हाय, हमारा साहब कितना प्यारा गाता है !

सुमित्रा—मुना है, कल विलायत जा रहा है ।

मैना—सुमित्रा बहन, विलायत भला किधर हुई ?

सुमित्रा—दूर, बहुत दूर ।

मैना—जहाँ कोई नहीं पहुँच सकता, चाहे कोई सारी उम्र चलता रहे ।

सुमित्रा—नहीं, कोई चल पड़े तो कौन-सी मंजिल है जो तै नहीं हो जाती ?

मैना—सच, सुमित्रा ?

[अकस्मात् मैना फिर छल्ला प्यालेपर मारने लगती है ।]

सुमित्रा—फिर वही बात । री, तू क्यों प्यालेका तोड़नेपर तुली है ?

मैना—प्याला क्या टूटेगा !

सुमित्रा—अगर किसीने यूँ तुझे ताल देते हुए देखा, तो उठाकर तुझे आगे ले जायेगा ।

मैना—सच सुमित्रा ?

[अभी तक ताल दिये जा रही है]

सुमित्रा—तूने तो ऐसे कहा है, जैसे काश, तुझे कोई उठाकर ले जाये !

मैना—तुझे कौन उठायेगा ?

सुमित्रा—तुझपर तो ऊपरसे कोई बाज भपटेगा और उड़ाकर ले जायेगा ।

[हँस पड़ती है]

मैना—यह कोई हँसनेकी बात नहीं, सुमित्रा ! तुझे तो रोना आ रहा है ।

तेरा मतलब है कोई बारात नहीं आयेगी, कोई ढोल नहीं बजेंगे, कोई मेहदी नहीं रचेगी, कोई डोली नहीं निकलेगी और मैं सँभाल सँभाल रखे अपने आपको किसीके हवाले कर दूँगी—जैसे मेरी माँने किया था, जैसे शायद मेरी माँकी माँने किया था । हमारे भाग्यमें क्या ब्याह नहीं लिखा ?

सुमित्रा—बारात वहाँ चढ़कर जाती है, जहाँ बारातका स्वागत करनेवाला कोई हो ।

मैना—अगर मेरा जन्म किसी नालीमें हुआ है तो इसमें मेरा क्या दोष ? एक ही चादलसे बूँदें टपकती हैं, कोई पपीहेकी प्यास बुझाती है, और कोई पत्थरसे टकराकर छितरा जाती है ।

सुमित्रा—आज तू कैसी बातें कर रही है ?

मैना—[नर्म होकर] हाँ, तुझे पता नहीं कभी-कभी क्या हो जाता है ? कल अन्दर कमरेको भाड़-पोंछ रही थी । दूध-सो सफ़ेद चादरको देखकर मेरा जी चाहा कि मैं पलंग पर सो जाऊँ, और कितनी देर अलसाई-सी मैं नीचे फर्श पर बैठी रही ।

[अभी तक ताल दे रही है]

सुमित्रा—अरी, बातों बातोंमें तू प्याला तोड़ देगी ।

मैना—तो क्या हुआ ? आज हमारे साहबकी भाभी आई है । आज मैंने

एक प्याला तोड़ दिया तो क्या ? डोली परसे तो लोग कितना कुछ वार कर फेंक देते हैं ।

आवाज़—[दूर से] मैना !

सुमित्रा—जा तुझे बुलाया जा रहा है ।

मैना—अरे, हाँ, मैं तो बरतन साफ़ कर रही थी ।

आवाज़—[दूरसे] अरी मैना !

मैना—आई ।

[चली जाती है । मैनाके जाने पर ढोलकके साथ गानेका स्वर ऊँचा हो जाता है । इसमेंसे फिर सुमित्राकी आवाज़ उभरती है]

सुमित्रा—[स्वगत] यह लड़की ! इस लड़कीकी माँके बारेमें लोग कितनी-कितनी बातें करते हैं ! यह लड़की जैसे आँखसे दुलका हुआ कोई आँसू हो । यह लड़की ! इसके मोतीके दानों जैसे दाँत ! यह लड़की ! यह तो हमारे बीच नहीं रहेगी ।

[ढोलकके साथ गानेका स्वर फिर ऊँचा हो जाता है । धीरे-धीरे यह आवाज़ें मिट जाती हैं]

[दृश्य परिवर्तन]

[कई महीने बाद । मैना बैठी बरतन साफ़ कर रही है साथ-साथ गुनगुना भी रही है—“दो पत्तर अनारां दे...।” साँझका समय है । परछाइयाँ ढल रही हैं । रसोईमें और कोई नहीं । बरतनोंको साफ़ करते हुए मैना गुनगुना रही है । इसी तरह कितना समय बीत जाता है ! बरतनोंके साफ़ करनेकी आवाज़ आती रहती है]

सुमित्रा—[आते हुए] अरी, तू कब तक इस तरह बैठी बरतन साफ़ करती रहेगी ?

मैना—हाँ, बहन आज कुछ देर हो ही गई ।

सुमित्रा—रात हो रही है, और तूने अभी तक चायके बरतन साफ़ नहीं किये ।

मैना—मैं सोचती हूँ, सुमित्रा, मैं और कब तक ये चायके बरतन साफ़ करती रहूँगी ?

सुमित्रा—इस जीवनमें उन्नतिकी सीढ़ियाँ बहुत दूर-दूर होती हैं। अब तू बरतन माँझती है, बच्चेको खिलाती है। फिर तू बच्चेको खिलायेगी, भाड़-पोछ करेगी। फिर तू भाड़-पोछ करेगी, चाय बनायेगी। फिर तुझे सब्जी-भाजी बनानी आ जायेगी। फिर तू कलिया-पुलाव और कितना कुछ और बना लिया करेगी। फिर तू एक दिन बहुत बढ़िया खाना बना लेगी। और खाना खाने वाला कोई तेरी तरफ़ ऐसे देखेगा, जैसे सर्दियोंमें कोई आगकी तरफ़ देखता है, या गर्मियोंमें बर्फ़की चमक किसीको अच्छी लगती है।

मैना—सुमित्रा, जब तू ऐसी बातें करती है, तेरी बातें सुनते-सुनते जो थूक मैं निगलती हूँ, वह थूक कितना कड़ुवा-कड़ुवा होता है !

सुमित्रा—सौ सौ बार दिनमें इस कड़ुवे विषके घूँट पीते हुए भी हमें कुछ नहीं होता। मेरी माँ मरनेसे पहले जिस जगह पर थूकती थी, वहाँ छेद हो जाते थे। कोई कीड़ा जो उसके थूकको आकर चाटता, चाटते-चाटते बेसुध होकर गिर पड़ता। और उस थूकसे भरे मुँहमें से लाख-लाख वह मुझे गालियाँ देती, दिन-रात कोसती रहती, मुझे तब भी कुछ न हुआ। मैं बढ़ती गई, बढ़ती गई, जवान होती गई, जवान होती गई। फिर एक दिन उसने मेरी तरफ़ देखा। मैंने अपनी माँकी कमीज़ पहनी हुई थी। मेरी माँ की कमीज़ मुझे तंग-तंग, घुटी-घुटी खिंची-खिंची लग रही थी। मेरे कदको उसने देखा, मेरी कायाको उसने निहारा और उसके हृदयकी गति बन्द हो गई !

मैना—खुशकिस्मत हो, बहन ! तुमने अपनी माँको तो देखा है। मुझे अपनी माँकी कोई याद ही नहीं। मेरी माँ बेचारी चल बसी, मुझे

इतना भी बताये बिना कि मैं पिता कहकर किसको पुकारूँ। और अब लोग क्या-क्या बातें बनाते हैं !

सुमित्रा—गरीबी सबसे बड़ा पाप है। कपड़ोंपर पड़ी मिट्टी धूल कहकर भाड़ दी जाती है, वही मिट्टी कुम्हारके हाथोंमें एक नया रूप लेकर निखरती है। जिस बातके लिए गरीबको सूलीपर लटकना पड़ता है, वही बात अमीरका मन-बहलावकर हँसीमें टाल दी जाती है।

मैना—हाय, तू कैसी बातें करती है, सुमित्रा। मुझे तो अमीर बहुत अच्छे लगते हैं।

सुमित्रा—तुझे तो हरी घासपर लेटना अच्छा लगता है, फूलोंको देखना अच्छा लगता है, सूँघना अच्छा लगता है। तुझे तो पंखों वाले ठंडे कमरोंमें अलसाना अच्छा लगता है। पता नहीं और कितनी देर तू परायी उतरनें पहन-पहनकर अपने रूपको भुठलाती रहेगी ?

मैना—मुझे तो अपने आपको इस तरह छलना बड़ा अच्छा लगता है।

सुमित्रा—तो फिर तू अपने आपको इसी तरह छलती रह। मैं तो चली...

[जाती है]

मैना—अरी सुमित्रा बहन, सुन तो, घर वालोका खाना आज बाहर है, ठहर जा बातें करेंगे।

सुमित्रा—[दूरसे] नहीं, मुझे काम है।

मैना—चली गई। [बरतनोंको साफ़ करते हुए अपने आपसे] यह सुमित्रा कैसी बातें करती है ! इस प्यालेमें मेरा साहब चाय पीया करता था। इस प्यालेमें अब बीबी चाय पीती है। इस प्यालेमें मैंने भी कई बार चाय पी है। किसीको कोई चीज़ अच्छी लगती है, कोई माँग लेता है, कोई छीन लेना है, कोई चुरा लेता है।

[बरतन साफ़ करते हुए प्याला सहसा किसी और प्यालेसे टकरा कर झनझना उठता है और मैना इस शब्द पर जैसे चौंक पड़ती]

है। क्षणभरके लिए उसकी आँखें नशेमें मुँद जाती हैं। फिर उसका चेहरा खिल उठता है और वह जान बूझ कर प्यालेको टकरा-टकराकर आवाज़ पैदा करने लगती है। आवाज़ कभी सुरीली निकलती है, कभी नहीं। फिर स्वयं वह गाने लगती है।]

मैना—दो पत्तर अनारां दे।

साढी गली आ बैठे कलबूतर यारां दे...

[इस तरह गाती हुई मैना प्यालेसे प्याला टकराकर ताल दे रही है। तभी अचानक एक प्याला टूट जाता है। पर मैना जैसे नशेमें, आनन्दमें डूब गई हो, उसकी आँखें मुँद जाती हैं।]

सुमित्रा—[आते हुए] अरी, तूने वही बात की न ?

मैना—[चुप है]

सुमित्रा—अरी, तूने प्याला तोड़कर ही दम लिया न !

मैना—[अभी तक चुप है]

सुमित्रा—तुझे हाँ क्या गया है ? कैसे आँखें बन्द किये नशेमें चूर बैठी हुई है !

मैना—[मस्त-सी होकर) सुमित्रा !

सुमित्रा—क्यों तुझे तोड़ने के लिए एक और प्याला दूँ ?

मैना—सुमित्रा बहन !

सुमित्रा—मैं यह पूछती हूँ तेरे ये कैसे लच्छन हैं ? उस दिन बातें करते-करते तूने चुनरी के पल्लू को फाड़ डाला था।

मैना—अरी सुमित्रा, तू मुझे ऐसे लज्जित न कर।

सुमित्रा—लज्जित तो तू होकर रहेगी। लोग नौकर बरतन साफ़ करनेके लिए रखते हैं, बरतन तुड़वानेके लिए नहीं। मैंने तुझे तब भी कहा था, मैं तुझे हमेशा कहती रहती हूँ, प्यालेसे भला ताल देना कैसा ? पर तू मानती ही नहीं। मैं तो बाबा चलो।

अगर अभी कोई आ गया, डाँटें चाहे तुम्हें मिलेगी, डरसे जान मेरी निकल जायेगी ।

[जाती है]

मैना—[प्यालेके टुकड़ोंको चुनते हुए] सच, यह मुझे क्या हो रहा है ! प्यालोंको मैं बजाती गई, बजाती गई, बजाती गई, फिर प्याला टूट गया । प्याला टूट गया तो मुझे लगा जैसे 'मुझे कैसा लगा ?' प्यालाका यह टूटा हुआ टुकड़ा ऐसे लगता है, जैसे अनार का पत्ता हो । यह दूसरा टुकड़ा भी बिलकुल उस जैसा है । अनारके दो पत्ते । [गुनगुनाते हुए] दो पत्तर अनारों दे । साढा गली आ बैठे.....

[इस तरह गा रही होती है कि उसका स्वर धीमा पड़ जाता है, फिर बिलीन हो जाता है]

[दृश्य-परिवर्तन]

[कई महीनोंके बाद, गोल कमरेमें मैना झाड़-पांछ कर रही है । चन्द्रा साथ वाले कमरेमें सिलाईकी मशीन चला रही है कि टेलीफोनकी घंटी बजती है]

चन्द्रा—[दूरसे] मैना, तू टेलीफोन सुन ले । देख कौन है ?

मैना—[टेलीफोन सुनते हुए] हैलो ।

आवाज़—कौन बोल रहा है ?

मैना—जी, मैं मैना बोल रही हूँ ।

टेलीफोन की आवाज़—चन्द्रा बीबीजी हैं ?

मैना—बीबीजी घरमें ही हैं ।

टेली०—आप कौन बोल रही हैं ?

मैना—मैं कौन...जी मैं...मैं बीबीजीको बुलाती हूँ ।

[टेलीफोन मेज़ पर रख कर साथ वाले कमरेमें जाती है]

चन्द्रा—[आकर टेलीफोन उठाकर] हैलो ।

टेलीफोन—चन्द्रा, मैं सहगल बोल रहा हूँ ।

चन्द्रा—क्या हाल है ? कब आये तुम बम्बईसे ?

टेली०—आज ही आया हूँ । मैंने सोचा टेलीफोन पर हाज़िरी लगवा लूँ ।

पर पहले यह बताओ कि यह लड़की कौन थी जो टेलीफोन सुन रही थी ?

चन्द्रा—क्यों, तुम्हें क्या मतलब है ?

टेली०—बड़ी प्यारी आवाज़ थी । मैंने सोचा, पता नहीं कौन है ?

चन्द्रा—हाँ, लड़की बहुत अच्छी है ।

टेली०—क्या शकल भी उतनी ही सुन्दर है, जितनी आवाज़ प्यारी है ?

चन्द्रा—तुम फ़िल्मवालोंसे भगवान् बचाये ।

टेली०—मेरी नई फ़िल्ममें एक १४-१५ बरसकी राजकुमारी है जिसके लिए मैं एक चेहरा ढूँढ़ रहा हूँ ।

चन्द्रा—सच !

टेली०—हाँ, मैं मज़ाक नहीं कर रहा ।

चन्द्रा—तो फिर लड़की हाज़िर है ।

टेली०—पर यह है कौन ?

चन्द्रा—[हँसते हुए] मेरी नौकरानी है । क्यों, स्वीकार है ? [फिर हँसती है]

टेली०—क्या मतलब है तुम्हारा ? क्या एक नौकरानी राजकुमारीका पाठ नहीं कर सकती ?

चन्द्रा—क्यों नहीं कर सकती । जीवनमें पार्ट करना आसान है, पर वैसे एक दर्जेसे दूसरे दर्जे तक चढ़ना बड़ा कठिन है ।

[हँसती है]

टेली०—अच्छा, रूपकी कोई चिन्नी आई ?

चन्द्रा—हाँ, आज सवेरे ही आई है ।

टेली०—क्या लिखता है ?

चन्द्रा—मैं खत मँगवाती हूँ । [आवाज़ देते हुए] मैना ! मेरी शृंगार-मेज़ पर रूपकी चिठ्ठी रखी है, ज़रा लाना तो ।

टेली०—इस लड़कीकी आवाज़ ही प्यारी नहीं, नाम भी प्यारा है ।
[मैना चिठ्ठी लाकर चन्द्राको देती है और फिर उसी कमरेको झाड़ने-पोंछने लगती है ।]

चन्द्रा—ले सुन । यह चिठ्ठी उसने पेरिससे लिखी है । [चिठ्ठी पढ़ते हुए] “मैं आज सवेरे ही लन्दनसे पेरिस आया । पिछले कुछ दिनोंसे मुझे जुकाम हो रहा था । अब मेरी तबीयत ठीक है । ज्यों-ज्यों मैं पश्चिमके लोगोंको देखता हूँ, उनका रहन-सहन देखता हूँ, मुझे अपना देश याद आता है । अपना घर याद आता है । देश-प्रेम क्या होता है, इसका पता देशसे बाहर आकर चलता है । अपने देशके लोगोंकी कद्र, देशकी संस्कृतिका गौरव बाहर आकर ही अनुभव होता है । मैं तो माहियेके एक टप्पेसे...

[कमरेकी सफ़ाई कर रही मैनाके हाथसे काँचका फूलदान सहसा छूट जाता है और फ़र्शपर गिरते ही टुकड़े-टुकड़े हो जाता है ।]

चन्द्रा—हैं, यह क्या तोड़ा है तूने, मैना ? [टेलीफोनमें] माफ़ करना सहगल, इस चुड़ैलने मेरा फूलदान तोड़ डाला है । तुम इधर तो आ ही रहे हो । बाकी चिठ्ठी आकर खुद पढ़ लेना । अच्छा नमस्ते । [टेलीफोन रखकर जाती है]

सुमित्रा—[बाहरसे आते हुए] यह क्या टूटा है ? आवाज़ बाहर रसोई तक गई है ।

चन्द्रा—इस लड़कीके हाथोंको पता नहीं क्या हो गया है । जैसे ताक़त ही न हो ।

सुमित्रा—इतना भारी फूलदान तुम्हें काहेको साफ़ करना था, मैना ?

चन्द्रा—कालीनका सत्यानाश अलग हो गया है । मैं कहती हूँ, तेरा ध्यान कहाँ उड़ा रहता है ?

सुमित्रा—ध्यान कहाँ उड़ेगा बेचारीका ! आज इसकी तबीयत कुछ ठीक नहीं ।

चन्द्रा—[नरम पड़ते हुए] अच्छा, तो फिर क्यों काम कर रही है ? जाकर आराम कर । और यह फूलदान भारी भी तो कितना है ! अच्छा हुआ इससे जान छूटी । मुझे तो एक आँख नहीं भाता था ।

सुमित्रा—जा मैना, तू जाकर आराम कर । यह टुकड़े मैं चुन लेती हूँ ।
[मैना फूलदानके टूटनेपर स्तब्ध-सी विचारोंमें खोई, धीरे-धीरे बाहर चली जाती है ।]

चन्द्रा—सुमित्रा, एक प्याला चायका बनाकर इसे दे देना ।

सुमित्रा—बीबीजी, इस बेचारी पर नाराज़ न हुआ करें । आपके सिवा इसका कौन है ?

चन्द्रा—मैं क्यों नाराज़ होने लगी ? मेरे घरकी तो यह शोभा है ।

सुमित्रा—कल इसे किसीने कुछ कह दिया था, सारी रात इसकी आँख नहीं लगी ।

चन्द्रा—क्या कह दिया किसीने इसको ?

सुमित्रा—पता नहीं लोग क्या खुस-फुसर करते रहते हैं ।

चन्द्रा—हाँ । [टालते हुए] लोगोंकी बातोंका क्या है !

सुमित्रा—लड़की अच्छी है ।

चन्द्रा—सच्चा मोती है ।

सुमित्रा—अच्छा बीबीजी, मैं इन टुकड़ोंको बाहर फेंकती हूँ और देखूँ मैना लेटी भी है कि नहीं ।

[सुमित्रा फूलदानके टुकड़े उठाकर बाहर ले जाती है]

चन्द्रा—[स्वगत] कैसी स्तब्ध-सी रह गई थी ! डरसे जैसे प्राण सूख गये हों । भयसे आँखें बन्द । एक बोल भी तो उसके मुँहसे नहीं निकला । हाय, गरीबी भी क्या चीज़ है ! ऐसी लड़की पर तो कोई लाख फूलदान वार कर फेंक दे ।

[मोटरका हार्न सुन कर चन्द्रा बाहर जाती है]

[दृश्य-परिवर्तन]

[कई और महीने बीत गये हैं । मैना रसोईमें बिलकुल अकेली है, उदास, बेचैन और व्याकुल । कभी दरवाज़ेमें खड़ी होती है, कभी खिड़कीमें । फिर एक प्याला लेकर उसे धीरे-से बजाती है, और 'दो पत्तर अनारां दे' गुनगुनानेका प्रयत्न करती है । एक दो बार गुनगुना कर चुप हो जाती है, मानो उसको सन्तोष न हुआ हो । फिर विह्वल-कातर उलझी हुई, उखड़ी हुई, अपनी चुनरीके एक पल्लूको मरोड़ती हुई, वेगसे मेज़ पर रखे प्यालेकी ओर बढ़ती है और उसे उठाकर धरती पर पटक देती है । प्यालेके इस प्रकार टूटने पर बाहर छिपकर देख रही सुमित्रा सहसा अन्दर आ जाती है]

सुमित्रा—मैना !

मैना—[चुप है, आँखें बन्द हैं, मानो नशेमें गुम-सुम हो]

सुमित्रा—मैना, तूने यह क्या किया ?

मैना—[अभी भी चुप है]

सुमित्रा—मैं पूछती हूँ, तुझे यह हो क्या गया है ? पहले उखड़ी-उखड़ी तू दरवाज़ेमें खड़ी रही । फिर खिड़कीमें जा खड़ी हुई । फिर दरवाज़ेमें, फिर खिड़कीमें । मसल-मसल कर कैसे तूने चुनरीके पल्लूको फाड़ डाला है । और प्यालेको फिर तूने किस तरह फर्श पर पटका ! कभी कोई ऐसे भी करता है ? मैं पूछती हूँ, तुझे हो क्या गया है ?

मैना—[एक नशेमें] सुमित्रा !

सुमित्रा—मैं पूछती हूँ, कोई कब तक तेरी इन हरकतों पर पर्दा डाले रखेगा ? उस दिन तेरे हाथोंसे गिलास छूट गया । अगले दिन शीशी तेरे हाथोंसे खिसक कर टुकड़े-टुकड़े हो गई । प्लेट, जो बिल्लीके नाम लग रही है, मुझे पता है, वह भी तेरी ही करतूत है । रौशनदानके शीशेको साफ़ करते हुए उस दिन तूने अपने हाथोंको लहू-लुहान कर लिया । बीबी बेचारीने अफ़सोसमें दोपहर का खाना नहीं खाया और अपने घावको देखकर तुझे पता नहीं चल रहा था कि तुझे हँसना चाहिए या रोना चाहिए ।

मैना—सुमित्रा ! कल रात सपनेमें मैंने देखा भूला भूलती हुई मैं ऊपर चढ़ती गई, चढ़ती गई, और बादलोंके पीछे जाकर छिप गई ।

सुमित्रा—तेरा बस चले तो तू तारोंमें जा बसे ।

मैना—नहीं सुमित्रा, यह दुनिया बड़ी मीठी है !

सुमित्रा—[व्यंग्यसे] रौशनदानके शीशे साफ़ करते हुए उँगलियाँ चाहे लहू-लुहान हो जायें, यह दुनिया बड़ी मीठी है ।

मैना—हाँ, यह दुनिया तब भी मीठी है ।

सुमित्रा—किसीके लिए टोस्ट गर्म करते हुए चाहे हमारे हाथों पर छाले पड़ जायें । कपड़े कोई मैले करे, धो-धो कर हम थकें हारें । हाय, कई कपड़ोंसे कितनी बदबू आती है ! मैं तो बूसे ही जान लेती हूँ कि कोई कपड़ा किसका मैला किया हुआ है । सवेरे मुँह-अंधेरे चूल्हेमें हर रोज़ आग जलाना । मैं तो हाथ जोड़ती रहती हूँ, और जब आग जल जाती है तो लाख-लाख शुक्र करती हूँ परमात्माका । और इस तरह ईश्वरसे यह छोटी-छोटी मुरादें माँगती मैं इतनी बड़ी हो गई हूँ ।

मैना—तुझे पता है सुमित्रा, हमारे विलायतवाले साहबने लिखा है कि

वहाँ नौकर नहीं होते । कोई बड़ा नवाब या रईस ही नौकर रखता है, बाक़ी सब अपना काम अपने हाथोंसे करते हैं ।

सुमित्रा—और यह भी तुम्हे पता है कि रूप वापस आ रहा है हवाई जहाज़में ? कल वह यहाँ पहुँच जायगा ।

मैना—सच सुमित्रा ?

सुमित्रा—हाँ, सवेरे उसका तार आया था । मैंने तो सोचा था कि तुम्हें पता होगा ।

मैना—मैं तो कितनी देरसे कोठीमें गई ही नहीं ।

सुमित्रा—तुम्हे बरतन तोड़नेसे फ़ुरसत मिले तो और कोई काम भी सूँठे ।
[दोनों हँस पड़ती हैं]

मैना—हाय, कैसी घटा छ्वाई है । शायद बारिश होगी ।

चन्द्रा—[कोठीमेंसे आवाज़ देते हुए] सुमित्रा !

सुमित्रा—जी आई ।

[प्रस्थान]

मैना—[स्वगत] आज कैसी घटा छा रही है । उमड़-धुमड़ कर जैसे बादल घिर रहे हैं । यह तो बरसेंगे, ज़रूर बरसेंगे ।

[एक उन्मादमें, एक नशेमें मैना सामने मेज़ पर पड़े हुए एक काँचके गिलासको उठा कर फ़र्श पर दे मारती है । और फिर गिलासके बिखरे हुए टुकड़ोंको देखती रहती है, देखती रहती है । ऐसे वह देख रही होती है कि सुमित्रा आती है ।]

सुमित्रा—मैना !

मैना—[चुप है]

सुमित्रा—मैना ! यह तूने फिर क्या किया ?

मैना—[चुप है]

सुमित्रा—मैना फिर वही बात ? मैना, तुम्हे हो क्या गया है ? मैना !
...मैना !

[सुमित्रा इस प्रकार मैनाको कन्धोंसे पकड़कर झँझोड़ रही होती है कि बाहर बादलोंकी गड़गड़ाहट सुनाई देती है, जिसके साथ गोल कमरे वाले पहले दृश्यका संगीत मिल जाता है]

[दृश्य-परिवर्तन]

[जब संगीत खत्म होता है, तो दृश्य फिर गोल कमरेका है । एक ओर ट्रेके सभके सब बरतन टूटे पड़े हैं । दूसरी ओर चन्द्रा और रूप घबराये हुए एक दूसरेका मुँह ताक रहे हैं । मैना भाग कर जा चुकी है ।]

चन्द्रा—इस चुड़ैलको क्या हो गया है ?

रूप—[हँसते हुए] शायद नज़र लग गई है ।

चन्द्रा—सारा कालीन खराब कर दिया ।

रूप—अन्दर पाँव रखते ही एक नज़र उसने देखा और फिर जैसे उसके हाथोंसे बरतन फिसल गये । एक नशेमें जैसे उसकी आँखें मुँद गईं । फिर उसके गाल खुशीसे तमतमा उठे क्षणमात्रके लिए । और फिर टूटे बरतनोंको देखकर, घबराहटमें उसकी चीख निकल गई ।

चन्द्रा—और कैसे वह भाग कर चली गई है !

रूप—[खिड़कीकी ओर जाकर] देखूँ, भला गई किधर है ?

चन्द्रा—जायेगी कहाँ, यहीं कहीं होगी ।

रूप—[खिड़कीका पर्दा उठाकर बाहर देखते हुए] चुनरी बाहर आँगन में गिरी पड़ी है ।

चन्द्रा—देखूँ, बेचारी डर गई है । कितनी भोली है ।

रूप—वह तो नहीं सामने लानके कोनेमें ?

चन्द्रा—कहाँ ?

रूप—गुलाबकी ओटमें, अलूचोंके पेड़के नीचे ।

चन्द्रा—हाँ, हाँ, वही है । चुड़ैल कैसे सपाट चित्त लेटी है ।

रूप—गा भी रही है शायद ।

चन्द्रा—हाँ गा रही है ।

[गाना धीरे-धीरे ऊँचा होता है]

रूप—हाँ, सच, गा रही है ।

चन्द्रा—देखा तूने, कितनी अलहड़ है !

रूप—गा रही है, 'दो पत्तर अनारों दे'

[गाना और ऊँचा हो जाता है]

चन्द्रा—चुड़ैल !

रूप—दो पत्तर अनारों दे ।

साढी गली आ बैठे कलवूतर यारों दे ।

चन्द्रा—माहियेके यह बोल तूने उस दिन गाये थे, जिस दिन मेरी डोली आई थी ।

रूप—कितना प्यारा गाती है !

चन्द्रा—लेटी कैसे हुई है !

रूप—जैसे तीन लोक उसे मिल गये हों ।

चन्द्रा—कितनी अलहड़ है !

रूप—जैसे कोई मंज़िल पर पहुँच जाता है !

चन्द्रा—कितनी भोली है !

रूप—[स्वगत] कई लोगोंकी मंज़िल कितनी पास होती है !

चन्द्रा—पगली !

रूप—[स्वगत] मंज़िल जितनी पास होती है, कई बार उतनी ही दूर नज़र आती है ।

चन्द्रा—चुड़ैल !

रूप—भाभी, पर यह कितना प्यारा गाती है !

चन्द्रा—तेरे भाई साहब आज रात जब आयेंगे मैं कहूँगी रूपको मैनाका गाना बहुत पसन्द है ।

[गाना ऊँचा होता हुआ मानो सारे कमरेको भर लेता है ।
रूप और चन्द्रा एक नशेमें सुन रहे हैं, सुन रहे हैं ।]



जूठे टुकड़े



पात्र :

भिखारी

बुद्धिया

बाप

सीता

श्रवण



[निचले मध्यवर्गका एक मकान, जिसकी दाईं ओर किसी अमीर आदमीका एक तीन मंजिला मकान दिखाई देता है। बाईं ओर एक और साधारण-सा मकान है जिसकी केवल मुँडेर ही नज़र आता है। पर्दा बीच वाले मकानके दालान पर उठता है, जिसका बरामदा बाहर गलीमें खुलता है। दालानमें चारपाइयाँ बिछी हैं। हर कोई अपनी-अपनी चारपाई पर बैठा है। एक चारपाई खाली है।]

भिखारी—[गलीमें] बाबा भगवानके नाम पर एक टुकड़ा रोटी, मैं भूखा हूँ।

बुढ़िया—यह कम्बख्त फिर आ गया।

भिखारी—[गाते हुए]

चिढ़ी चोंच भर ले गई नदी न घटियो नीर...।

बुढ़िया—यह पीछा नहीं छोड़ेगा। सीता, इसे कुछ देकर टालो।

भिखारी—हे माई, परमात्माके लिए ! मैं सबेरेसे भूखा हूँ।

बुढ़िया—सीता बेटी, तू अभी तक उठी नहीं ?

सीता—माँ, घरमें कुछ हो तो इसे दूँ।

भिखारी—हे बाबा, मैं भूखा हूँ। एक टुकड़ा रोटीका सवाल है।

बुढ़िया—सीता !

सीता—[चुप है]

भिखारी—भगवानके नामपर बाबा

बाप—अरे तुम्हारा भगवान कैसा है, जो हम गरीबोंके टुकड़ों पर पलता है ? यह कैसा अन्नदाता है जो सुबहसे माँग रहे अपने भूखे भक्तको रोटीका एक टुकड़ा नहीं देता ?

भिखारी—[गाता है]

कौड़ी कौड़ी जोड़के जोड़े लाख करोड़

चलती बार न कुछ मिल्यो...

बुढ़िया—यह नहीं जायेगा यहाँसे ।

बाप—खड़ा रहने दो, हमारा क्या लेता है ?

सीता—यह कहीं और क्यों नहीं जाता ?

बाप—भिखारियोंके अपने-अपने ठिकाने हाँते हैं । एक मुहल्लेका भिखारी दूसरे मुहल्लेमें नहीं जाता ।

बुढ़िया—इन्हें तो घर-घरका पता होता है, किस घरसे क्या मिलता है, किस घरसे कौन देता है ।

भिखारी—[गाता है] जिस मरनेसे जग डरे, मेरे मन आनन्द...

सीता—[बाहर बरामदेमें आते हुए] बाबा, तुम और कहीं क्यों नहीं जाते ? आज हमारे यहाँ तुम्हें देनेके लिए कुछ नहीं । मेरे भाई की नौकरी छूटे कई महीने हो गये हैं । सुबहसे हमारे यहाँ कुछ नहीं बना । तुम अपने भगवानसे कहो न कि मेरे भैयाका नौकरी दिला दे ।

बाप—[अन्दरसे] भगवान इसकी सुनता तो यह खुद क्यों मारा-मारा फिरता ?

भिखारी—[हँसते हुए] सोलह आने सच्ची बात कही तुने । [सीतासे] रोज़ लड़ता है, रोज़ कड़वी बातें करता है फिर भी मैं हर रोज़

इसके दरवाज़ेसे भीख माँगकर पेट भरता हूँ। जितने इसके बोल कड़वे होते हैं उतना ही इसका अन्न मीठा होता है।

[भिखारी हँसता हुआ सीढ़ियों चढ़कर बरामदेमें आता है और दीवारसे टेक लगाकर बैठ जाता है।]

सीता—तुम बरामदेमें क्यों धरना देकर बैठ गये ? आज तुम्हें यहाँसे कुछ नहीं मिलेगा। हमारे घरमें सुबहसे चूल्हा नहीं जला।

भिखारी—अगर यह बात है तो और भी अच्छा है। कल तक मैं तुम्हारा बचा-खुचा समेटता था, आज मैं तुम्हारी भूखका साथी हूँगा।

सीता—तुम यहाँ ऐसे ही सो गये तो कोई तुम्हारी लुटिया-उटिया उठा ले जायेगा ?

भिखारी—[हँसते हुए] लुटिया अगर कोई चुरायेगा तो उसे भीख माँगनी पड़ेगी। [गाते हुए] माँगन गये सो मर गये... माँगना बहुत मुश्किल है, बेटी। परमात्मा दुश्मनको भी हाथ फैलाने पर मजबूर न करे।

सीता—सौ बातोंकी एक बात तूने कही है बाबा ! मुझे अगर पड़ोसमें कभी माँगने जाना पड़ता है तो पसीना छूटने लगता है, हाथ काँपने लगते हैं, मुँह सूख-सूख जाता है। कई बार मैं माँगने जाती हूँ तो हाँठ जैसे सिल जाते हैं और मैं बात किये बिना खाली हाथ लौट आती हूँ।

भिखारी—ऐसे कई घर हैं, जहाँसे मैं भी नहीं माँगता। कइयोंका दिया हुआ मैं खाता भी नहीं। बाबा नानकने मलिक भागोकी रोटीमें से लहू निचोड़कर दिखाया था कि पूँजीपतिके अनाजमें गरीबका लहू होता है। तुम्हारे पड़ोसमें सेठ मुरलीमनोहर है। मैंने कभी उसके घरका पानी तक नहीं पिया। अभी सेठानीने मुझे दुअन्नी दी थी। मैंने बीड़ी खरीद ली, उसके पैसोंको हमेशा इसी तरह फूँक डालता हूँ।

[बीड़ी निकाल कर पीना शुरू कर देता है ।]

सीता—[हँसते हुए] बाबा तुम सुबहसे भूखे-प्यासे हो । दुअन्नो मिली और तुमने उसकी बीड़ियाँ खगोद लीं ?

भिखारी—रोटी तो मैं कई दिनसे तुम्हारे घरकी खाता हूँ । तुम्हारे खानेमें बड़ी बरकत है । और सेठानीके पैसोंकी बस बीड़ी पीता हूँ । जब भी मिलते हैं धुएँमें उड़ा देता हूँ ।

सीता—मैं सोचती हूँ बाबा, तुम एक कुत्ता रख लो । जहाँ रात हो जाये तुम वहीं सो जाते हो । कुत्ता तुम्हारी रखवाली किया करेगा ।

भिखारी—अरी, मैंने एक कुत्ता रखा था । कहते हैं वह किसी मेमका था । आप ही आप मेरे पीछे फिरने लगा । बूढ़ी मेमने कोई नया कुत्ता पाल लिया था ।

सीता—फिर !

भिखारी—एक रात जो मेरी आँख खुली तो क्या देखता हूँ कि वह मेरी गुदड़ीमें पड़ा सो रहा है । मैं ज़मीन पर लेटा हुआ था और वह मेरी गुदड़ीमें सो रहा था । मैंने सोचा यह तो मेरा जन्म भ्रष्ट कर देगा और मैंने मार-मारके उसे भगा दिया । रखवाली तो करता था पर था तो कुत्ता ही । अब भी कभी देख लेता है तो मेरा पीछा नहीं छोड़ता ।

बाप—[अन्दरसे] अरी, तू यह क्या किस्सा ले बैठा, अन्दर आ जा ।

सीता—[भिखारीसे जैसे आज्ञा लेते हुए] अच्छा बाबा, मैं चली ।

[भिखारी बीड़ी पीता है, लड़की अन्दर चली जाती है ।]

बुढ़िया—तेरा भाई अभी तक नहीं आया बेटी ?

सीता—आता ही होगा ।

बाप—मैं कहता हूँ, अगर वह भी खाली हाथ आया तो...

बुढ़िया—[उठकर सीताके कानमें] मालूम होता है तुम्हारे बापूको बहुत भूख लगी है ।

सीता—नौकरी कहाँ मिलती है आजकल । भैया यूँही भटकनेके लिए चले जाते हैं ।

बुढ़िया—[गलीमें किसीके पाँवकी आहट] सुना शायद तुम्हारा भाई आ रहा है ।

सीता—यह कदमोंकी आहट तो किसी पक्की नौकरी वालेकी जान पड़ती है । किसी भरे पेटकी । यह मेरा भाई नहीं हो सकता ।

बुढ़िया—ठीक कहती हो । जो कोई भी था आगे निकल गया ।

सीता—भैया पता नहीं इतनी देर क्यों कर देता है ।

[गलीमें फिर पाँवकी आहट]

बुढ़िया—गलीमें फिर कोई आया है ।

सीता—यह तो गोकुल दूधवाला है । शामको जब दूधका मटका लिये बेचने जाता है तो और तग़ह चलता है और इस वक़्त जब बेचकर लौटता है तो और तरह चलता है ।

बुढ़िया—हमने तो कई दिनसे दूध घी की बूँद तक नहीं देखी ।

सीता—हम दूधका क्या करेंगे ? हमारे यहाँ कोई बच्चा तो है नहीं ।

[गलीमें फिर पाँवकी आहट]

बुढ़िया—फिर कोई गलीमें आया है । शायद यह तुम्हारा भाई है ।

सीता—यह तो पड़ोसका लड़का है, माँ ! रोज़ भंग पीता है, रोज़ घर आकर ऊबम मचाता है ।

बाप—भग पीकर भूख बहुत लगती है । एक बार किसीने मुझे पिला दी थी । पूरे घरकी रोटियाँ मैं अकेला खा गया था ।

सीता—बापू, तुम अभी सोये नहीं ?

बुढ़िया—भूखमें नींद कहाँ आती है, बेटी ?

बाप—मेरा खयाल है बेटी, तू जाकर पड़ोसियोंसे कुछ माँग ला ।

सीता—नहीं बापू रोज़-रोज़ ..

बुढ़िया—उधारमें क्या है बेटी ?

सीता—मुझे तो शरम आती है ।

बाप—इसमें शरमकी क्या बात है ?

सीता—मुझे रोज़-रोज़ माँगनेमें शरम आती है ।

बाप—[कुपित होकर] तू नवावज़ादी है ।

बुढ़िया—[समझाते हुए] चली जाओ सीता ! तुम्हारे बापूने कलसे कुल नहीं खाया ।

सीता—मुझसे माँगा नहीं जाता । मुझे बहुत शरम आती है ।

बाप—[और भी क्रुद्ध होकर] शरम आती है तो मर क्यों नहीं जातो ?
बापके सामने ज़बान चलाते शरम नहीं आती ?

सीता—[भरी हुई आवाज़में] चली जाती हूँ, बापू ! चली जाती हूँ ।
[चप्पल पहनकर बाहर निकल जाती है]

बुढ़िया—तुम्हारा गुस्सा बहुत बढ़ गया है सीताके बापू !

बाप—मारे भूखके मेरी जान निकली जा रही है ।

बुढ़िया—तुम्हारे साथ ही सीताने खाया था, तुम्हारे साथ ही मैंने खाया था ।

बाप—तुम लोगोंकी और बात है ।

बुढ़िया—बेटीपर तुम इस तरह न बिगड़ा करो । अब वह जवान हो गई है ।

बाप—जितनी बड़ी हो रही है उतनी ही मूर्ख । औलादको चाहिए कि माँ-बापका कहा माने ।

बुढ़िया—आजकलके बच्चे अपनी अकल बरतते हैं ।

बाप—यही तो मैं कह रहा हूँ कि ज़मानेको उलटी हवा लग गई है ।
बड़े-बूढ़ोंके कहे पर कोई कान नहीं देता ।

बुढ़िया—बाहर भिखारी कैसे खुरांटे ले रहा है !

बाप—अभी रोटीके एक टुकड़ेके लिए मिन्नतें कर रहा था ।

बुढ़िया—किस बेफ़िक्रीसे सोया पड़ा है !

बाप—भूखा होता तो इसे नींद कैसे आती ?

बुढ़िया—धीरज सन्तोष भी तो कोई चीज़ है ।

बाप—हाँ, हाँ, मैं जानता हूँ । तुम मुझे नसीहत करने न बैठ जाया करो ।

बुढ़िया—जैसे-जैसे तुम बूढ़े हो रहे हो, तुम्हारा स्वभाव कितना चिड़-चिड़ा होता जा रहा है !

बाप—अभी सीता नहीं आई ।

बुढ़िया—आती होंगी ।

बाप—हमारे गाँवमें दूधकी नदियाँ बहती थीं ।

बुढ़िया—तो क्या हुआ ?

बाप—जब मेरे बापू मरे थे तो इतनी बड़ी जायदाद छोड़कर मरे थे ।

बुढ़िया—तुम अपने बच्चोंके लिए क्या छोड़कर जाओगे ?

साता—[आते हुए] बापू !

बाप—तुम जैसी गई थीं वैसी ही खाली हाथ आ गईं ।

बुढ़िया—वही बात हुई न ।

बाप—क्या उन्होंने इन्कार कर दिया ?

बुढ़िया—सीता !

बाप—काशीनाथ अब नवाब हो गया है । उसने मुझे उधार देनेसे भी इन्कार कर दिया ?

बुढ़िया—तुम चुप क्यों हो बेटी ?

बाप—[अपने आपसे] काशीनाथने आज मुझे उधार देनेसे भी इन्कार कर दिया !

बुढ़िया—पहले भी कई बार वह इन्कार कर चुके हैं । तुमने आज फिर लड़कीका क्यों उनके यहाँ भेजा ?

बाप—उधारमें क्या है ? हर कोई एक दूसरेसे उधार लेता है । मेरे साथ-का मुनीम मेरी ऐनक उधार लेकर अपना बही-खाता लिखा करता था । लोग आग उधार ले लेते हैं, मेहनत उधार ले लेते हैं ।

उधारमें क्या है ? चाँद अपनी रोशनी सूरजसे उधार लेता है ।
और जबसे दुनिया बनी है उधार लिये आ रहा है । उधारमें
क्या है ?

बुढ़िया—उधारमें कुछ नहीं पर उधार वहाँ चलता है जहाँ उधार लेकर
लौटाया भी जाये ।

बाप—काशीनाथका अब यह दिमाग हो गया है ! आज उसने मुझे उधार
देनेसे भी इन्कार कर दिया । दीवारसे दीवार लगती है । उसके
घरमें कोई खाँसता है तो हमारी आँख खुल जाती है । भंग पीकर
जब उसका बेटा शोर मचाता है तो मैं मन ही मन प्रार्थना करता
रहता हूँ कि परमात्मा उसे अकल दे । जब उसकी बेटीकी शादी
हुई थी तो मैंने ज़मानतपर उसे रसद दिलाई थी । जबसे उसका
परनाला खराब हुआ है उसकी छतका पानी हमारे आँगनमें
गिरता है, मगर मैंने कभी उसका ज़िक्र तक नहीं किया । पिछली
गर्मियोंमें छतपर सोते थे तो उसके घरके सब लोग हमारे घड़े
का ठण्डा पानी पीते थे । काशीनाथ, कम्बख्तकी आँखोंमें
मोतिया उतर चुका है । मैं हर रोज़ उसे अखबार पढ़कर सुनाता
हूँ । इसके घरमें किसीको छींक तक आ जाये तो मैं लाठी टेकता
हुआ कुशल-मंगल पूछने दौड़ता हूँ । और उसने आज मुझे
मुट्ठी भर आटा देनेसे भी इन्कार कर दिया ! जबसे उसने हुक्का
छोड़ा है मैंने कभी उसके सामने तम्बाकू नहीं पिया कि कहीं
उसे तलब न हाने लगे । उसके बेटेके रिश्तेके लिए जब कोई
पूछ-गच्छ करता है तो झूठ बोलते मेरी ज़बान नहीं थकती ।
हमारे आँगनमें बैठी उसकी बीवीके कंगन देखकर रात चोर यहाँ
आ घुसे । बार-बार वह मेरी बीवीकी बाँहें टटोल-टटोलकर देखते
रहे लेकिन मैं बोला तक नहीं, इशारा तक नहीं किया ।

[बाहर गलीमें कदमोंका चाप]

बुढ़िया—शायद श्रवण आ रहा है ।

बाप—हाँ, हाँ, यह उसीके कदमोंकी आवाज़ है ।

श्रवण—[बाहर बरामदेमें एक कुत्ता भौंकता है] हश-हश [अन्दर आते हुए] भिखारी तो ज़मीनपर लेटा हुआ है और उसका कुत्ता उसकी गुदड़ीमें सो रहा है ।

बुढ़िया—वही मेमवाला कुत्ता होगा । वही गुदड़ीमें घुसता है ।

बाप—गुदड़ीमें घुसता है और घरवालोंपर भौंकता है ।

श्रवण—रखवाली करते-करते लोग घरके मालिक बन जाते हैं ।

[फीकी हँसो हँसता है]

बाप—अच्छा, अच्छा सुनाओ क्या ख़बर लाये ?

श्रवण—ख़बर आज यह है कि पाकिस्तानने आखिर मान लिया है कि अमेरिकासे वह सैनिक सहायता लेगा ।

बुढ़िया—अरे यह तो तुम्हारी नौकरीकी ख़बर पूछ रहे हैं ।

श्रवण—नौकरी कहाँ है ? सुबहसे दर-दरकी ठोकरें खाता रहा । रात हुई तो थक हारकर घर लौट आया ।

बाप—यह तो बहुत बुरी सुनाई बेया !

श्रवण—सीता क्या इस तरह चुप बैठी है ?

बुढ़िया—यूँ ही ।

श्रवण—यूँ ही तो यह कभी उदास नहीं हुई ।

[सीता फूट-फूटकर रोने लगती है]

बाप—रोनेकी क्या बात है ?

बुढ़िया—रोनेकी बात क्यों नहीं ! तुमने लड़कीको क्यों उसके घर भेजा था ?

श्रवण—कहाँ गई थी सीता ?

बुढ़िया—काशीनाथके यहाँ मुट्ठी भर आटा उधार माँगने गई थी ।

बाप—और काशीनाथका आज इतना दिमाग हो गया है कि उसने हमें उधार देनेसे भी इन्कार कर दिया ।

श्रवण—[चुप है । होठों पर ज़बान फेरता है]

बुढ़िया—क्यों पागलोंकी तरह रो रही है ।

श्रवण—स्यानी लड़कीको यूँ माँगने किसीके घर भेज देना, मैं नहीं समझता अकलमन्दी है ।

बाप—अच्छा, तू अब मुझे अकल सिखायेगा ? दूधके दाँत तो टूटे नहीं और तू मुझे अकल सिखायेगा ! मेरे सफेद सिरमें धूल पड़नी थी, मुझे यह दिन भी देखने थे । हाय, वह दिन भी थे जब लोग मक्खन शाह मक्खन शाह कहते थकते नहीं थे । मैं तराजू की डंडीको ज़रा दबा देता था तो दिनमें सैकड़ों रुपये इधरसे उधर हो जाते थे । हजारों रुपयोंका माल लोग खुद ही मेरे पास रख जाते थे, खुद ही ले जाते थे । मेरी मज़ाँसे भाव चढ़ जाते थे, मेरी मज़ाँ होती तो मंडीमें मंदा हो जाता था ।

श्रवण—यह बताइए कि घरमें कुछ खानेको है । मैं सुबहसे भूखा हूँ ।

[छण भरके लिए कमरेमें निस्तब्धता रहती है]

बुढ़िया—मैंने सुबहसे पानी तक नहीं पिया ।

बाप—भूखसे मुझमें शक्ति नहीं रही ।

सीता—(सिसकी लेती है)

[कमरेमें फिर मौन छा जाता है । केवल बिल्ली की म्याऊँ-म्याऊँ की आवाज़ आ रही है]

श्रवण—बिल्ली किस तरह छींके पर ललचाई नज़रें गड़ाये बैठी है ।

बुढ़िया—छींका खाली है ।

श्रवण—अब राटियोंकी पिटारी सूँघ रही है ।

बुढ़िया—पिटारीमें कलसे कुछ नहीं ।

श्रवण—अब बर्तनोंको सूँघ रही है ।

बाप—बिल्ली बेचारी भूखी है ।

श्रवण—यह किसी दूसरेके यहाँ क्यों नहीं चली जाती ?

बाप—हर रोज़ शामको मैं इसके लिए रोटीके किनारे बचाया करता हूँ । दो बार मेरी चारपाईके नीचेसे गुज़र चुकी है ।

श्रवण—रोटीके उन किनारोंके लिए इसके पेटमें जगह खाली है ।

बाप—हर रोज़ चुपकेसे आती है । मैं इसके लिए चारपाईके नीचे रोटीके किनारे रख छोड़ता हूँ । चुपकेसे खाकर चली जाती है ।

[बिल्लीके ग्याऊँका स्वर सुनाई देता है]

श्रवण—यह पड़ासमें क्यों नहीं चली जाती ?

बाप—यह नहीं जायेगी । रात भर यूँ ही सिर खाती रहेगी ।

बुढ़िया—बाहर भिखारी बरामदेमें लेटा है कि रोटी नहीं तो मैं यहीं पड़ रहूँगा !

बाप—मुझे बहुत गुस्सा आ रहा है काशीनाथकी इस करतूत पर ।

श्रवण—सबकी जिन्दगी यूँ ही ढोलकी पोल है । क्या मालूम अन्दर से वह भी खोखले हो ?

बाप—यह मैं कैसे मान सकता हूँ ? काशीनाथने पूरी मण्डी लूटकर घर में डाल ली है ।

बुढ़िया—और उसके बेटेकी तनख्वाह भी तो हर महीने आती है ।

श्रवण—हो सकता है आज उनका राशन ख़तम हो गया हो ।

बाप—एक तो इस सरकारके हाथों मैं तंग आया हुआ हूँ । चपातियाँ गिनके खाओ, चीनी नापके डालो, चावल...

श्रवण—इसमें बुराई क्या है, सरकार हर चीज़ बाँट कर देती है ।

बाप—हमारा ज़माना अच्छा था ।

श्रवण—जब कुछ लोग तो खाकर तोड़ें निकाल लेते थे और कुछ लोग भूखसे तरसते रह जाते थे ।

बाप—कितनी बातें बनाते हैं आज-कलके लौंडे ! क्यों, सीताकी माँ !
हमारा ज़माना कितना अच्छा था ?

बुढ़िया—[चुप रहती है]

बाप—मैं पूछता हूँ कभी मैंने अपने माँ-बापके सामने इस तरह ज़वान चलाई थी ?

बुढ़िया—[खामोश रहती है]

बाप—कभी हमारे वक्तोंमें ऐसा हुआ था कि चूल्हा न जले, घड़ा सूखा पड़ा रहे ? तू बोलती क्यों नहीं, सीताकी माँ ?

[बुढ़िया अब भी खामोश है । बिल्लीकी म्याऊँ-म्याऊँकी आवाज़ आ रही है]

श्रवण—बिल्ली कैसे घरका चप्पा-चप्पा सूँघ रही है !

बाप—अगर उसे अकल होती तो इशारा ही काफ़ी था ।

बुढ़िया—इससे स्यानी तो मेरी मुर्गी है । सुबह बाहर निकल जाती है शाम को लौट आती है ।

श्रवण—कुड़-कुड़ पड़ोसीके यहाँ और अंडे अपने घर ।

बुढ़िया—किस तरह चोंचको परोंमें दबाये बेसुध सोई पड़ी है ।

बाप—जब पोटा भरा हो तो नींद खूब आती है ।

बुढ़िया—बाहर भिखारी कैसे खर्राटे ले रहा है ।

श्रवण—अभी-अभी तो दिन डूबा है ।

बाप—या तो दिल ठिकाने हो या पेट भरा हुआ हो, नींद दोनों तरह खूब आती है ।

बुढ़िया—या तो आदमी पेट भर सके या पेट भरनेकी फ़िक्रसे छुटकारा पा ले ।

बाप—[रुष्ट होकर] तुम्हारा मतलब है भिखारी भूखा है, सुबहसे मेरी तरह भूखा है ।

बुढ़िया—मैं क्या जानूँ ?

[दालानके एक कोनेमें एकदम मुर्गीके कुड़कुड़ाने और फिर फड़-फड़ानेकी आवाज़ आती है ।]

श्रवण—[घबरा कर] बिल्ली मुर्गीपर झपट पड़ी ।

बुढ़िया—शी...शी...कम्बखत ।

श्रवण—घरकी बिल्ली घर ही की मुर्गीपर झपट पड़ी ।

बाप—जब पेट खाली होता है बेटा तो अपने-परायेका होश नहीं रहता ।
मछली मछलीको निगल जाती है ।

बुढ़िया—मेरी बच्ची भूखी सो गई है । मुझसे इसने कुछ नहीं खाया ।

[सीताकी ओर देखती है जो अपनी चारपाईपर औंधी पड़ी है]

बाप—यूँही ऊँघ रही होगी । नौद कहाँ आती है ! मैं जब भूखा होता हूँ तो मेरा जो चाहता है कि अपने कपड़े फाड़कर कहीं फेंक दूँ ।

बुढ़िया—सेठ मुरलीमनोहरकी घर वाली उस दिन मुझे गलीमें मिल गई; क्या हड्डियोंका ढाँचा बन गई है ! कहती थी—मुझे भूख नहीं लगती । इलाज करते-करते हार गई हूँ । रोटीकी तरफ़ देखनेको जी तक नहीं चाहता । पानी पी-पीकर पेट फूल जाता है ।

श्रवण—[ब्यंग्यसे] उसका सेठ लोगोंका खून पी जाता है और डकारें तक नहीं लेता । आधे शहरके हिस्सेका अनाज उसने अपने घर डाल रखा है, और उसकी घरवालीको भूख नहीं लगती ! दिन-ब-दिन कमज़ोर होती जाती है !

बाप—रात सिरपर आ गई, सीताकी माँ ! अगर तुम कहींसे चुटकी भर आटा ले आओ तो मैं नमकसे ही रोटी खाकर रात गुज़ार लूँगा ।

बुढ़िया—आटा मिल जाये तो आटेकी बिसियों चीज़ें बन जाती हैं !

श्रवण—सीता भूखी-प्यासी ही सो गई है।

बाप—सोयी कहाँ होगी ?

बुढ़िया—तुम बच्चीके पीछे क्यों पड़ गये हो ?

बाप—जैसे-जैसे यह बढ़ रही है, इसकी अकल घटती जा रही है।

श्रवण—जैसे-जैसे सीता बढ़ रही है बापूको उसकी ज़िम्मेदारीकी याद दिलाती है और ज़िम्मेदारीसे कतराते बापूको गुस्सा आ जाता है।

बाप—बेकारकी बातें मत बना। मैं कहता हूँ, कहींसे चुटकी भर आटा ले आओ।

बुढ़िया—यह इस वक्त रातको कहाँ माँगने जाये ?

श्रवण—मैं कहता हूँ, बापू अगर सारी उमर तुमने मुझे लहसन और प्याज़से परहेज़ न करवाया होता, अगर सारी उमर तुमने हमें दाल सब्ज़ी पर न पाला होता तो आज हम मुर्गीको काटकर ही रात गुज़ार सकते थे।

बुढ़िया—हाय अपने घरकी मुर्गी !

बाप—वेशक मुर्गीको पका लो बेटा ! मैंने तो जवानीमें कई बार मांस खाया है।

श्रवण—लेकिन मेरे अन्दर तुम्हारे डाले हुए संस्कार कैसे मिटें ? मैं तो मुर्गीको इस ख्यालसे देख तक नहीं सकता।

बाप—अच्छा तुम मुर्गी किसीके हाथ बेच दो और खानेको कुछ ले आओ।

बुढ़िया—हाय मेरे घरकी पली हुई मुर्गी ! क्या हुआ जो आज कल अंडे नहीं दे रही। हमारा खाती भी क्या है ? सुबह घरसे निकल जाती है, शामको लौटती है, और आकर पड़ रहती है !

बाप—तुम इसकी बातोंमें न आओ बेटा ! यह तो हर चीज़को छातीसे लगाये रहना चाहती है।

बुढ़िया—अगर तुम्हारी नज़र घरकी चीज़ों पर जमी हुई है तो तुम मेरे कंगन ले जाओ। कहीं गिरवी रख आओ, महीना दस दिन तो आरामसे निकल जायेंगे।

बाप—कंगन ! कंगनको कोई कैसे गिरवी रख सकता है ? कंगनको कोई कैसे हाथ लगा सकता है ? यह कंगन पीढ़ियोंसे हमारे खानदानमें चले आ रहे हैं। मेरे बापके बापके बापकी निशानी हैं। यह कंगन लाख मुरादोंकी यादगार हैं। इनके साथ सैकड़ों कहानियाँ गुथी हुई हैं। यह कंगन बस बापसे बेटेके पास जा सकते हैं एक पवित्र अमानतकी तरह, एक अनमोल उपहारके रूपमें।

श्रवण—अगर हमारे बुजुर्गोंकी कोई अमानत हमारा दिलदर दूर नहीं कर सकती, अगर हमारे बड़ोंकी कोई देन हमारी ज़रूरत पूरी नहीं कर सकती, बाप-दादाकी यादगारको छार्टीसे चिमटाये अगर हम भूखों मर गये, तो वह यादगार किस कामकी ? उस देनसे उस अमानतसे क्या लाभ ?

बाप—मैं भूखा मर जाऊँगा लेकिन बड़ोंकी मर्यादामें फ़र्क नहीं आने दूँगा।

बुढ़िया—तुम इसको बातें मत सुनो, बेया ! रात सिरपर आ रही है। लो मैं तुम्हें कंगन निकाले देती हूँ। तुम जाकर कहीं इन्हें गिरवी रख आओ। फूल-सी मेरी बच्ची भूखी-प्यासी सो गई है।

बाप—मेरे जीते जी मेरी यूँ मिट्टी पलीत न करो। मैं भूखा मर जाऊँगा लेकिन अपने वंशकी अमानतका अपमान नहीं होने दूँगा।

बुढ़िया—तुम भूखे मर सकते हो लेकिन एक माँ अपने बच्चोंको बिल-खता नहीं देख सकती है।

बाप—मैं कहता हूँ मेरे साथ यह अन्याय न करो। इस उमरमें मेरी सफेद दाढ़ीमें धूल मत डालो। लोग बाप-दादाके नामपर अपनी

जान तक क़ुर्बान कर देते हैं और तुम एक दिन भी भूखे नहीं रह सकते ?

बुढ़िया—लो, यह कंगन बेठा और अब जाओ रात सिरपर आ रही है ।

[बुढ़िया कंगन सन्दूकसे निकालकर श्रवणके हाथमें दे देती है]

बाप—[उठते हुए] यह कंगन मेरे घरसे मेरे जीते जी बाहर नहीं जा सकते । मेरी लाश पर ही कोई इस अमानतमें खयानत कर सकेगा ।

बुढ़िया—तुम इसकी तरफ़ मत देखो, यह तुम्हें खा थोड़े जायेगा । बेठा, अब तुम जाओ ।

[माँ श्रवणको दरवाज़ेके बाहर ढकेलती है]

बाप—चला गया । तुमने उसे भेज दिया ? श्रवणकी माँ, तुमने मुझसे किस जन्मकी दुश्मनी निकाली ? मेरे बाप-दादाकी मिट्टी ख़राब हो गई ! मेरे ख़ानदानकी नाक कट गई !

[रोने लगता है]

यह कंगन मेरे पास मेरे पुरखाओंकी अमानत थे, मेरे बच्चेके लिए । लाख बरकतें थीं इस अमानतमें, लाख अरमान थे, असीसें थीं इन कंगनोंमें ! यह पीढ़ियोंसे चले आ रहे थे । लोग पत्थरकी पवित्रताको बनाये रखते हैं और मेरे बाप-दादाके सोनेको आज मिट्टीमें मिला दिया गया ।

[फिर चारपाई पर बैठ जाता है]

मैंने इन कंगनोंको तब भी नहीं बेचा जब लड़ाईके दिनोंमें इनकी कीमत ड्योढ़ी और दुगुनी हो गई थी । कई-कई बार कर्ज़ लेकर ढेरों रुपये सूद देनेपर भी मैंने इन कंगनोंको हवा नहीं लगने दी । मैं भूखा रहा, नंगा रहा, मैंने कैसे-कैसे दिन नहीं देखे लेकिन मैंने ख़ानदानकी इस अमानतको सीनेसे लगाये रखा ।

अब यह कैसे दिन आ गये हैं ! वह पुरानी बातें कहाँ गईं ? लोग भूखे मर जाते थे और साथके घरमें पता न चलता था । छः छः दिन चूल्हेमें आग न जलती थी लेकिन घरवालोंके चेहरोंमें क्रक न आता था । अब तो लोग अपनी गरीबीका, अपनी ज़रूरतोंका टिंढाग पीटते रहते हैं, अपनी माँगांकी नुमायश करते फिरते हैं । अब यह कैसे दिन आ गये हैं ! लोग बेटा माँगते हैं ताकि खानदान चले, ताकि कोई बड़ोंकी परम्पराका बनाये रखे, ताकि कोई रखवाली कर सके उन रास्तांकी जिनपर बुजुर्गोंके पाँवके निशान नज़र आते हैं । परमात्मा, अब तू मुझे अपने पास बुला ले । इससे पहले कि मैं अपने बाप-दादा की इज्जत बेचकर अपना पेट भरूँ, हे भगवन् ! मेरी आँखें मुँद जायँ ।

बुढ़िया—सीताके बापू, तुम्हें क्या हो गया है ? बेटेकी अमानत तुमने बेटेके हवाले कर दी, तुम तो सुखरू हो गये । तुम्हारे सिरसे भार उतरा । अब वह जाने और उसका काम ।

बाप—जब मेरे सिरसे गुज़र जायेगी तो तुम्हारा जो जी चाहे किया करना । मेरे जीते जी यूँ मुझे मारना मेरे साथ घोर अन्याय करना है ।

बुढ़िया—सीताके बापू तुम्हारा बेटा जुग-जुग जिये । ऐसे दस जोड़ी कंगन बना लेगा । चार दिनकी बात है । जब उसकी नौकरी लग जायेगी तो घरमें फिर लहर-बहर हो जायेगी । तुम क्यों अपना दिल छोटा करते हो ?

बाप—आजकल ज़मानेको आग लग गई है ।

बुढ़िया—बाहर भिखारी किस तरह बेसुध पड़ा सो रहा है ! इधर दिन डूबा और उधर वह सो गया ।

बाप—सीता भी सो गई है । जवानीमें काँटों पर भी नींद आ जाती है ।

बुढ़िया—नींद आती है उन्हें जो चिन्ताओंसे ऊपर हो जाते हैं जैसे बाहर

भिखारी है—या उन्हें जिन्हें अभी कोई चिन्ता लगी ही नहीं, जैसे हमारी सीता ।

बाप—अरी सीताकी माँ, तुम सारी उमर मुझे शिक्षा देती रहों । मैं उमर भर तुम्हारे उपदेश सुनता रहा हूँ पर आज तुमने मुझे सख्त चोट पहुँचाई है ।

बुढ़िया—आदमीको ज़मानेके साथ-साथ चलना चाहिए । जैसा वक्त हो वैसा ही आदमीको बन जाना चाहिए ।

बाप—खानदानकी कोई मान-मर्यादा होती है । बड़ोंका कोई लिहाज़ होता है । इस तरहकी कोई परम्परा जिसके लिए लोग जान तक कुर्बान कर देते हैं ।

[बाहर गलीमें पद-चाप]

बुढ़िया—शायद श्रवण आ रहा है ।

बाप—हाँ वही है, बट्ज़ात ! अपने खानदानकी इज्ज़तको कोई बेचने निकले तो कितनी जल्दी बेचकर आ जाता है !

श्रवण—[भाते हुए] बापू, तुम चिन्ता न करो । तुम्हारे खानदानकी इज्ज़त पर कोई बट्टा नहीं लगा ।

[जेबसे कंगन निकालता है]

बुढ़िया—क्यों बाज़ार बन्द हो गया ?

बाप—[खुश होकर] तुम कंगन वापिस ले आये ? भगवानने मेरी मुन ली !

श्रवण—बापू, बाप-दादाकी जिस विरासतको तुमने सोना समझकर सारी उमर छातीसे लगाये रखा वह पीतल है, वह खोट है । बाज़ारमें अँकवाने पर दो कौड़ी भी उसका मूल्य नहीं निकला ।

[कंगनोंको क्रश पर फेंकता है]

बाप-बुढ़िया—[दोनों] हैं !

श्रवण—सारी उमर तुम भूठको सच समझकर अपने आपको धोका देते रहे हो। तुम्हारे बापके बापने धोखा खाया और तुम सब उसी धोखेके जालमें जकड़े चले आये। बाप-दादाकी जिस देनके लिए तुम जान तक क्रूरवान करनेको तैयार थे वह तो कोरा भूठ है, छल है, कपट है।

बाप—यह कैसे हो सकता है ?

श्रवण—चार पैसेकी मटकी लेते वक्त हम उसे ठोंक बजा लेते हैं, मगर माँ बापके आदर्शोंको, माँ-बापकी परम्पराओंको हमने कभी नहीं परखा। कितना मुलम्मा, कितनी बनावट, कितना खोट, पीढ़ी दर पीढ़ी चला आता है और लाखों कमौटियाँ बेकार पड़ी रहती हैं, लाखों तराजू जंग खा जाते हैं।

बाप—मैं बरबाद हो गया !

श्रवण—जिस नियामतको तुम देख-देखकर जीते रहे, जिस सौगातको मायेपर रखकर तुम अपनी जिन्दगीको सफल समझते रहे, जिस देनके गुण गाते तुम्हारी ज्ञान न थकती थी, जिससे तुम्हारे लाखों अरमान जुड़े थे, वह तो केवल छलना थी, भूठ था, धोखा था।

बुढ़िया—मैं तो हैरान हो रही हूँ, सीताके बापू !

बाप—मैं तो लुट गया सीताकी माँ !

श्रवण—लुटता तो आदमी तब है जब उसके पल्ले कुछ हो। तुम जिस चीज़को छातीसे लगाये बैठे थे, वह तो खोट थी, भूठ था, फरेब था।

बुढ़िया—मैं तो कहती हूँ अगर कोई दुकान खुली है तो बेशक तुम इस मुराँको ही बेच आओ। बेटा यह वक्त तो गुज़र जायेगा।

श्रवण—भूख भी क्या चीज़ है ! भूखमें आदमीकी आँखें खुल जाती हैं।

पेट भरा आदमी कई बार खानेके नशेमें खानेकी गानूदगीमें औंधा पड़ा रहता है ।

आवाज़—सीताके बापू ! तुम्हें सेठजी बुला रहे हैं ।

[यह आवाज़ सेठ मुरलीमनोहरकी चौबारेकी खिड़कीमेंसे आती है जो घरके पाँछे आँगनमें खुलती है]

बुढ़िया—यह तो सेठानीकी आवाज़ है ।

बाप—इतनी रात गये !

वही आवाज़—सीताके बापू !

बाप—आता हूँ ।

बुढ़िया—हो आओ कोई काम ही होगा ।

[बाप जूता पहनकर जाता है]

श्रवण—मुझे सेठानीकी आवाज़ ज़रा नहीं भाती, जैसे कोई फटा बाँस हो ।

बुढ़िया—जब भूख लगी हो तो कुछ अच्छा नहीं लगता बेटा ! यह तो बेचारी है ही ऐसी ।

श्रवण—सीता भूखी-प्यासी सो गई है ।

बुढ़िया—मेरी जवान बेटा । यह उमर होती है जब माएँ बलाएँ लेते नहीं थकती अपनी बेटियोंकी ।

श्रवण—अब तो बहुत रात हो गई है । बाज़ार बन्द हो रहे होंगे ।

बुढ़िया—मालूम होता है आजकी रात...

श्रवण—भूखे कटेगी ।

बुढ़िया—कुछ कट गई है कुछ कट जायेगी ।

श्रवण—इस शहरमें कई लोग हमसे भी गये गुज़रे हैं ! कई-कई दिन जो अनाजकी शकल भी नहीं देख सकते ।

बुढ़िया—आदमी भले ही भूखा रह ले लेकिन उसका धर्म बना रहना चाहिए ।

श्रवण—चाँदकी चाँदनी बाहर बरामदेमें फैल रही है ।

बुढ़िया—आज शायद पूरा चाँद है ।

श्रवण—भिखारीसे ज्यादा बेसुध उसका कुत्ता सोया पड़ा है । ऐसे कुत्ते क्या खाक रखवाली करते होंगे ।

बुढ़िया—मिशन स्कूल वाली मेमका कुत्ता है यह ।

श्रवण—वही जो मारा मारा फिरने लग गया था ?

बुढ़िया—हाँ, और फिर बाबाके पीछे हो लिया ।

श्रवण—साथी अच्छा ढूँढ़ा है उसने !

बुढ़िया—इस कुत्तेकी बड़ी बुरी आदतें हैं । यहाँ-वहाँ सूँघता फिरता है ।

सीता—[सोतेसे एकदम उठ जाती है और नींदमें ही बातें करना शुरू कर देती है]

मैं माँगने नहीं जाऊँगी । मुझे शर्म आती है । किसीसे कुछ माँगना हो तो मुझे पसीना आ जाता है ।

श्रवण—[सीताकी चारपाईकी ओर जाते हुए] सीता ! सीता ! सीता !

सीता—मुझे बड़ी भूख लगी है । जब मुझे भूख लगती है मेरा जोड़-जोड़ दुखने लगता है ।

बुढ़िया—[सीताकी ओर जाकर] सीता, मेरी बच्ची सो जाओ ।

सीता—मेरा भैया आयेगा तो मैं उसे पूड़े तलके खिलाऊँगी, भैंसका ताज़ा दूध और पूड़े ।

[साता फिर वहीं लेटकर सो जाती है]

श्रवण—फिर सो गई ।

बुढ़िया—बेसुध सोई पड़ी है ।

श्रवण—शायद वापू आ रहे हैं ।

बुढ़िया—हाँ, उन्हींके पाँवकी आहट है ।

श्रवण—बहुत जल्दी लौट आये हैं ।

बुढ़िया—सेठ मुरली मनोहरसे कोई रिश्ता थोड़ी गाँठना था । कोई बेगार ही डाली होगी सेठजीने ।

बाप—[भाते हुए उसके हाथमें मिठाईकी टोकरी है] लो जी भरके खाओ । पड़ोसी हों तो ऐसे । पिछली खिड़कीमेंसे सेठ जीने सुन लिया था कि आज हमारे घरमें खानेको कुछ नहीं है । टोकरी भरकर मिठाई मुझे दे दी । मैं नहीं नहीं करता रहा लेकिन उन्होंने मेरी एक न सुनी । ले बेटा, तुम खुद भी खाओ और हमें भी खिलाओ ।

श्रवण—[अभी तक बापकी ओर देख रहा है जैसे कोई गहरी सोचमें डूब गया हो]

बाप—क्यों ? तुम यूँ पथराई हुई आँखोंसे मेरी तरफ़ क्यों देख रहे हो ? मिठाई खुद भी खाओ, अपनी बहिनको भी जगा कर दो ।

मिठाईकी टोकरी श्रवणके हाथमें थमा देता है]

श्रवण—नहीं, नहीं, नहीं, मैं मिठाई नहीं खाऊँगा । मुरली मनोहर सेठके साथ हमारा क्या लेन-देन है ? यूँ दान देकर हमारा अपमान करनेका उसे क्या अधिकार है ?

बाप—तुम्हें हो क्या रहा है ?

श्रवण—यूँ दान देकर सेठने हमारी गरीबी पर मुँह चिढ़ाया है ।

बाप—बेटा !

श्रवण—यह तुम्हारे हाथमें टार्च कैसी है ?

बाप—सेठजीने दी थी कि बाहर गलीमें अन्धेरा होगा ।

श्रवण—चाँदकी चाँदनी देखो कैसी खिली हुई है और सेठने इन्हें टार्च दी है अन्धेरेसे बचनेके लिए, चारोंसे बचनेके लिए ? इधर मिठाई देते हैं उधर उसे चारोंसे बचानेका इंतज़ाम करते हैं । हमारा कोई दुश्मन नहीं, हमारा कोई बैरी नहीं, हमारे पास है ही क्या जो कोई चुरा ले जायेगा ? मैं ऐसी मिठाईको हाथ नहीं लगाऊँगा ।

बुढ़िया—अब ले जो आये हैं तो बेटा खा ही लो ।

श्रवण—मुझे इसमें से बू आती है । नहीं मैं इसे छूने तकको तैयार नहीं ।

[टोकरीको फर्शपर फेंक देता है]

यह जूठन है, पूंजीपतिकी रसोईकी जूठन, अपने बच्चे-खुचे टुकड़ों-को यह गरीबोंमें बाँटनेके लिए भेज देते हैं । लेन-देन बराबरके लोगोंमें होता है । काशी चाचाने हमें उधार नहीं दिया, हमें बराबरका तो समझा है । यूँ बिना माँगे दान देकर हमारा अपमान करना, यह चालाकी है सेठ मुरलीमनोहरकी हमें हमेशा हमेशाके लिए अपाहिज करनेके लिए । आज उसने खुद दिया है, कल तुम उससे माँगनेके लिए दौड़ोगे । परसों हमारी आँखें उसके दरवाज़े पर लग जायेंगी । हम लूले होकर रह जायेंगे, लंगड़े होकर रह जायेंगे । इस जूठनका ज़हर हमारे स्वाभिमानको खतम कर देगा । मेरी बहिनकी आँखोंमें लज्जा नहीं रहेगी । मेरी माँके माथेकी आभा उड़ जायेगी । बापू , तुम अपने घरमें ऊँची आवाज़में बोल नहीं सकोगे कि कहीं मुरलीमनोहर सेठकी आँख न खुल जाये ।

[सीता जाग उठती है और टुक-टुक सबकी ओर देखती है]

बुढ़िया—सच कहता है, मेरा बेटा ।

श्रवण—सेठका न्याय तब कहाँ गया था जब मंज़िलपर मंज़िल, मंज़िलपर मंज़िल वह बनवाता गया । उसने हमारे आंगनकी सारी धूप रोक ली है । चौबारेकी खिड़कियोंमें खड़े होकर, झुक-झुककर हमारी तरफ़ देखते हैं । उनकी नज़रें छींटोंकी तरह हमारे आंगनमें पड़ती हैं । मेरी बहन अपने घरके आँगनमें सिरसे पल्लू उतारकर नहीं बैठ सकती । मुरलीमनोहरकी मुंगटी पर आकर बैठने वाली चीलकी बीठें मेरी माँके चौकेमें गिरती रहती

हैं। मैं कहता हूँ, हमारे घर पर सेठकी नज़र है बापू ! आज तुमने यह मिठाई खाई, दस दिनमें तुम्हारा यह घर छिन जायेगा। तुम टार्च लेकर इसकी रखवाली करते रहना, वह दिन-दहाड़े इसे लूट ले जायेंगे।

[बाहर एकदम भिखारीका कुत्तेको मार-मार कर भगानेका शोर]

भिखारी—ठहर, तेरी मेमका सत्यानास।

सीता—[उठते हुए] क्या हुआ बाबा ?

श्रवण—[बरामदेमें आकर] क्या है ?

भिखारी—यह कुत्ता ! इसकी लाख खातरे करो। ज्ञातका तो आखिर कुत्ता है। मेरी आँख खुली तो मैंने देखा मेरी लुटिया चाट रहा है।

श्रवण—और तुमने इसे पाल क्यों रखा है ?

भिखारी—अरे, कहाँ बेटा आप ही आप मेरे पीछे फिरने लग गया है।

सीता—मैं तो समझती थी कि तुम्हारी रखवाली करता है।

बुढ़िया—[बरामदेकी तरफ़ आते हुए] रखवाली करते करते कई घरपर कब्ज़ा कर लेते हैं।

[बाप हैरानोके साथ यह सब कुछ देख रहा होता है, सुन रहा होता है कि पर्दा गिरता है]



दिया बुझ गया



पात्र :

राजी

नूराँ

अलीजू

सुलतान मीर



[एक हरी-भरी पहाड़ी ! पहाड़ीकी गोदमें एक नदी बह रहा है । पदा इस पहाड़ीके ऊपर एक छोटेसे कश्मीरी घरके बड़े कमरे परसे उठता है । कमरेमें बाईं ओर दीवारमें एक खिड़की है । यह खिड़की नदीकी ओर खुलती है । सामने दीवारमें एक छोटा सा दरवाज़ा है । दाईं ओर का दरवाज़ा कमरेमें आने जानेके लिए है ।

कमरेमें एक चारपाई है । एक साधारण लकड़ीका सन्दूक है । एक ढाली-सी चिरचिराती-सी पेटी है । एक कोनेमें चरखा पड़ा है, जिसे बुढ़िया कात रही है । सन्दूक पर बुढ़ियाका जवान बेटा सुलतान मीर बैठा है । अपनी टाँगें उसने सामनेकी पेटी पर रखी हुई हैं । सुलतान मीर विचारोंमें खोया हुआ दिखाई देता है । खिड़कीमें से दूबते हुए सूरजकी किरणें बुढ़िया के चेहरेपर पड़ रही हैं । समय—सोँभ, जो रातमें परिवर्तित होती जा रही है ।]

नूरों--[चर्खा कातते हुए] अब तू तेल लाने जा, घरमें तेल बिलकुल खत्म है । बस थोड़ा सा दियेमें होगा और दियेको रातभर जलना है ।

सुलतान—आज कहीं रात भर जलेगा ? अलिया बच आता है वह हमेशा दिया बुझाकर सोता है ।

नूरों—[बुदियाका चेहरा एक दम खिल जाता है] अच्छा, अच्छा, यूँ बेकार बातें न बना । सवेरेसे टालमटोल कर रहा है ।

सुलतान—[बात काटते हुए] लेकिन अम्माँ राजी अभी तक नहीं आई । इधन क्या बोनने जाती है वहींकी हो जाती है ।

नूरों—तू हर किसीको अपने जैसा बेकार न समझा कर ।

सुलतान—अम्माँ, मैं सोचता हूँ कि राजीको कहीं रास्तेमें अलिया न मिल गया हो ।

नूरों—मैं कहती हूँ, तू बेकार बातें न बना । अलिया शामसे पहले क्या कभी बाहर निकलता है ?

सुलतान—हाँ तेरी यह बात तो ठीक है, अम्माँ ! लेकिन क्या मालूम आज पहले ही चल पड़ा हो ।

नूरों—पहले ही चल पड़ा हो ? जैसे उसे अपनी जान प्यारी नहीं । उस तरफ़ धरतीका चप्पा चप्पा आज बलवाइयों और लुटेरोंसे अट पड़ा है ।

सुलतान—अम्माँ अलिया और उसके साथी कभी-कभी बड़ी मौज करते हैं ।

नूरों—मुझसे क्या छिपा हुआ है ।

सुलतान—नहीं, अम्माँ, उन दिनोंकी बात और थी, कई-कई दिन भूखे रहना पड़ता था । आजकल तो एक लुटेरेको घेरो और क्या पता उसके पास पाँच सेर सोना निकल आये ।

नूरों—कभी तूने अपने भाईको भी लूटका माल घरमें लाते देखा है ?

सुलतान—तू सोचती होगी अम्माँ, राजीकी बालियाँ क्या सचमुच उसकी सहेलीने उसे भेजी थीं ।

नूराँ—[सूतकी डोरी रोकते हुए] सुलतान, मैंने तुझसे कई बार कहा है कि तू अपने भाईकी बातों पर शक न किया कर ।

सुलतान—अम्माँ, राजीको वह बालियाँ कितनी भली लगती हैं ।

नूराँ—काश, तूने उसे अपने माँ-बापके घर देखा होता ! यह लड़की सोने से लदी रहती थी, जैसे आसमानसे उतरी हो । सुन्दर, नाजूक हँसमुख...

सुलतान—अब तो...

नूराँ—जिसकी आँखोंके सामने उसके पाँच भाइयोंको ढेर कर दिया गया हो, जिसकी दो और बहिनोंका पता न हो, जिसकी माँको उसके बच्चोंके सामने तड़पा-तड़पा कर मारा गया हो, जिसके बापको उल्टा लटका कर जलाया गया हो, जिसके बरसों पुराने घरके तिनके-तिनकेको लूट लिया गया हो, उसके होंठों पर मुसकराहट नहीं खेला करती, सुलतान !

सुलतान—लेकिन जब अलिया घरमें होता है तो लगता है जैसे राजी अब हँसी कि हँसी ।

नूराँ—मैं कहती हूँ सुलतान, घरमें बेकार पड़े रहनेसे तेरा दिमाग़ खराब हो गया है । और तू इस तरह टॉंग पर टॉंग रखकर न बैठ, मुझे तुझसे डर लगता है ।

सुलतान—मैंने इस उम्रमें कुछ कम तो नहीं कमाया ।

नूराँ—मैं भी तो सुनूँ कि तूने क्या तीर मारा है ।

सुलतान—मैं कहता हूँ, अम्माँ ! उस लुटेरेको पहली गोली मेरी लगी थी जो राजीको घसीटे लिये जा रहा था ।

नूराँ—अच्छा, तेरी ही सही ।

सुलतान—लेकिन अलिया यह क्यों कहता है कि लुटेरा उसकी गोली से गिरा ?

नूराँ—उसे कभी ऐसी बेकार बातोंकी फ़ुर्सत नहीं होती ।

सुलतान—पिछली बार नदीके किनारे पत्थर पर बैठकर अलिया और राजी आधी रात तक बातें करते रहे थे ।

नूरों—वह तो उसे दुश्मनके जुल्मोंकी कहानियाँ सुनाता रहता है । वह तो उसे बताता है कि किस तरह काश्मीरके शेर, लुटेरोंका निशान तक मिटानेके लिए लड़ रहे हैं, वह उसे बताता है कि किस तरह छिपा जाता है, किस तरह भेस बदला जाता है । राजी को अब पिस्तौल चलाना आता है, बन्दूक चलानी आती है, हथगोला फेंकना आता है ।

सुलतान—नहीं अम्माँ, अलियेने राजीसे ज़रूर कहा होगा कि लुटेरेको पहली गोली उसकी लगी ।

नूरों—तो फिर क्या हुआ ?

सुलतान—मैं कहता हूँ कि अगर मैं न होता तो राजी कभी लुटेरेके चंगुलसे न बच सकती थी ।

नूरों—और जहाँ तू नहीं था वहाँ दुश्मनोंको कैसे खदेड़ा गया ?

सुलतान—अम्माँ, अलियेका निशाना इतना अच्छा नहीं है ।

नूरों—शायद तेरी बात ठीक ही हो ।

सुलतान—अलियेने ज़रूर राजीसे कहा होगा कि लुटेरेको पहली गोली उसकी लगी ।

नूरों—तो फिर क्या हुआ ?

सुलतान—जब मैं राजीसे कहता हूँ कि पहली गोली लुटेरेको मेरी लगी, तो उसे जैसे यक़ीन नहीं होता । उसने मुझे कभी निगाह उठाकर भी तो नहीं देखा ।

नूरों—सात सात पदोंमें ढकी-छुपी रहनेवाली काश्मीरिनें आज बेशक यतीम हो गई हैं, सुलतान ! बेशक ज़ालिमाँने घरवालोंसे घर छीनकर उन्हें भटकने और ठोकरें खानेपर मजबूर कर दिया है,

लेकिन किसीकी निगाहोंकी शर्म कोई नहीं लूट सकता, किसीकी पलकों तलेकी लज्जा कोई नहीं चुरा सकता, सुलतान !

सुलतान—शायद राजी आ रही है ।

नूरों—[उच्चककर बाहर झँकती है] नहीं तो ।

सुलतान—हवाका कैसा ठंडा झोंका आया है !

नूरों—आज कल उमस ज्यादा होती है ।

सुलतान—घास पर गोरे-गोरे पाँव रखती राजी ऐसे चलती है, जैसे बरफके गोले गिर रहे हों ।

नूरों—आज राजीकी बहनें, आज काश्मीरके जन्नतकी हूरें परायी गलियोंमें कौड़ियोंके मोल बिक रही हैं ।

सुलतान—मैं सोचता हूँ, अम्माँ, राजीपर कोई क्योंकर हाथ उठा सका होगा ? उसकी मोटी मोटी आँखोंसे बेबसीको झलकते हुए देखकर किसीका दिल न पसीजे, मैं तो हैरान ही होता रहता हूँ ।

नूरों—काश, तू ने राजीकी बड़ी बहिनको देखा होता, मेरे अलियेकी उम्रकी थी । बचपनमें दोनों इकट्ठे खेला करते थे । अभी दस सालकी थी कि उसे पर्दा करवा दिया गया । हाथ लगनेसे मैली होती थी, देखेसे भूख मिटती थी ।

सुलतान—फिर तो राजी मेरी ही उम्रकी होगी ।

नूरों—नहीं, तुझसे बरस डेढ़ बरस बड़ी है ।

सुलतान—राजी अभी तक नहीं आई ।

नूरों—हाँ, बेटा, ज़रा देख तो सही आज इस लड़कीने इतनी देर क्यों लगा दी ।

[सुलतान उठकर दरवाज़ेकी ओर जाता है]

सुलतान—अम्माँ, राजी आ रही है । हवा तेज़ हो गई है । और तेज़ हवामें उसके बाल उड़-उड़कर मुँह पर पड़ रहे हैं । वह कुछ गा भी रही है ।

नूरों—अच्छा, तू यहाँ आकर बैठ जा । आँखें फाड़े वहाँ न खड़ा रह ।

[राजीके गानेकी आवाज़ आती है]

सुलतान—हाँ, मुझे देखकर तो वह गाना भी बन्द कर देती है ।

[राजीके गानेकी आवाज़ और भी ऊँची हो जाती है]

नूरों—[प्रसन्नतासे] राजी कितना प्यारा गाती है !

सुलतान—“बढ़े चलो बढ़े चलो, बहादुरो !”

नूरों—यह गीत एक बार हमारे लीडरने हमारे साथ गाया था ।

[गीतकी ध्वनि ऊँची हो जाती है, और ऊँची हो जाती है,
फिर बन्द हो जाती है और माँ बेटा अभी गीतमें मस्त होते हैं
कि राजी प्रवेश करती है]

नूरों—राजी बेटा, आ गई ?

राजी—[राजीके सिर पर इंधन है] अम्माँ, मुझे देर हो गई ?

नूरों—[इंधन उतारते हुए] कोई बात नहीं बेटा, लेकिन हमें इतना
इंधन क्या करना था ?

राजी—मैंने सोचा, कल कौन जायेगा ।

नूरों—उठ सुलतान, अन्दर कोठरीमें फेंक दे ।

सुलतान—अच्छा, अम्माँ ।

[सुलतान इंधन उठाकर सामनेके दरवाज़ेमें से अन्दर जाता है ।

राजी—अम्माँ !

[फिर सहसा रुक जाती है]

नूरों—हवा ज़्यादा तेज़ होती जा रही है ।

[राजी खिड़कीके पास खड़ी हो जाती है]

राजी—अम्मा !

[राजी फिर रुक जाती है । बूढ़ी माँको जैसे पता हो कि वह
क्या पूछना चाहती है, इसलिए जान-बूझकर वह सुनी अनुसुनी
कर रही है]

नूरों—[उठकर सामने दरवाज़ेके पास जाकर आवाज़ देती है] सुल्तान बेटा इंधनको कोठरीमें रखकर फिर दोर-डंगरोंको दालानमें कर देना । हवा बहुत तेज़ हो रही है ।

[कुछ देर खिड़कीके पास खड़ी रहकर राजी गीत गुनगुनाती है, फिर सहसा रुककर सामने दीवार पर कोयलेसे खिंची रेखाओंको गिनने लगती है]

नूरों—[राजीको लकीरें गिनता हुआ देखकर] राजी बेटा, दीवारकी लकीरें क्यों गिन रही है ? मुझसे पूछ । जुमा जुमा आठ दिन, हफता और इतवार, आज पूरे दस दिन हो चुके हैं, आज अलिया ज़रूर आयेगा । मेरा बेटा वादा करता है, तो पूरा करता है ।

राजी—बाहर भक्कड़ कितना तेज़ हो रहा है ।

नूरों—मैं सोचती हूँ पानी ज़रूर बरसेगा । मेरा बेटा जब आता है साथ बारिश लाता है । आजकलका मेह फसलके लिए अच्छा है ।

राजी—पिछली बार अम्माँ चाँदनी रात थी और नीचे नदी किनारे बैठ कर अलियेने मुझे लम्बी कहानियाँ सुनाई थीं ।

नूरों—लेकिन आजकी रात तो अंधेरी होगी, बेटी !

राजी—माँ, अलिया कैसी कहानियाँ सुनाता है ! जी चाहता है मैं सुनती रहूँ, सुनती रहूँ ।

नूरों—राजी बेटा, अलियेका बाप भी यूँ कहानियाँ सुनाता था, लेकिन उसकी कहानियाँ हुआ करती थीं राजोंकी कहानियाँ, रानियोंकी कहानियाँ, परियोंकी कहानियाँ, शहज़ादियोंकी कहानियाँ । और आज कलकी कहानियाँ तो औरकी और हो गई हैं ।

राजी—हाँ अम्माँ, नौजवान काश्मीरियोंकी कहानियाँ जो अपने देश के लिए जानें कुर्बान कर रहे हैं । और कहानियाँ उन सताई

हुई वहनोंकी, उन मासूम बच्चोंकी, जिन्हें लुटेरे पकड़ कर ले गये ।

नूरों—आज काश्मीरको अपने एक-एक सपूतकी ज़रूरत है ।

[अवकाश]

राजी—अम्माँ...

नूरों—क्यों बेटा, तू रुक क्यों गई ?

राजी—माँ, मैं एक बात कहूँ ?

नूरों—कहो बेटा !

राजी—मुझे डर लगता है कि कहीं तुम मना न कर दो ।

नूरों—वह कौन-सी बात है, जो मैं अपनी राजी बेटाको मना कर दूँगी ?

राजी—माँ, मेरा जी चाहता है कि मैं अलियेके कन्धेसे कन्धा मिलाकर लड़ूँ, वहाँ जहाँ गोलियोंकी बौछार होती है, वहाँ जहाँ हमारे बहादुर जाकर दुश्मनकी खोज लगाते हैं । मैं एक बदला अपने अब्बाका लेना चाहती हूँ, और मेरी बहिनें अगर उनमें मेरे बाप का लहू है, तो वह एक दिन फिर काश्मीर लौट आयेंगी, ज़रूर आयेंगी, ज़ालिम लुटेरोंकी कैद तोड़, उनकी जड़ें काटकर ।

नूरों—अलिया अब आता ही होगा, शाम ढलती जा रही है ।

राजी—बाहर भक्कड़ कितने जोरका है ।

[खिड़कीसे हाथ बाहर निकालकर]

मोटी-मोटी बूँदें भी पड़ रही हैं ।

सुलतान—[सामनेके दरवाज़ेसे आते हुए] अम्माँ, ढोर-डंगरोंको कोई और सम्भाल ले, मैं तो इंधनवाली कोठरीमें एक सपोलियेसे निवृत्त रहा था ।

नूरों—मरे तेरी माँ, ढोर-डंगर अभी तक बाहर हैं ?

राजी—अच्छा अम्माँ, मैं जाती हूँ, बस एक घोड़ी मेरे क़ाबूमें नहीं आयेगी ।

[राजी सामनेके दरवाज़ेसे जल्दी-जल्दी कदम उठाती जाती है]

नूरों—इतनी देर तक सपोलिया तुझसे क्या कहता रहा ?

सुलतान—मैंने बड़ी मुश्किलसे उसे ठिकाने लगाया । काले रंगका बड़ा ज़हरीला था ।

नूरों—साँपको साँभके समय नहीं छेड़ते । वह तेरा क्या कर लेता ?

सुलतान—अम्माँ, तू तो अभी तक वहममें पड़ी है, अपने दुश्मनका कभी भरोसा नहीं करना चाहिए, चाहे वह सगा भाई ही क्यों न हो ।

नूरों—जभी तू घरमें बैठ गया है । आज कितने दिन हो गये हैं तुझे ? अलिया अकेला ही जाता है और अकेला ही आता है ।

सुलतान—यहाँ मैं क्या बेकार रहता हूँ ?

नूरों—यहाँ तू मेरा क्या सँवारता है ?

सुलतान—अम्माँ, तू तो आज यूँ ही झुँझला रही है ।

नूरों—अच्छा, जा अकेली लड़की घोड़ी नहीं संभाल पायेगी ।

सुलतान—अच्छा अम्माँ... अच्छा...

[जाता है]

नूरों—अभी तक तेल लाने नहीं गया, दिया जला दूँ ।

[दिया जलाते हुए स्मृतियोंका जैसे एक तूफ़ान बूढ़ी

अम्माके चेहरे पर उमड़ आता है ओर वह एक

दीर्घ निश्वास लेती है]

यह दिया ! मिट्टीका रंगीन दिया । तीस सालसे मैं इसे जला रही हूँ । हाथ पाँवमें मेहदी रचाकर जब पहली बार मैं इस घरमें आई थी, मार्चिसकी डिब्बिया पकड़ाते हुए मेरी सासने कहा था: “बेटा, यह दिया अब तू जलाया करेगी, दिया जलाया तू करेगी और उसे बुझाया मेरा बेटा करेगा ।” और उम्र भर अलियेका बाप रात गये फूँक मार कर इस दियेको बुझाता रहा । और दिया

बुझाकर वह कितनी मीठी कहानियाँ सुनाया करता था। एक शाहज़ादेकी कहानी जो सारी उम्र एक परीकी तलाशमें भटकता रहा और फिर उसे वह मिल गई। एक देव उसे उठाये लिये जा रहा था और शाहज़ादेने जानपर खेलकर अपने सपनोंकी रानीको बचा लिया। एक परीकी कहानी, जो नदी किनारे अपने महलकी खिड़कीमें खड़ी होकर अपने दिलके राजेका इन्तज़ार किया करती थी। और जिस दिन अलियेका बाप घरमें न होता, यह दिया रात भर जलता रहता था। खिड़कीमें पड़ा हुआ दिया, जैसे दूर किसी मुसाफ़िरको रास्ता दिखला रहा हो। झिलमिलाता दिया, जैसे किसीके मीठे इन्तज़ारमें वह थकता न हो। और फिर अलियेका बाप चला गया। और दिया रातभर जलता रहता। चाहे किसी मुसाफ़िरको न भी आना होता, तो भी दिया जलता रहता। कोई नहीं था जिसका इसे इन्तज़ार हो, फिर भी इसकी लौ एक दिनके लिए मद्धिम न हुई। और फिर अलिया मेरा ज़वान बेटा दिया बुझाने लगा। तीस साल हुए अलियेका बाप बिलकुल अलियाकी सूरत था। बिलकुल इसी तरह बाहरसे आता, और ऐसे ही नीचे आकर आवाज़ देता। ऐसे ही उसका मैं इन्तज़ार किया करती थी, जैसे राजी खिड़कीमें खड़ी होकर बाहें बाहर निकाल-निकालकर रास्ता देखती रहती है—आज हवा कितनी तेज़ है, आज हवा कितनी ठंडी है, आज बारिश होगी, नहीं होगी...

[हवासे दियेकी लौ टिमटिमाती देखकर नूरों]

खिड़काँके जालीदार पट बन्द कर देती है]

अभी तक सुलतान तेल लाने नहीं गया और घरमें तेलकी बूंद नहीं।

[बाहरसे राजाकी चीख सुनाई देती है।

नूरों दौड़कर दरवाज़े तक जाती है]

नूरों—राजी, सुलतान बेदा, क्या हुआ ?

सुलतान—[दौड़ता हुआ] कुछ नहीं अम्माँ, राजीके पाँवपर घोड़ीका पाँव आ गया था और राजी डरके मारे गिर पड़ी । मुझे बोलत दे मैं तेल ले आऊँ ।

नूरों—चोट तो नहीं आई मेरी बच्चीके ।

सुलतान—नहीं अम्माँ, चोट क्या आती ?

नूरों—लेकिन तू इस तरह हॉफ क्यों रहा है ? तेरा दिल इस तरह क्यों धड़क रहा है ? तेरा सीना धोंकनीकी तरह चल रहा है ।

सुलतान—कुछ नहीं अम्माँ, मुझे लगता है जैसे काले सपोलियेकी माँ मेरा पीछा कर रही है ।

नूरों—पगले, तू मुझसे कह रहा था कि मैं वहम करती हूँ, वहममें पड़ी रहती हूँ ।

[दूर कहींसे अज्ञानकी आवाज़ आती है]

ले मुन, मसजिदमें अज्ञान हो रही है । जबसे घरमें बैठे हैं, क्या मजाल जो तूने कभी नमाज़ पढ़ी हो, तूने कभी मसजिद जानेका नाम नहीं लिया ।

सुलतान—अम्माँ, नमाज़में कुछ नहीं रखा । मैं बहुत नमाज़ें पढ़कर देख चुका हूँ ।

[अज्ञान और भी ऊँची होती है]

नूरों—ले मुन, अल्लाहका नाम मुन ।

[माँ बैठे मसजिदसे आती हुई अज्ञानकी आवाज़ सुनते हैं । सुनते-सुनते उनके चेहरेपर एक चमक सा झलकने लगती है]

यह अज्ञान, एक बुलावा है अल्लाहकी तरफ़ मुँह करनेका । यह अज्ञान एक बुलावा है अल्लाहके सामने सिर झुकानेका, उसके कहरसे डरने का । यह अज्ञान याद कराती है मुसलमानको सदाक़त,

इंसाफ़, शराफ़त । यह अज़ान सुनकर मुसलमानोंमें अमीर और गरीबका भेद नहीं रहता । सभी एक सफ़में खड़े हो जाते हैं ।

[अज़ानकी आवाज़ अभी तक आ रही है]

सुलतान—[एक नशेमें] यह अज़ान याद कराती है मुसलमानको सदाक़त, इंसाफ़, शराफ़त ।

[मसजिदकी ओर मुँह फेरकर दोनों खड़े हो जाते हैं]

सुलतान—[स्वगत] यह अज़ान याद कराती है मुसलमानको सदाक़त, इंसाफ़, शराफ़त ।

[अज़ानकी आवाज़ बन्द हो जाती है]

नूरों—अच्छा बेटा, जाकर अब तेल ले आ । पता नहीं कहीं फिर बारिश न होने लगे ।

[सुलतान मीर जैसे नीरवताके सागरमें डूब-सा गया हो]

बेटा, मैं कहती हूँ जाकर तेल ले आ । अलिया अब आता ही होगा । कहीं ऐसा न हो कि उसके आनेपर दिया बुझा हुआ हो ।

सुलतान—[खिड़कीके पास खड़ा होकर अपने आपसे] यह अज़ान याद कराती है मुसलमानको सदाक़त, शराफ़त, इंसाफ़ ।

नूरों—बेटा, तू तेल लाने क्यों नहीं जाता ? मैं कहती हूँ रात हो रही है ।

सुलतान—[घबराकर जैसे अनिश्चित-सा] अम्माँ, आज तू मुझे तेल लानेके लिए न भेज ।

नूरों—क्या बड़बड़ा रहा है ? मैं कहती हूँ सामने तो गाँव है ।

सुलतान—[अपने माथेपरसे जैसे किसी वस्तुको मिटा रहा हो] अम्माँ, मैं कहता हूँ, तू आज मुझे तेल लानेके लिए न भेज ।

नूरों—तुझे क्या हो रहा है, सुलतान ? अभी तूने खुद ही तो बोतल माँगी थी ।

सुलतान—हाँ अम्माँ, लेकिन...

नूराँ—ले पकड़ बोतल, और उठ यहाँसे । एक कामके लिए तुझे कितनी बार कहा जाये ? और यह भी कोई काम है ? बस, बनियेकी दुकानपरसे बोतल भरवा ला, मैं कहती हूँ मुझे सताया न कर ।

सुलतान—जाता हूँ माँ ! तू तो ऐसे ही झुलझाने लगती है ।

नूराँ—झुलझाऊँ नहीं तो क्या करूँ ? तुझे न जाने क्या हो गया है । घरके काम-काजकी तुझे फ़िकर ही नहीं ।

सुलतान—घरका काम !

[माथेपर बल डालकर घृणा प्रकट करता है]

मैं तो...

नूराँ—[चीखकर] सुलतान !

सुलतान—[नर्म पड़ते हुए] कुछ नहीं अम्माँ, कुछ नहीं । न जाने मुझे कभी-कभी यह क्या हो जाता है ।

नूराँ—तेरे बापके पाँच गोलियाँ लगीं और पाँचो छ्वातीमें । वह सीना तान कर खड़ा हो गया । लोग कहते हैं कि आखिरी दम तक उसके होठोंसे आवाज़ आ रही थी, काश्मीर ज़िन्दाबाद, काश्मीर ज़िन्दाबाद !

सुलतान—हाँ, लेकिन काश्मीरका जो काफ़िरोँके साथ गठजोड़ है ।

नूराँ—[जोशमें] खामोश ! मैं तेरी ज़बान खींच लूँगी । मैं जानती हूँ आज कल तू किस संगतमें रहता है । काफ़िर कौन हैं ? वे जिन्होंने मासूम बच्चोंको नेज़ोंपर उछाला, वह जिन्होंने बेगुनाह औरतों पर हाथ उठाया, वह रब्बुलआलमीन है, रब्बुलमुसलमीन नहीं सुलतान !

सुलतान—[पागलोंकी तरह कानोंको हाथ लगाकर] तोबा अम्माँ, तोबा !

[फिर अपनेआपसे]

रब्बुल आलमीन है, रब्बुलमुसलमीन नहीं । रब्बुल आलमीन है,

रब्बुल मुसलमीन नहीं। रब्बुल आलमीन है, रब्बुल मुसलमीन नहीं।

[माँकी ओर देखकर]

अम्माँ, आज तू मुझे तेल लाने मत भेज, अन्दर मोमवत्तियाँ पड़ी हैं, आजकी रात उनसे गुज़र जायेगी।

नूराँ—अच्छा, तो तुझे मोमवत्तियाँ कहीं नज़र आ गईं ? अन्दर मोमवत्तियाँ वक्त-वेवक्तके लिए मैंने रख छोड़ी हैं। देखता नहीं ऊपरसे वक्त कौन-सा जा रहा है ? कुछ पता नहीं कल क्या होगा। मैं कहती हूँ तू जाकर तेल ले आ, मेरा अच्छा बेटा !

[राजाका प्रवेश। उसके कपड़े कीचड़से लथपथ हैं। उसका मुख क्रोधसे लाल है। सुलतान राजाको देखकर घबरा जाता है]

नूराँ—राजा बेटा, तेरे कोई चोट तो नहीं आई। [राजा चुप रहती है] मैंने तो इस कमबख्तसे कहा भी था, लेकिन यह किसीका कहा माने तब ना।

[जबसे राजा कमरेमें आई है; सुलतान मीर उसे कनखियोंसे देखता जा रहा है, परन्तु राजा उसकी आँखसे आँख नहीं मिलाती। उसके चेहरेपर कभी घबराहट, कभी क्रोध दिखाई देता है]

राजा बेटा, तुझे क्या हुआ है, कहीं चोट तो नहीं आई ?

[राजाके भीगे हुए कपड़ों और गीले बालोंको हाथ लगाकर देखती है]

सुलतान—[दाँत पीसकर अपनेको संयत करते हुए] अच्छा अम्माँ, मैं जाकर तेल लाऊँ।

[दरवाज़ेसे बाहर निकलते उसका कन्धा दरवाज़ेके एक पटसे टकराता है। और सुलतान तेज़-तेज़ ढग भरता हुआ चला जाता है। अम्माँ और राजा मुड़कर उसे देखती रहती हैं]

नूराँ—कितना मुँहजोर है। बेटा, कहीं तुझे चाँट तो नहीं ..

[राजीकी आँखोंमें आँसू देखकर नूराँ चुप रह जाती है। नूराँको अपनी ओर आते देखकर राजी रोंने लगती है]

राजी—अम्माँ, अम्माँ, मेरी अम्माँ !

नूराँ—[सान्त्वना देकर] राजी बेटा, ज़िन्दगीमें ऊँच भी हैं, नीच भी है; नेकी भी है, बदी भी है; दोस्त भी हैं, दुश्मन भी हैं, इन्सान को खुद सँभलकर चलना चाहिए। अपनी ज़िम्मेदारी हर इन्सान की अपनी होती है।

राजी—[सिसका भरती है]

नूराँ—फूलोंको देखकर बहुत खुश नहीं होना चाहिए। काँटोंमें उलझकर बहुत घबराना नहीं चाहिए। औरतकी ज़िन्दगी एक पड़ाव है, जहाँसे कई राहगीर बे-ख्यालीमें गुज़र जाते हैं, और कुछ थोड़ी देरके लिए उसकी ठंडी छाँहमें सुस्ता लेते हैं। लेकिन जो फूल उस पड़ावको महक देता है, वह सिर्फ़ एक ही होता है। और जो भोका उस पड़ावमें बहार लाता है, वह भोका कभी नहीं बदलता।

राजी—बाहर बारिश होने लगी है।

नूराँ—और अलिया मेरा बेटा अभी तक नहीं आया।

राजी—बारिश कितनी तेज़ होती जा रही है !

नूराँ—मेरा बेटा जब आता है, तो बारिश साथ लाता है। आज ज़रूर आयेगा।

राजी—बारिश तो आ गई, क्या अब वह भी आ जायेगा ?

नूराँ—ज़रूर आयेगा मेरा बेटा। मैंने इस छत तले अलियेके बापके साथ तीस साल गुज़ारे हैं। तीस साल तक मैंने रुईकी बत्तियोंको बल दे-देकर इस खिड़कीमें दिया जलाया है। यह दिया मेरा गवाह है। क्या मजाल जो वह एक बार भी अपने वादेसे फिर गया

हो । मैं दिया जलाकर खिड़कीमें रखती और वह दियेकी रोशनी से बँधा हुआ, खिंचा चला आता ।

राजी—शायद अलिया आ रहा है ।

नूराँ—हाँ, यह उसके कदमोंकी आहट है । तू अन्दर जाकर कपड़े बदल ले । यह तेरा फिरन कीचड़से लिथरा हुआ है ।

[अलियेका प्रवेश । वह भीगा हुआ है]

नूराँ—मेरा बेटा !

[अलियेको गले लगाती है]

अलिया—राजी कहाँ है, अम्माँ ?

नूराँ—वह अभी अन्दर गई है ।

अलिया—और अम्माँ, सुलतान कहाँ है ? क्या वही तो नदीकी तरफ़ नहीं जा रहा था ?

[अलिया अपने भीगे हुए कपड़े निचोड़ता है]

नूराँ—मैंने उसे तेल लानेके लिए भेजा है । लेकिन वह नदीकी तरफ़ क्यों जा रहा था ?

अलिया—ऐसे वक्त उसे क्यों भेजा है ?

नूराँ—मैं दिन भर उससे कहती रही, लेकिन वह टालता रहा, टालता रहा ।

अलिया—जभी तो नाराज़ होगा । मैंने उसकी पीठसे पहिचाना, वह नदी की तरफ़ जा रहा था । मैं उसे पुकारता रहा, पुकारता रहा, उसने मुड़कर मुझे जवाब तक न दिया ।

नूराँ—[सोचमें] क्या तूने ठीक देखा था कि वह नदीकी तरफ़ जा रहा था ?

अलिया—अपने किसी दोस्तसे मिलने गया होगा ।

नूराँ—[सोचमें डूबे हुए] हाँ !

अलिया—मैं कपड़े बदल लूँ ।

[माँ अभी तक विचारोंमें खोई है । कुछ देर चुप रहती है, फिर खिड़कीके पास जाकर खड़ी हो जाती है । फिर सोचमें डूबी हुई दरवाज़ेके पास जाती है । फिर खिड़कीकी ओर आती है । फिर दरवाज़ेकी ओर जाती है । अन्तमें माथेपर हाथ रखकर खड़ी हो जाती है]

नूराँ—सुलतान नदीकी तरफ़ जा रहा था । सुलतान नदीकी तरफ़ जा रहा था, जहाँसे उसकी नई दोस्तियोंकी ख़बरें मेरे पास आती रहती हैं । सुलतान नदीको तरफ़ जा रहा था, जहाँ कई कश्तियाँ डूब चुकी हैं और कई डूबनेवाली हैं ।

[बारिश तेज़ हो जाती है । बादल गरजते हैं और बिजली बार-बार कौंधती है]

आज यह बारिश यूँ ही इतने जोरसे नहीं हो रही । आज यह भक्कड़ यूँ ही कहर बनकर नहीं टूट रहा । आज यह बादल यूँ ही इस तरह नहीं गरज रहे जैसे आसमान फट पड़ेगा, चाँद-सूरज टकरा जायेंगे । यह बिजली आज यूँ ही नहीं कौंध रही ।

[बारिश और भी तेज़ हो जाती है, बादलोंकी गरज और भी भयावनी हो जाती है]

माँ, जब अलिया आता है, तो वह हमेशा दिया बुझाकर सोता है ।...गोरे-गोरे पाँव रखती हुई राजी घासपर ऐसे चलती है, जैसे बर्फ़के गोले पड़ रहे हों ।...अपने दुश्मनका कभी एतबार नहीं करना चाहिए, चाहे वह सगा भाई ही क्यों न हो ।...राजी के पाँवपर घोड़ेका पाँव आ गया था ।...नमाज़में क्या ख़ला है...अम्माँ, तू मुझे आज तेल लाने न भेज ।...काश्मीरका काफ़िरोंके साथ गठजोड़...

[दाँत कटकटाते हुए] और आज मैं अपने बेटेका मोमिनोके साथ गठजोड़ देखने जाऊँगी ।

[बारिश और तेज़ हो जाती है । बादल और तेज़ीसे गरज रहे हैं, बिजली और तेज़ीसे कौंध रही है]

मैं आज अपने बेटेका मोमिनांसि गठजोड़ देखने जाऊँगी ।

[राजा और अलिया नये कपड़े पहने हुए आते हैं; नूरों उन्हें देखकर खिल उठती है]

राजा बेटा, आज तू बालियाँ ज़रूर पहन ।

राजा—अच्छा अम्माँ !

[राजा अन्दर जाती है]

नूरों—और बेटा, तू मेरी हँसली भी पहन ले, मेरे कंगन भी पहन ले, मेरे सोनेके बटन भी लगा लेना ।

अलिया—[ऊँचे स्वरमें] हाँ राजी, आज अम्माँ मेहरबान है और तू अम्माँके सभी ज़ेवर पहन ले ।

नूरों—नये कपड़ोंमें अलिया बेटा, तू ऐसा लगता है...

अलिया—जैसे मैं कोई दूल्हा हूँ । क्यों ठीक है न, अम्माँ ?

नूरों—और यह मेरा मुद्दतका अरमान था कि मैं एक बार राजीको दुल्हन की तरह सजी हुई देखूँ ।

अलिया—बारिश हुए जा रही है, हुए जा रही है और सुलतान अभी तक नहीं लौटा ।

नूरों—दियेमें तेल भी ख़तम हो रहा है ।

अलिया—लौ मद्धिम हाँती जा रही है ।

नूरों—आज वह तेल नहीं लायेगा । अलिया, अन्दरसे मोमबत्ती निकाल ला ।

[अलिया अन्दर जाता है]

नूरों—[स्वगत] चण्डाल-चौकड़ीमें बैठकर आज वह तेल लाना भूल जायेगा ।

अलिया—[आते हुए] ले अम्माँ, मोमबत्ती ।

राजी—[गहनोंसे लदी बाहर आती है] ला अम्माँ, मोमवत्ती मैं जलाती हूँ ।

नूराँ—हाँ, घेटा, अब दिया तू ही जलाया कर और दिया हमेशा अलिया बुझाया करेगा ।

राजी—और जब अलिया घरमें नहीं होगा, दिया जलता रहेगा, सारी रात जलता रहेगा ।

अलिया—[हँसकर] नहीं, मैं बुझाने आ जाया करूँगा ।

राजी—[हँसकर] या फिर मैं तेरे साथ चल पड़ूँगी । दिया भी साथ ले चलूँगी ।

नूराँ—मैं समावार गर्म कर दूँ ।

[अन्दर चली जाती है]

राजी—आज तेरे लिए माँने बड़े पकवान पकाये हैं, कोरमा, दो-प्याज़ा, पुलाव, कबाब । आज सारी दोपहर वह पकाती रही ।

अलिया—अम्माँ जानती है न कि बाहर हमारी क्या गत बनती है । राजी, कई-कई दिन तो रोटीका मुँह तक देखना नसीब नहीं होता ।

राजी—अम्माँ कितनी खुशनसीब है जिसे जंगमें जाकर लड़नेका मौका मिला । अपनी आँखोंसे दुश्मनका लहू बहता देख सकी । अलिया, मेरा जी चाहता है कि मैं दुश्मनका लाल-लाल खून देख सकूँ । कोई धरती हो जो लाल खूनसे पटी पड़ी हो । कोई पहाड़ी हो जो इन ज़ालिम लुटेरोंके खूनसे रँगी हो ।

अलिया—इस कौमी जंगमें हर एकके लिए जगह है । हर काश्मीरीको अपनी कुर्बानीका इसमें हिस्सा डालना है । राजी, इस पहाड़ी पर तेरा इन्तज़ार भी तो एक बहादुर सिपाहीको लड़नेपर उभार सकता है ।

राजी—नहीं अलिया, मैं तेरे कन्धेसे कन्धा मिलाकर लड़ना चाहती हूँ ।

[उदास होकर] मुझसे अब और घरमें नहीं बैठा जाता ।

अलिया—उधर सुलतान है जो कितने दिनोंसे क़ौमी कामोंकी तरफ़ रुख नहीं करता, घरमें बेकार बैठा रहता है। और इधर तू है राजी, जिसे घर काटनेको दौड़ता है। पिछली बार भी तूने यही रट लगा रखी थी।

राजी—अलिया, अब तू मुझे अपने साथ ले चल। अगर तू कहेगा तो मैं भी मदोंके कपड़े पहन लूँगी। मैं भूखी रह लूँगी, मैं प्यासी रह लूँगी। तू मुझे अपने साथ ले चल।

अलिया—अम्माँने इतनी देर क्यों लगा दी ?

[आवाज़ देता है]

अम्माँ !

राजी—मैं देखती हूँ।

[अन्दर जाती है]

अलिया—अगर राजी ऐसी कुछ काश्मीरिनें भी हमारे साथ हों, तो काश्मीर हमारा ही रहेगा, हमेशाके लिए। हज़ारों काश्मीरिनोंके लुटे हुए सुहाग बेसूद नहीं जायेंगे।

राजी—[आते हुए] अम्माँ तो कहीं भी नहीं। न अन्दर है न नीचे। वह बरसाती जो सामने खूँटीपर टँगी रहती है, वह भी नहीं।

अलिया—मैं सोचता हूँ, अम्माँ सुलतानको न देखने गई हो।

राजी—हाँ, इधरसे नहीं गई कि हम उसे इस बारिशमें कहीं रोक न लें।

अलिया—राजी, सुलतान हमेशा अम्माँको प्यारा रहा है।

राजी—छोटे बेटेसे माँ-बापको वैसे भी ज़्यादा प्यार होता है।

अलिया—तेरी बात भी ठीक है, लेकिन अम्माँने सुलतानसे हमेशा बड़ा प्यार किया है। मैं अपने अब्बाका प्यारा था, सुलतानको हम अम्माँका बेटा कहा करते थे।

राजी—सुलतानकी शक्लसूरत भी बिल्कुल अम्माँपर है।

अलिया—शायद इसीलिए। बेटा तो मैं भी माँका हूँ, लेकिन माँने

सुलतानकी जिस तरह देखभाल की है, शायद ही कोई माँ अपने बेटेके लिए ऐसा कर सके ।

राजी—[उपेक्षासे] जभी तो वह इतना बिगड़ा हुआ है ।

अलिया—सुलतानके मुँहसे बात पीछे निकलती थी और पहले पूरी कर दी जाती थी । दिनभर अम्माँ सुलतानकी ज़िदें पूरी करती रहती थी और उसके माथेपर कभी बल तक नहीं आता था ।

राजी—जभी तो वह पढ़-लिख नहीं सका ।

अलिया—एक बार सुलतान बीमार पड़ गया । काश, तूने उस वक़्त हमारी अम्माँकी घबराहट देखी होती ! दिनभर अम्माँकी आँखोंसे आँसू टपकते रहते, दुआएँ माँग-माँगकर, अल्लाहके हज़ूरमें फ़रियादें कर-करके, फूट-फूटकर रोती और सिजदेमें गिरी रहती । कौन-सा ऐसा खुदा संगदिल है जो इस गिड़गिड़ाहटपर न पसीज उठे । और जब हम दोनों भाई आज़ादीकी फ़ौजमें शामिल होनेके लिए घरसे निकले, मुझे तो अम्माँ सिर्फ़ दुआएँ देती रही, उसने मेरा तो माथा चूमा लेकिन सुलतानसे बिछुड़ते हुए उसकी चीखें निकल गईं । वह सुलतानको सीनेसे लगाकर रोती रही, रोती रही । सुलतान अम्माँको बड़ा प्यारा है, माँ उसके लिए लाख जानें निछावर कर सकती है ।

राजी—[उदास होकर] पता नहीं सुलतानमें अम्माँको ऐसा क्या नज़र आता है ।

अलिया—राजी, शायद तुझे सुलतान अच्छा नहीं लगता ।

राजी—[उदास होकर] नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं है ।

[सिसकी भरती है]

अलिया—तू एकदम इतनी उदास क्यों हो गई ?

राजी—[फूट-फूटकर रोने लगती है] सुलतान मुझे अच्छा नहीं

लगता । मुलतान मुझे अच्छा नहीं लगता । तू मुझे यहाँसे ले चल, अलिया ।

[अवकाश]

अलिया—नदीमें किस कदर तेज़ बाढ़ आई है । यों बिफर रही है यों बिफर रही है...

[नूरुँका प्रवेश]

राजी—अम्माँ, तू चुपकेसे कहाँ चली गई थी ?

अलिया—मुलतानको देखने गई होगी । राजी, मैंने तुझे बताया है न कि मुलतान अम्माँका बड़ा लाड़ला बेटा है ।

राजी—अम्माँ, तू ऐसे वक़्त क्यों गई थी ? अलिया जाकर उसे बुला लाता ।

[नूरुँ चुप है]

अलिया—अम्माँ, तू चुप क्यों है ?

राजी—क्या मुलतान नहीं मिला ?

अलिया—आता ही होगा । कहीं गप्प मारने बैठ गया होगा ।

राजी—अम्माँ, तू इस तरह आँखें फाड़-फाड़कर क्या देख रही है ?

नूरुँ—राजी, अलिया सच कहता है मुलतान मेरा लाड़ला बेटा है ।

मैंने मुलतानको बड़ी मुसीबतसे पाला है । उसकी एक-एक चाहके लिए अपने लाख-लाख आराम कुर्बान किये हैं.....

अलिया—लेकिन माँ, क्या तुझे मुलतान नहीं मिला ?

नूरुँ—कहीं बैठ गया होगा अपने साथियोंमें । मेरे बेटेके दोस्त भी तो गली-गलीमें मौजूद हैं ।

राजी—काफ़ी रात हो गई है ।

[बाहर कुत्तेके रोनेकी आवाज़ आती है]

अलिया—आज डेबू क्यों इतना बेकरार है ?

राजी—रह-रहकर चिल्लाने लगता है ।

नूराँ—[जैसे एक उन्मादमें हो] हाय, बाहर मौसम कितना प्यारा है !
नन्हीं-नहीं बूँदें पड़ रही है । कहीं-कहीं तारे झिलमिला रहे हैं ।
बादल बेकरार होकर भागते हुए जा रहे हैं । मेरा तो जी चाहता
था कि ऐसी फुहारमें घूमती रहूँ, घूमती रहूँ । तारोंकी धीमी-धीमी
रोशनी, हल्की-हल्की बूँदा-बौंदी, मीठी-मीठी ठंडी हवा, मेरी
आँखोंमें लाख सपने छलक रहे हैं । मेरा रोम-रोम जैसे यादोंके
भुरमुटमें अँगड़ाई ले रहा हो ।

अलिया—मौसमकी रंगीनीने जैसे अम्माँपर जादू कर दिया है । कितनी
खुश लगती है अम्माँ !

राजी—मैंने अम्माँको इतना खुश कभी नहीं देखा ।

अलिया—अब्बाकी शहादतके बाद मैंने माँको पहली बार इतना खुश देखा
है । सोचता था, अम्माँकी सारी खुशियाँ सारा सरूर अब्बाके
साथ ही खत्म हो गया ।

राजी—[धीरेसे] अम्माँका चेहरा जैसे जवानोंका सा हो गया है ।

नूराँ—[दरवाज़ेसे बाहर झाँककर] सुलतान आ रहा है । मेरा बेटा !
कैसे चलता है ! कैसे कदम रखता है ! सीना ताने, गर्दन अक-
ड़ाये, बोतल हाथमें लिये । मैं न कहती थी मेरा बेटा ज़रूर काम-
करके लौटेगा ? मैं दौड़कर अपने बेटेके लिए कबाब लाऊँ, कोरमा
लाऊँ, पुलाव लाऊँ ।

[प्रस्थान]

अलिया—काश, अम्माँ किसीका सुलतान-जैसा प्यार कर सके !

राजी—मैं तो हैरान होती हूँ, मुझे खबर नहीं थी कि सुलतान माँका इतना
लाड़ला है ।

[अलियेका ओर प्यारभरी दृष्टि डालकर उसके कन्धों
पर हाथ रख देती है]

अलिया, तू मुझे अब यहाँसे ले चल ।

[लड़खड़ाते हुए सुलतानका प्रवेश]

अलिया—[धीरेसे] पीकर आया है ।

[अलिया और राजा उसे देखकर सँभल जाते हैं ।

सुलतान बोतल मेज़पर रखता है]

राजा—[धीरेसे] बोतलमें तेल तो नहीं ।

अलिया—नहीं, शराब है । शराब पीकर भी आया है और घर भी ले आया है ।

[सुलतान नशेमें चूर है । फिर पीने लगता है]

राजा—पहले तो कभी इसने ऐसा नहीं किया ।

अलिया—जबसे घरमें बेकार रहने लगा है, इसे कितनी ही बुरी आदतें पड़ गयी हैं ।

नूरौ—[खाना लाते हुए] मेरा बेटा आ गया !

[राजा एक कपड़ा नीचे बिछा देता है । सब खानेके लिए बैठ जाते हैं । नूरौ सुलतानको पकड़कर अपने पास बिठा लेती है]

सुलतान—[खाते हुए] अम्माँ, आज तूने कयाब खूब बनाये हैं ।

नूरौ—तू और खाके देख, मैंने आज सारा खाना खुद बनाया है ।

[कुत्ता फिर चीखता है]

सुलतान—[रुकते हुए] आज मुसरे डब्बूको क्या हो गया है ?

अलिया—यों ही चीख रहा है ।

नूरौ—[सुलतानसे] मेरा बेटा और शराब पीयेगा ।

[गिलासमें शराब डालती है ।]

राजा—अम्माँ, जैसा पुलाव तू बना लेती है, वैसा मुझसे कभी नहीं बनता ।

अलिया—[खाते हुए] तू कौन-सा खाना पकाती रही है ।

राजा—मैं तो अब तेरे साथ जाऊँगी । अपने काश्मीरकी फ़ौजोंके लिए खाना पकाया करूँगी ।

[अलिया सुलतानको पकड़कर अन्दर ले जाता है]

राजी—वर्तन कल सुबह साफ़ कर लेंगे, अम्मी। आज रात वैसे ही इस कोनेमें रख देते हैं। बड़ी देर हो चुकी है।

नूरों—बेटा, जो तेरे जी में आये कर। तू इस घरकी मालकिन है। आज मैं कितनी खुश हूँ !

[दरवाज़ेके पास जाकर खड़ी हो जाती है]

काश्मीरकी यह जन्नत ! काश्मीर यह फ़रिश्ताका देश ! जहाँ परियाँ आकर टहलती हैं, दूर जहाँ आकर सुस्ताती है। मैं कहती हूँ, राजी, तूने कभी उस दिनका खयाल किया है, जब यह ज़मीन काश्मीरी किसानोंमें मुफ़्त बाँटेगी। जब हम इस धरतीके खुद मालिक होंगे, जहाँ अलियेका बाप और अलियेके बापका बाप दिन-रात मेहनत किया करते थे। उस सुबहको जब अलिया इन खेतोंमें खड़ा होकर यह कहेगा : यह मेरे अपने हैं। यह खेत अलियेके अपने होंगे। यह मकान अलियेका अपना होगा। एक ऐसी सुबह ! हाय ऐसी सुबहके लिए आदमी क्या कुछ नहीं कर सकता ?

[नूरोंकी आँखोंमें आँसू आ जाते हैं]

राजी, आज तू कितनी प्यारी लग रही है। यह हँसली बेटा, मेरी माँने मुझे दहेजमें दी थी। बाक़ी ज़ेवर अलियेके बापने दिये थे। एक-एक कर वह इन्हें बनवाता रहा। मैंने उसे अलिया दिया, उसने मुझे कंगन बनवा दिये। राजी, अलिया बिलकुल अपने बापपर गया है। अलियेके बाप ऐसा आदमी कोई माँ न जन सकेगी।

[सुलतान और अलिया आते हैं, सुलतानने अलियाके

कपड़े पहने हैं और वह लड़खड़ा रहा है]

सुलतान—[लड़खड़ाते हुए] यह तो शायद अलियेका विस्तर है।

नूरों—अलियेके कपड़े पहनकर तू अलियेके बिस्तरपर जा बैठा है । तू तो अलिया बन गया है सुलतान ।

सुलतान [हँसते हुए] मैं अलिया बन गया हूँ ।
[और ज़ोरसे हँसता है]

मैं अलिया बन गया हूँ । मैं अलिया बन गया हूँ ।

नूरों—बेटा, तू और शराब नहीं पीयेगा ? अभी तो बोटल आधी भी नहीं हुई ।

सुलतान—अम्माँ, तू क्यामत तक जिये ! तुझ जैसी माँ कहाँ मिलेगी !

[गिलासमें शराब उड़ेलकर एकदम खाली कर देता है]

अम्माँ, तू मुझे और शराब दे ।

नूरों—[गिलासमें शराब ढालते हुए] आज मैं खुश हूँ, आज मेरा बेटा खुश है, आज जैसी रात भी क्या कोई होगी !

सुलतान—राजी, मैं अलिया बन गया हूँ ।

[राजी और अलियेको देखते हुए जो दूसरे बिस्तरोंपर जा लेते हैं, हँसना शुरू कर देता है]

अम्माँ, मैं तुझे अलिया लगता हूँ न ? [और ज़ोरसे हँसता है]

अम्माँ, मैं तुझे अलिया लगता हूँ न ?

नूरों—तू अलिया है, मेरे बेटे ।

अलिया—[ज़रा झुंझलाते हुए] अम्माँ, कितनी रात जा चुकी है, मैं मोमबत्ती बुझा दूँ ?

नूरों—हाँ, रात काफी जा चुकी है, अलिया । लेकिन आज मेरा बेटा शराब पी रहा है, इसे पीने दे । जी भरकर पी ले । जीभरके जवानीका मज़ा लूट ले मेरा बेटा ।

अलिया—माँ, इससे कहो कि बस करे, मैं मोमबत्ती बुझाने लगा हूँ ।

सुलतान—[नशेमें] अम्माँ, एक जाम और दे और फिर बस...

नूरों—ले बेटा !

[शराब गिलासमें डालती है]

सुलतान—मैं अलिया हूँ न, अम्माँ ?

नूराँ—हाँ बेटा, तू अलियेके कपड़े पहनकर बिलकुल अलिया लगता है ।

ऊपर-तलेके भाई हो, तुममें फ़र्क ही क्या है !

[अलिया और राजी मुँह ढाँपकर सो जाते हैं]

सुलतान—[नशेमें बिलकुल चूर होकर] मैं अलि...या...हूँ । मैं अलि...या...हूँ मैं अलि...या...हूँ ।

नूराँ—बोतलमें बस आखिरी दो घूँट रह गये हैं बेटा, यह भी पी ले ।

[गिलासमें शराब डालती है]

सुलतान—अच्छा माँ ।

[शराब एकदम पी जाता है]

मैं अलि...या...हूँ ।

नूराँ—उठ बेटा, अब तू ही दिया बुझा दे, तेरा भाई सो गया है ।

सुलतान—मैं अलि...या...हूँ । अलि...या...दिया...बुझा...कर...सोता है । अलि...

नूराँ—अगर तू अलिया है तो बेटा उठकर बत्ती बुझा दे ना ।

सुलतान—हाँ...मैं...अलि...या...हूँ ।

नूराँ—उठ बेटा, बत्ती बुझा दे । और फिर सो जा ।

सुलतान—अच्छा ..अम्माँ...

[उठनेका यत्न करता है पर उससे उठा नहीं जाता]

नूराँ—[सुलतानको उठाकर खिड़कीकी तरफ़ धकेलती है] बत्ती आगे है, बेटा, और आगे । शाबाश, एक क़दम और...और...अब फूँक मार...फूँक मार...फूँक मार मेरे बेटा ।

[इसी समय खिड़कीसे गोलियोंकी बारिश होती है । सुलतान औंधा जा गिरता है । झकड़ एक दम तेज़ हो जाता है । बादल गरजते हैं, बिजली कौंधती है । बत्ती बुझ चुकी है]

नूराँ—[पागलोंकी तरह हँसती है । अलिया और राजा जो सोने लगे थे; मुँहसे कपड़ा हटाकर घबराये हुए खिड़कीकी ओर जाने लगते हैं, पर खिड़कीके पास पड़े हुए सुलतानके शवके आगे नूराँ बाहें फैलाकर खड़ी हो जाती है । कितनी देर तक नूराँ पगली-की-सी हँसी हँसती है । बत्ती बुझ चुकी है]

दिया बुझ गया...बुझ गया दिया, दिया बुझ गया...

[और ज़ोरसे हँसती है]

यह दिया हमेशा जला करता था दूरसे आने वाले, मुसाफिरके इंतज़ारमें । इस दियेकी जगमगाती हुई लौ किसीको भटकने नहीं देती थी, चाहे रात कितनी ही अँधेरी क्यों न हो । कोई भक्कड़ इस दियेको नहीं बुझा सका था । इसे कोई तूफ़ान नहीं टिमटिमा सका था । इसकी रोशनी कभी न मिटने वाली थी । आज यह दिया बुझ गया ।

[एक दम आवाज़को गम्भीर बनाते हुए जैसे यादोंमें खो जाती है]

आज दिया बुझ गया, जिसे उमगोंभरे होंठ फूँक मारकर बुझाया करते थे, हाथके एक काँपते हुए इशारेसे । दिया बुझ गया ! जिसके बुझ जानेपर दुनिया जगमगा उठती थी । दिया बुझ गया, जिसके बुझते ही वादे पूरे होते थे, सपने जागते थे, मंज़िल साफ़ दिखाई देने लगती थी ।

[सुलतानके शवको देखकर क्रोधसे दाँत किटकिटाते हुए]

दिया बुझ गया, जिसमें तेल खत्म हो चुका था । दिया बुझ गया जो मेरा चिराग़ बुझाना चाहता था । दिया बुझ गया, जिसकी लौ मेरा घर जला देती, मेरे सपनोंको मिट्टीमें मिला देती ।

[ज़ोरसे पागलोंकी-सी हँसी हँसती है और फिर गम्भीर हो जाती है]

अलिया मेरा बेटा, मेरी भोली बेटी राजी, तुम सोचते हो कि मैं इस बारिशमें, इस भक्कड़में, सुलतानको देखने गई थी ? इस तूफानी रातको मैं इसकी खबर लेने गई थी ? इस सँपोलियेकी खैरियत मालूम करने गई थी जो अपने माँ जायेको डसना चाहता था ? इस ज़हरीले नासूरकी मुझे फ़िक्र थी, जो अन्दर ही अन्दर मेरी जड़े काट रहा था ? मैं देखने गई थी नदीकी तरफ़ उसे तेल कौन देता है ? मैं देखने गई थी नदीकी तरफ़ कौन-सी नई दुकान खुली है । और मैंने इन आँखोंसे देखा, मैंने इन कानोंसे सुना, तेरा भाई ग़दारीके साथ बैठा हुआ मनसूबे बाँध रहा था, गुण्डोंसे गठजोड़ कर रहा था ! “दिया हमेशा खिड़कीमें होता है ।” “दिया हमेशा अलिया बुझाता है ।” “नदीसे राइफलकी गोलियाँ उसे ठंडा कर सकती हैं ।” “वह दिया बुझाने उधर आये तो दियेकी रोशनीमें अलियेकी ज़िन्दगीका चिराग़ बुझा दिया जाये ।” अलिया काश्मीरका सिपाही ! अलिया मेरा सरदार बेटा ! अलिया देशका बहादुर सपूत ! शराब-के नशेमें ग़दार मनसूबे बाँधते हैं, लेकिन देश-भक्तिके नशेमें चूर बहादुर कभी उन्हें कामयाब नहीं होने देते । और मैंने सोचा, आज रातको दिया अलिया नहीं बुझायेगा । और मैंने कसम खाई कि आज रातको दिया सुलतान बुझायेगा । और मैं कामयाब हो चुकी हूँ ।

[ज़ोरसे हँसना शुरू कर देती है]

और मैं कामयाब हो चुकी हूँ !

[और ज़ोरसे हँसती है]

और मैं कामयाब हो चुकी हूँ !

[गम्भीर होते हुए]

मैं सोचती थी, इन बूढ़ी हड्डियोंमें अब ज़ोर नहीं । मैं सोचती थी, इन

कमज़ोर अंगोंमें अब सकत नहीं रही । मैं अपने सफ़ेद बालोंकी तरफ़ देखती थी तो मेरा दिल बैठ जाता था । लेकिन खुदाने मेरा अरमान पूरा कर दिया । अल्लाहने मेरी दुआ सुन ही ली । मैं काश्मीरके एक दुश्मनको तो ख़तम कर सकी । मैं काश्मीरकी जन्मनतमें रेंगते हुए एक साँपका सिर तो कुचल सकी ।

[फिर आगे बढ़कर अलिये और राजीको गले लगाते हुए]

अलिये मेरे बेटे, राजी मेरी बच्ची, तुम खुश क्यों नहीं होते ? तुम हँसते क्यों नहीं ? आज तुम्हारी बूढ़ी अम्मा सुखरू हो गई है, अपने खुदाके हज़ूरमें, अलिया, तेरे अब्बाकी निगाहोंमें ?

[नूरों मुड़कर सुलतानकी तरफ़ देखती है जो लहूमें ज़िथड़ा हुआ हाथ-पाँव मार रहा है जैसे उसका जान न निकल रही हो । नूरों सहसा सुलतानकी ओर देखती है और फूट-फूटकर रोना शुरू कर देती है]

हाय, कैसे तड़प रहा है ! और न तड़प, मेरे बच्चे । सुलतान मेरे लाल, आँखें बन्द कर ले । मेरी तरफ़ यूँ न देख । और एड़ियाँ न रगड़ । और अपनी यह बाहें न पटक । मेरे बेटे मर जा, मर जा, मेरे बच्चे । सुलतान, अपने अल्लाहको जान दे दे । मर जा, मर जा, मेरे बेटे मर जा ।

हाय, मैंने तुम्हको किन मुसीबतोंसे पाला-पोसा । तू मेरी इस छातीसे ऐसे दूध पीता था, जैसे शेरका बच्चा हो । और फिर तू मेरी बाहोंमें खेलता रहा । और फिर तू दौड़ता रहा इन दालानोंमें । और फिर तू जवान हो गया । तू कैसे छाती तानकर चलता था । गर्दन अकड़ाकर । तेरी आँखोंमें मस्ती, तेरे माथेकी चमक, तेरे होठोंपर मुसकराहट । मेरे बेटे, कितनी मन्नतोंके बाद मैंने तुम्हे पाया था । मेरे कलेजेके टुकड़े, क्या-क्या दुआएँ माँगकर मैंने तुम्हे पाला था । मेरे सुलतान, अब और न तड़प । मेरे लाल

बस अब और न तड़प । मेरे बच्चे और फरियाद न कर । मर जा, तू मर जा, मेरे बच्चे...मर जा...मर जा...मर जा...

[सुलतान तड़पना बन्द कर देता है । उसका सिर एक तरफ़ ढुलक जाता है । यह देखकर नूरी लाशके पाससे उठ खड़ी होती है]

मर गया, मर गया, मर गया ।

[नूरी की पलकोंमें आँसू छलक रहे हैं]

मेरा सुलतान मर गया । मेरा बच्चा मर गया ।

[पागलोंकी तरह रट लगाती हुई एक-एक पग जैसे गिनती हुई अन्दर चली जाती है]

मर गया...मर गया...मर गया ..

[अवकाश]

राजी—अम्माँने दरवाज़ा अन्दरसे बन्द कर लिया है ।

अलिया—यह दरवाज़ा अब कभी नहीं खुलेगा ।



